आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार, जयपुर

चमकती हुई हीराकणी

तथा

सवैया संग्रह



संग्राहक

मुनि श्री हर्षचन्द्रजी



प्रकाशक

मांगीलाल कांझला

नीमचौक, रतलाम



पुस्तक को शीघ्र ही प्रकाशित देखने की कई श्रद्धालुओं की आंतरिक इच्छा ही नहीं गहनतम अनुरोध भी था। मैं उस अनुरोध की पूर्ति किन अंशों में कर सका हूं इसका मूल्यांकन पाठक ही करेंगे। अंतमें मैं उन समग्र सज्जनों का धन्यवाद भी देना अपना कर्तव्य समझता हूं, जिन्होंनें किसी भी रूप में इस पुस्तक को तैय्यार करने में मुझे पर्याप्त सहयोग दिया है।

होलिका
रतलाम

—जैनमुनि हर्षचन्द्र



 सहायता देने वाले सज्जनों की नामावली 

११) मुनिश्री चन्दनमलजी म के उपदेश से
२५) मुनिश्री गोरीलालजी म. के उपदेश से
५१) श्रीमान् सेठ हस्तीमलजी, मु. मारवाड़ जंक्शन
२५) श्रीमान् सेठ सोभागमलजी मेहता मु. जावरा
२५) श्रीमान् मिश्रीलालजी बाफना मु. मन्दसौर
२५) श्रीमान् केशरीमलजी बोथरा मु. रतलाम
२५) श्रीमान् बापूलालजी बोथरा मु. रतलाम
२५) श्रीमान् दलीचन्दजी ॐकारलालजी रांका मु. सैलाना
२५) श्रीमान् बापूलालजी पोरवाड़ मु नलखेड़ा
२५) श्रीमान् जीवराज विठ्ठलजी मोदी मु जामनगर
२५) श्रीमान् रोकडथा केशरीमलजी अग्रवाल मु. बड़नगर
श्रीमान् हीरालालजी सम्पतलालजी मु.कामारेडी दक्षिण
श्रीमान् मेगराजजी चांदमलजी बोरा मु. बांगरोद
) श्रीमान् जीतमलजी चाणोदी मु. रतलाम
११) श्रीमान् हरीरामजी जीवाजी पूरवीया मु मन्दसौर
११) श्रीमान् केशरीमलजी काष्टया मु. रतलाम
१०) श्रीमान् घासीलालजी खीमेसरा मु. सैजावता
१०) श्रीमान् बत्तूलालजी पल्लीवाल मु गंगापूर (जैपूर स्टेट)
१०) श्रीमान् पुखराज गुमानमल लुंकड़ मु. पाली (मारवाड़)
१०) श्रीमान् गेरूलाल माणकचन्द आचल्या मु सरवाड़

 सहायता देने वाली बहिनों की नामावली 

५१) श्रीमती गेंदीबाई पोरवाड़ मु. इन्दौर
२५) श्रीमती सज्जनबाई चाणोदिया मु. रतलाम
२५) श्रीमती सणगारबाई श्री श्रीमाल मु. रतलाम
२५) श्रीमती रतनबाई मु. बाजणा
१५) श्रीमती सम्पतबाई चावत मु इन्दौर
१०) श्रीमती धुरीबाई कटारिया मु. रतलाम

 सहायता देने वाले सज्जनों की नामावली 

११) मुनिश्री चन्दनमलजी म के उपदेश से
२५) मुनिश्री गोरीलालजी म. के उपदेश से
५१) श्रीमान् सेठ हस्तीमलजी, मु. मारवाड़ जंक्शन
२५) श्रीमान् सेठ सोभागमलजी मेहता मु. जावरा
२५) श्रीमान् मिश्रीलालजी बाफना मु. मन्दसौर
२५) श्रीमान् केशरीमलजी बोथरा मु. रतलाम
२५) श्रीमान् बापूलालजी बोथरा मु. रतलाम
२५) श्रीमान् दलीचन्दजी ॐकारलालजी रांका मु. सैलाना
२५) श्रीमान् बापूलालजी पोरवाड़ मु नलखेड़ा
२५) श्रीमान् जीवराज विट्ठलजी मोदी मु जामनगर
२५) श्रीमान् रोकडया केशरामलजी अग्रवाल मु. वड़नगर
) श्रीमान् हीरालालजी सम्पतलालजी मु.कामारेडी दक्षीण
) श्रीमान् मेगराजजी चांदमलजी बोरा मु. वांगरोद
१) श्रीमान् जीतमलजी चाणोदी मु. रतलाम
११) श्रीमान् हरीरामजी जीवाजी पूरवीया मु मन्दसौर
११) श्रीमान् केशरीमलजी काष्टया मु. रतलाम
१०) श्रीमान् घासीलालजी खीमेसरा मु. सैजावता
१०) श्रीमान् वन्नूलालजी पल्लीवाल मु गंगापूर (जैपूर स्टेट)
१०) श्रीमान् पुखराज गुमानमल लुंकड़ मु. पाली (मारवाड़)
१०) श्रीमान् गोरूलाल माणकचन्द आचल्या मु. सरवाड़

 सहायता देने वाली बहिनों की नामावली 

५१) श्रीमती गेंदीबाई पोरवाड़ मु. इन्दौर
२५) श्रीमती सज्जनबाई चाणोदिया मु. रतलाम
२५) श्रीमती सणगारबाई श्री श्रीमाल मु. रतलाम
२५) श्रीमती रतनबाई मु. वाजणा
१५) श्रीमती सम्पतबाई चावत मु इन्दौर
१०) श्रीमती धुरीबाई कटारिया मु. रतलाम



सहायता देने वाले सज्जनों की नामावली



११) मुनिश्री चन्दनमलजी म के उपदेश से
२५) मुनिश्री गोरीलालजी म. के उपदेश से
५१) श्रीमान् सेठ हस्तीमलजी, मु. मारवाड़ जंक्शन
२५) श्रीमान् सेठ सोभागमलजी मेहता मु. जावरा
२५) श्रीमान् मिश्रीलालजी बाफना मु. मन्दसौर
२५) श्रीमान् केशरीमलजी बोथरा मु. रतलाम
२५) श्रीमान् बापूलालजी बोथरा मु. रतलाम
२५) श्रीमान् दलीचन्दजी ॐकारलालजी रांका मु. सैलाना
२५) श्रीमान् बापूलालजी पोरवाड़ मु नलखेड़ा
२५) श्रीमान् जीवराज विठ्ठलजी मोदी मु. जामनगर
२५) श्रीमान् रोकडया केशरीमलजी अग्रवाल मु. वड़नगर
) श्रीमान् हीरालालजी सम्पतलालजी मु.कामारेडी दक्षीण
) श्रीमान् मेगराजजी चांदमलजी बोरा मु. वांगरोद
) श्रीमान् जीतमलजी चाणोदी मु. रतलाम
११) श्रीमान् हरीरामजी जीवाजी पूरवीया मु मन्दसौर
११) श्रीमान् केशरीमलजी फाष्टया मु. रतलाम
१०) श्रीमान् घासीलालजी खीमेसरा मु. सैजावता
१०) श्रीमान् बन्नूलालजी पल्लीवाल मु. गंगापूर (जैपूर स्टेट)
१०) श्रीमान् पुखराज गुमानमल लुंकड़ मु. पाली (मारवाड़)
१०) श्रीमान् गोरूलाल माणकचन्द आचल्या मु. सरवाड़

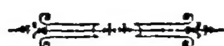


सहायता देने वाली बहिनों की नामावली



५१) श्रीमती गेंदीबाई पोरवाड़ मु. इन्दौर
२५) श्रीमती सज्जनबाई चाणोंदिया मु. रतलाम
२५) श्रीमती सणगारबाई श्री श्रीमाल मु. रतलाम
२५) श्रीमती रतनबाई मु. वाजणा
१५) श्रीमती सम्पतबाई चावत मु इन्दौर
१०) श्रीमती धुरीबाई कटारिया मु. रतलाम

॥ सूत्र पढ़ने की असज्झाय ॥



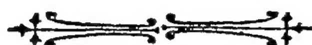
उक्कावाय-तारोटूटे तो एक प्रहर की असज्झाय, दिशा-
ह-सुबह और संध्या को दिशा लाल रहे वहांतक, गजिया-
ना होवे तो एक पहर असज्झाय, विजुय-विजली चमके
एक पहर असज्झाय, लेकिन गाज और विजली की आर्द्रा
क्षत्र से स्वांति नक्षत्र तक असज्झाय नहीं गिनना, कड़के तो
ाठ पहर की असज्झाय, बालचन्द्र शुक्ल पक्ष की पड़िवां
तीया, तृतिया रात्रि, चन्द्रमा रहे वहांतक, आकाश में
नुष्य, पशु, पिशाचादिक के चिन्ह दिखे वहांतक, काली
धर पड़े वहांतक, श्वेत धूंधर पड़े वहांतक, आकाश में धूल
। गोटा दिखे वहांतक, मांस दृष्टि में आवे वहांतक रक्त
ाही दृष्टि में आवे वहांतक,हड्डी दृष्टि में आवे वहांतक,उच्चार
ाण दृष्टि में आवे वहांतक, सुमाण-श्मसान के चारों ओर
००-१०० हाथ टालना, राजाओं की मृत्यु की-दूसरे रोज
ार्थात् हड़ताल रहे वहांतक, राजाओं का युद्ध होवे वहांतक,
न्द्रग्रहण होय तो जघ ८ पहर तक, सूर्य ग्रहण होवे तो १२
हर तक, पंचेन्द्रिय का कलेवर निर्जीव पड़ा हो तो चारों
ोर १००-१०० हाथ तक, आषाढ़ सुदी पूर्णिमा, श्रावण
ादी प्रतिपदा, भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा, कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा,
ार्तिक शुक्ल पूर्णिमा, मृगशीर कृष्ण प्रतिपदा, चैत्रशुक्ल
्णिमा, वैसाख कृष्ण प्रतिपक्ष प्रात काल, मध्यान दिने,
ंध्याकाल मध्यान रात्रि, चारों के एक मोहरत ।



॥ महावीर स्तुति-पुच्छिस्सुणं ॥

पुच्छिस्सु णं समणा माहणा य, आगारिणो या परतित्थिआ य। से केइ णेगंतहियं धम्ममाहु, अणेलिसं साहु समिक्खयाए ॥ १ ॥ कहं च णाणं कह दंसणं से, सीलं कहं नायसुतस्स आसी ?। जाणासि णं भिक्खु जहातहेणं, अहासुतं बूहि जहा णिसंतं ॥ २ ॥ खेयन्नए से कुसले महेसी, अणंत-नाणी य अणंतदंसी ; जसंसिणो चक्खुपहे ठियस्स, जाणाहि धम्मं च धिइं च पेहि ॥ ३ ॥ उड्ढं अहेयं तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा । से णिच्चणिच्चेहि समिक्ख पन्ने, दीवे व धम्मं समियं उदाहु ॥ ४ ॥ से सव्वदंसी अभीभूयनाणी, णिरामगंधे धिइमं ठियप्पा । अणुत्तरे सव्वजगंसि विज्जं, गंथा अतीते अभए अणाऊ॥ ५॥ से भूइपण्णे अणिए अचारी, ओहंतरे धीरे अणंतचक्खू। अणु-त्तरं तपई सूरिए वा, वइरोयणिंदे व तमं पगासे ॥६॥ अणुत्तरं धम्ममिणं जिणाणं, णाया मुणि का-सव आसुपन्ने । इंदेव देवाण महाणुभावे, सह

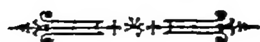
वीर-स्तुति



॥ दुमपुप्फिया पढमं अज्झयणं ॥

धम्मो मंगल मुक्कट्ठं, अहिंसा संजमो तवो ।
देवावि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥
जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियइ रसं ।
नय पुप्फं किलामेइ, सोयपीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥
एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो ।
विहंगमा व पुप्फेसु, दाण—भत्तेसणेरया ॥ ३ ॥
वयं च वित्तिं लब्भामो, न य कोइ उवहम्मई ।
अहागडेसु रीयंते, पुप्फेसु भमरो जहा ॥ ४ ॥
महुकार समाबुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया ।
नाणापिंडरया दंता, तेणं वुच्चंति साहुणो ॥ ५ ॥

तिबेमि ।



मुणीणमज्झे तमुदाहु पन्ने ॥ १७ ॥ अणुत्तरं धम्म
मुई रइत्ता । अणुत्तरं झाणवरं झियाइ ॥ सुसुक्कसुक्कं
अपगंडसुक्कं संखिंदु एगंतवदात सुक्क ॥ १८ ॥ अणु-
त्तरग्ग परम महेसी । असेसकम्मं स विसोहइत्ता ॥
सिद्धि गइ साइम णंत पत्ते । नाणेण सीलेण य
दंसणेण ॥ १७ ॥ रुक्खेसु णाए जह सामली वा ।
जंसि रइ वेदयंति सुवन्ना ॥ वणेसु वा नंदणमाहु
सेट्ठं । नाणेण सीलेण य भूइपन्ने ॥१८॥ थणियं व
सद्दाण अणुत्तरे उ । चंदो व ताराण महाणुभावे ॥
गंधेसु वा चंदणमाहु सेट्ठं । एवं मुणीणं अपडिन्न
माहु ॥ १९ ॥ जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे । नागेसु
वा धरणिंदमाहु सेट्ठे ॥ खोउदए वा रस वेजयंते ।
तवोवहाणे मुणि वेजयंते ॥ २० ॥ हत्थीसु एरावण
माहु णाए । सीहो मियाणं सलिलाण गंगा ॥
पक्खीसु वा गुरुले वेणुदेवे । निव्वाणवादीणिह
णायपुत्ते ॥ २१ ॥ जोहेसु णाए जह वीससेणे ।
पुप्फेसु वा जह अरविंदमाहु ॥ खत्तीण सेट्ठे जह
दंतवक्के । इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥ २२ ॥
दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं सच्चेसु वा अणवज्जं

स्सणेता दिवि णं विसिट्ठे ॥ ७ ॥ से पन्नया अक्ख
य सागरे वा, महोदही वावि अणंतपारे । अणाइले
या अकसाइ भूक्खू, सक्केव देवाहिवइ जुइमं ॥८॥
से वीरिएणं पडिपुन्नवीरिए, सुदंसणे वा णगसव्व से
सुरालएवासि मुदागरे से, विरायए णेगगुणोववे
॥ ९ ॥ सय सहस्साण उ जोयणाणं, तिकंड
पंडगवेजयंते । से जोयणे णवणवते सहस्से, उड्ढु
स्सितो हेट्ठ सहस्समेगं ॥ १० ॥ पुट्ठे णभे चिट्ठइ
भूमिवट्ठिए, जं सूरिया अणुपरियट्टयंति । से हेमवन्ने
वहुनंदणे य, जंसी रइं वेदयंती महिंदा ॥ ११ ॥
से पव्वए सद्दमहप्पगासे, विरायइ कंचणे
मट्ठवन्ने । अणुत्तरे गिरिसु य पव्वदुगे, गिरीवरे
से जलिएव भोमे ॥ १२ ॥ महीए मज्झंमि ठिए
णगिंदे, पन्नायते सूरियसुद्धलेसे । एवं सिरिए उ स
भूरिवन्ने मणोरमे जोयइ अच्चिमाली ॥ १३ ॥
सुदंसणस्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चई महतो पव्वयस्स।
एतोवमे समणे नायपुत्ते, जाइजसो दंसणनाणसीले
॥ १४ ॥ गिरीवरे वा निसहाय याणं, रुयए
व सेट्ठे वलयायताणं । एओवमे से जगभूइपन्ने,

॥ अह णवमं नमिपवज्जा णामज्झयणं ॥



चइऊण देवलोगाओ, उववन्नो माणुसम्मि लोगम्मि ।
उवसन्तमोहणिज्जो, सरई पोराणियं जाइं ॥ १ ॥
जाइं सरित्तु भयवं, सयंसंबुद्धो अणुत्तरे धम्मे ।
पुत्तं ठवेत्तु रज्जे, अभिणिक्खमई नमी राया ॥ २ ॥
सो देवलोगसरिसे, अन्तेउरवरगओ वरे भोए ।
भुंजित्तु नमी राया, बुद्धो भोगे परिच्चयई ॥ ३ ॥
मिहिलं सपुरजणवयं, बलमोरोहं च परियणं सव्वं ।
चिच्चा अभिनिक्खन्तो, एगन्तमहिट्ठिओ भयवं ॥४॥
कोलाहलगभूयं, आसी मिहिलाए पव्वयन्तम्मि ।
तइया रायरिसिम्मि, नमिम्मि अभिणिक्खमन्तम्मि ॥५॥
अब्भुट्ठियं रायरिसिं पव्वज्जाठाणमुत्तमं ।
सक्को माहणरूवेणं, इमं वयणमब्बवी ॥ ६ ॥
किण्णु भो अज्ज मिहिलाए, कोलाहलगसंकुला ।
सुव्वन्ति दारुणा सद्दा, पासाएसु गिहेसु य ॥ ७ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥ ८ ॥

वयंति ॥ तवेसु वा उत्तम बंभचेरं । लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥२३॥ ठिइण सेट्ठा लवसत्तमावा। सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा, निव्वाण सेट्ठा जह सव्वधम्मा । ण णायपुत्ता परमत्थी नाणी ॥२४॥ पुढोवमे धुणइ विगयगेही, न संणिहिं कुव्वइ आसुपन्ने, तरितुं समुद्दं च महाभवोघं । अभयंकरे वीर अणंतचक्खू ॥ २५ ॥ कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थ अज्झत्थ दोसा, एआणि- वंता अरहा महेसी, ण कुव्वइ पाव ण कारवेइ ॥ २६ ॥ किरियाकिरियं वेणइयाणुवायं, अन्नाणियाणं पडियच्चठाणं, से सव्ववायं इति वेदइत्ता, उवट्ठिए धम्म सदीहरायं ॥२७॥ से वारिया इत्थीसराइभत्तं, उवहाणवं दुक्खखयट्ठयाए, लोगं विदित्ता आरंपारं च, सव्वं पभू वारिय सव्ववारं ॥ २८ ॥ सोच्चाय धम्मं अरहंत भासियं, समाहियं अट्ठपओविसुद्धं, तं सद्दहंताय जणा अणाऊ, इंदेव देवाहि आगमिसंति त्तिबेमि ॥ २९ ॥

॥ इति वीरस्तुति नाम षष्ठमध्ययनम् सम्मत्तं ॥



॥ अह णवमं नमिपवज्जा णामज्झयणं ॥



चइऊण देवलोगाओ,उववन्नो माणुसम्मि लोगम्मि ।
उवसन्तमोहणिज्जो, सरई पोराणियं जाइं ॥ १ ॥
जाइं सरितु भयवं, सयंसंबुद्धो अणुत्तरे धम्मे ।
पुत्तं ठवेतु रज्जे, अभिणिक्खमई नमी राया ॥ २ ॥
सो देवलोगसरिसे, अन्तेउरवरगओ वरे भोए ।
भुंजितु नमी राया, बुद्धो भोगे परिच्चयई ॥ ३ ॥
मिहिलं सपुरजणवयं, बलमोरोहं च परियणं सव्वं ।
चिच्चा अभिनिक्खन्तो, एगन्तमहिट्ठिओ भयवं ॥४॥
कोलाहलगभूयं, आसी मिहिलाए पव्वयन्तम्मि ।
तइया रायरिसिम्मि,नमिम्मि अभिणिक्खमन्तम्मि ॥५॥
अब्भुट्ठियं रायरिसिं पव्वज्जाठाणमुत्तमं ।
सक्को माहणरूवेणं, इमं वयणमब्बवी ॥ ६ ॥
किण्णु भो अज्ज मिहिलाए, कोलाहलगसंकुला ।
सुव्वन्ति दारुणा सद्दा, पासाएसु गिहेसु य ॥ ७ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥ ८ ।

पागारं कारइत्ता णं, गोपुरट्टालगाणि य ।
उस्सूलग सयग्घाओ, तओ गच्छसि खत्तिया ॥१८॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दं इणमब्बवी ॥ १९ ॥
सद्धं नगरं किच्चा, तवसंवरमग्गलं ।
खन्तिं निउणपागारं, तिगुत्तं दुप्पधंसयं ॥ २० ॥
धणुं परक्कमं किच्चा, जीवं च ईरियं सया ।
धिइं च केयणं किच्चा, सच्चेण परिमन्थए ॥ २१ ॥
तव नाराय जुत्तेण, भित्तूणं कम्मकंचुयं ।
मुणी विगयसंगामो, भवाओ परिमुच्चए ॥ २२ ॥
एयमट्ठं निसामिता, हेउकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ २३ ॥
पासाए कारइत्ताणं, वद्धमाणगिहाणि य ।
वालग्गपोइयाओ य, तओ गच्छसि खत्तिया ॥२४॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥ २५ ॥
संसयं खलु सो कुणई, जो मग्गे कुणई घरं ।
जत्थेव गन्तुमिच्छेज्जा, तत्थ कुव्वेज्जा सासयं ॥२६॥

मिहिल्लाए चेइए वच्छे, मीयच्छाए मणोरमे।
पत्तपुप्फफलोवेए, बहूण बहुगुणे मया ॥ ९ ॥
वाएण हीरमाणम्मि, चेइयम्मि मणोरमे।
दुहिया असरणा अत्ता, एए कन्दन्ति भो खगा ! ॥१०॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ११ ॥
एस अग्गी य वाऊ य, एयं डज्झइ मन्दिरं।
भयवं ! अन्तेउरं तेणं, कीस णं नावपेक्खह ॥ १२ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ।
तओ नमि रायरिसिं, देविन्द इणमब्बवी ॥ १३ ॥
सुहं वसामो जीवामो, जेसिं मो नत्थि किंचणं।
मिहिलाए डज्झमाणीए, न मे डज्झइ किंचणं ॥१४॥
चत्तपुत्तकलत्तस्स, निव्वावारस्स भिक्खुणो।
पियं न विज्जई किंचि, अप्पियं पि न विज्जई ॥१५॥
बहुं खु मुणिणो भद्दं, अणगारस्स भिक्खुणो।
सव्वओ विप्पमुक्कस्स, एगन्तमणुपस्सओ ॥ १६ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ १७ ॥

पागारं कारइत्ता णं, गोपुरट्टालगाणि य।
उस्सूलग सयग्घाओ, तओ गच्छसि खत्तिया ॥१८॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दं इणमब्बवी ॥ १९ ॥
सद्धं नगरं किच्चा, तवसंवरमग्गलं।
खन्तिं निउणपागारं, तिगुत्तं दुप्पधंसयं ॥ २० ॥
धणुं परक्कमं किच्चा, जीवं च ईरियं सया।
धिइं च केयणं किच्चा, सच्चेण परिमन्थए ॥ २१ ॥
तव नाराय जुत्तेण, भितूणं कम्मकंचुयं।
मुणी विगयसंगामो, भवाओ परिमुच्चए ॥ २२ ॥
एयमट्ठं निसामिता, हेउकारणचोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ २३ ॥
पासाए कारइत्ताणं, वद्धमाणगिहाणि य।
वालग्गपोइयाओ य, तओ गच्छसि खत्तिया ॥२४॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥ २५ ॥
संसयं खलु सो कुणई, जो मग्गे कुणई घरं।
जत्थेव गन्तुमिच्छेज्जा, तत्थ कुव्वेज्जा सासयं ॥२६॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ २७ ॥
आमोसे लोमहारे य, गंठिभेए य तक्करे ।
नगरस्स खेमं काऊणं, तओ गच्छसि खत्तिया ॥२८॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥ २९ ॥
असइं तु मणुस्सेहिं, मिच्छादंडो पजुञ्जई ।
अकारिणोऽत्थ बज्झन्ति, मुच्चई कारओ जणो ॥३०॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ३१ ॥
जे केइ पत्थिवा तुज्झं, नानमन्ति नराहिवा ।
वसे ते ठावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया ॥३२॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दं इणमब्बवी ॥ ३३ ॥
जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिए ।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ ॥३४॥
अप्पाणमेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झेओ ।
अप्पणामेवमप्पाणं, जइत्ता सुहमेहए ॥ ३५ ॥

पंचिन्दियाणि कोहं, माणं मायं तहेव लोहं च ।
दुज्जयं चेव अप्पाणं, सव्वं अप्पे जिए जियं ॥३६॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ३७ ॥
जइत्ता विउले जन्ने, भोइत्ता समणमाहणे ।
दत्ता भोच्चा य जिट्ठा य,तओ गच्छसि खत्तिया।३८।
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दं इणमब्बवी ॥ ३९ ॥
जो सहस्सं सहस्साणं, मासे मासे गवं दए ।
तस्सावि संजमो सेओ,अदिन्तस्स वि किंचण ॥४०॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ४१ ॥
घोरासमं चइत्ताणं, अन्नं पत्थेसि आसमं ।
इहेव पोसहरओ, भवाहि मणुयाहिवा ॥ ४२ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥ ४३ ॥
मासे मासे तु जो बालो, कुसग्गेणं तु भुंजए ।
न सो सुयक्खायधम्मस्स,कलं अग्घइ सोलसिं॥४४॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ।

तश्रो नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ४५ ॥
हिरण्णं सुवण्णं मणिमुत्तं, कंसं दूसं च वाहणं।
कोसं च वड्ढावइत्ताणं,तश्रो गच्छसि खत्तिया ॥४६॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइश्रो ।
तश्रो नमिं रायरिसिं देविन्दं इणमब्बवी ॥ ४७ ॥
सुवण्णरूप्पस्स य पव्वया भवे, सिया हु केलास-
समा असंखया । नरस्स लुद्धस्स न तेहि किंचि,
इच्छा हु आगाससमा अणन्तिया ॥ ४८ ॥
पुढवी साली जवा चेव, हिरण्णं पसुभिस्सह ।
पडिपुण्णं नालमेगस्स, इइ विज्जा तवं चरे ॥४९॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइश्रो ।
तश्रो नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥ ५० ॥
श्रच्छेरग मब्भुदए, भोए चयसि पत्थिवा ।
असन्ते कामे पत्थेसि, संकप्पेण विहम्मसि ॥ ५१ ॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइश्रो ।
तश्रो नमिं रायरिसिं, देविन्दं इणमब्बवी ॥ ५२ ॥
सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसीविसोवमा ।
कामे पत्थेमाणा, अकामा जन्ति दोग्गइं ॥ ५३ ॥
अहे वयइ कोहेणं, माणेणं अहमा गई ।

मायागई पडिग्घाओ, लोभाओ दुहओ भयं ॥५४॥

अवउज्झिऊण माहणरूवं, विउव्विऊण इन्दत्तं ।
वन्दइ अभित्थुणन्तो,इमाहि महुराहिं वग्गूहिं ॥५५॥

अहो ते णिज्जिओ कोहो, अहो ते माणो पराजिओ ।
अहो निरक्किया माया, अहो लोभो वसीकओ ॥५६॥

अहो ते अज्जवं साहु, अहो ते साहु मद्दवं ।
अहो ते उत्तमा खन्ती,अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥५७॥

इहं सि उत्तमो भन्ते, पच्छा होहिसि उत्तमो ।
लोगुत्तमुत्तमं ठाणं, सिद्धिं गच्छसि नीरओ ॥५८॥

एवं अभित्थुणन्तो, रायरिंसि उत्तमाए सद्धाए ।
पयाहिणं करेन्तो, पुणो पुणो वन्दई सक्को ॥ ५९ ॥

तो वन्दिऊण पाए, चक्कं कुसलक्खणे मुणिवरस्स ।
आगासेणुप्पइओ, ललियचवलकुंडलतिरीडी ॥६०॥

नमी नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ ।
चइऊण गेहं च वेदेही,सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥६१॥

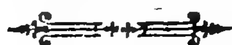
एवं करेन्ति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा ।
विणियट्टन्ति भोगेसु,जहा से नमी रायरिसि ॥६२॥

त्तिबेमि !

॥ इति नमिपव्वज्जा नाम नवमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ सिद्धाणं नमो किच्चा ॥

सिद्धाणं नमो किच्चा, संजयाणं च भावओ, अत्थ धम्म गइ तच्चं, अणु सट्ठिं सुणेह मे ॥ १ ॥ अहो वण्णो अहो रुवं, अहो अज्जस्ससोमया, अहो खन्ती अहो मुत्ति, अहो भोगे ऽसंगया ॥ २ ॥ चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महड्डीओ, संति संति करे लोए, पत्तोगइ मणोत्तरं ॥ ३ ॥ इक्खागराय वसभो, कुंथु नाम नरीसरो, विक्खाय कित्ती भयवं, पत्तोगइ मणुत्तरं ॥ ४ ॥ सारं नाणं दंसणं, सारं तव नियम संजमं सीलं, सारं जीणवर धम्मं, सारं संलेहणा पंडिय मरणं ॥ ५ ॥ धम्मा रामे चरे भिक्खु, धिइमं धम्म सारही, धम्मा रामे रय दंते, बंभ चेर समाहिए ॥ ६ ॥ देव दाणव गंधव्वा, जक्ख रक्खस किन्नरा, बंभयारि नमं संति, दुक्करं जे करंतिते ॥ ७ ॥ एस धम्मे धुवे निच्चे, सासए जिणदेसिए, सिद्धा सिज्झंति चाणेण, सिज्झिस्संति तहावरे त्तिबेमि ॥ ८ ॥



॥ चवदा पुरब ॥

चवदाजी पुरब धार कहीये, ज्ञान च्यार बखांणीये, जिन नहीं पण जिन सरीखा, एवा सुधर्मा स्वामी जाणीये २, मात पिता कुल जात निर्मल, रुप अनोप वखाणीये, देवता ने वल्लभ लागे, एवा श्री जम्बू स्वामी जाणीये २, अष्टा पद श्रीआद जिनवर, वीर पावा पुरी वरो, वासपुज्य चम्पानग्र सिद्धा, नेमरेवा गिरीवरो श्री २, समे सिक्खर पर वीस जिनवर, मोक्ष पुहन्ता मुनिवरो, चौवीस जिनवर नित्य वन्दु, संगमे आनन्द करो, प्रभु संग में मंगल करो, तुम तिरण तारण भव सुधारण, भवीक जिन आनन्द करो, नाभिराय नन्दन जगत वन्दन, श्री आदि नाथ जिनेश्वरो, श्री ऋषभदेव जिनेश्वरो, तुम कर्म घाता मोक्ष दाता, दिन दयाल दया करो, सिद्धार्थ नन्दन जगत वन्दन महावीर मइया करो, श्री वृद्धमान जिनेश्वरो, चौवीस जिनवर प्रथम गण धर, चक्री हलधर ते हुआ, संसार तारक केवली, वली समणा समणी जे हुवा,

संमेग सुधकर साधुजि सुखकर, आगम वेण में सुण्यां, गुरु ज्ञान चन्द प्रसाद सेती, देव मुनि वर सं थुण्यां २, ॥

॥ पंच भरत ॥

पंच भरत पंच येरवई जांण, पांचोही महा वीदे वखांण, देव अनन्त हुआ अरिहन्त, ते प्रणमु कर जोड़ी संत, जे हीवड़ा विचरे जिण चन्द, क्षेत्र विदे सदा सुख कन्द, कर जोड़ी प्रणमु तस्स पांय, आरत विघ्न सहु टल जाय, सिद्ध अनन्ता पन्नरे भेद, ते प्रणमु मन धरी ऊमेद, आचार्ज प्रणमु गुण धार, श्री ऊपाध्याय सधा सुख कार, साध सहु प्रणमु केवली काल अनन्ता अनन्तवली, जे हीवड़ा विचरे गुणवन्त, साध साधवि सहु भगवन्त, ते प्रणमु मन्न हुल्लास, अरिहन्त सिद्ध ने साध प्रकाश वार अनन्त अनन्ती वार, साधु वनणा कर सुं हितकार २, ॥

॥ छन्द ॥

श्रीनेमीश्वर सम्भव स्वाम, सुविधि धर्म

शान्ति अभिराम, अनत मुनि सुव्रत नमीनाथ सुजान, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ॥ १ ॥ अजित नाथ चन्दा प्रभु धीर, आदिश्वर सुपार्श्व गम्भीर, विमलनाथ विमल जस्सजाण, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ॥ २ ॥ मल्लिनाथ जिनमङ्गल रूप, धनुष्य पच्चीसी सुन्दर स्वरूप, श्री अर्हनाथ प्रणमु वर्द्धमान, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ॥ ३ ॥ सुमति पद्म प्रभु अवतंस, वास पुज्य शीतल श्रेयांस, कुन्थु पार्श्व अभिनन्दन भान, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ॥ ४ ॥ इणपरे श्री जिनवर संभालिये, दुःख दारिद्र विघ्न निवारिये, पच्चीस पैंट तणो प्रमाण, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ॥ ५ ॥ इण भण तां दुःख नही आवे कदा, जिनवर समरण राखो सदा धरिये पंचतणों मन ध्यान, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ॥ ६ ॥ श्री जिनवर नामे संकट टले, मन वांछित सहु आशा फले, धर्म सिंह मुनि भाव प्रधान, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ॥ ७ ॥

॥ छन्द दुतिया ॥

श्री सिद्धारथ कुल श्रृंङ्गार, त्रसला नन्दन जग आधार, सोभा सुन्दर सोवन वान, शरण तुमारो श्री वर्द्धमान ॥ १ ॥ तुम नामे लहिये सुख सम्पदा, तुम नामे मन वांछित मुदा, तुम नामे लहिये सन्मान, शरण तुमारो श्री वर्द्धमान ॥ २ ॥ तुम नामे नही आवे आपदा, भुत प्रेत व्यंतर नहीं कदा। रोग शोग चिन्ता नहीं जाण, शरण तुमारो श्री वर्द्धमान ॥ ३ ॥ दुर्जन दुष्ट वैरी विकाल, तुम नामें नाशे तत्काल। तुम नामें नित्य नित्य कल्याण, शरण तुमारो श्री वर्द्धमान ॥ ४ ॥ ग्रहादीक पीड़ा नहीं करे, ध्यान तुमारो ज्यो नर धरे, धर्मसिंह मुनि नाम निधांन, शरण तुमारो श्री वर्द्धमान ॥ ५ ॥



॥ सवईया ॥

चौविसमा महावीर, शूर वीर महाधीर, वांणी

मीठी खांड खीर, सिद्धार्थ नन्द है, नागणी सी नार जाण, घट में वैराग आंण, जोग लियो जग भांण, छोड्या मोह फंद है, चवदे हजार सन्त, तार दिया भगवन्त, करमा को कियो अंत, पाम्या सुख कन्द है, भणे मुनि चन्द्र भाण, सुणो हो विवेक वान, महावीर जप्पे ज्यांके, ऊपजे आनन्द है, वर्द्धमान जप्पे ज्यांके सघाही आनन्द है ॥१॥

॥ मुनि गुण ॥

अणी जिन सासन में, केई मुनि राज हुवा, गुणा का भंडारी, जिन मारग दिपावेरे, तिरण तारण जहाज, सारे आत्मा का काज, ऐसा मुनि राज नित्य, मिथ्यात उड़ावेरे, कोई में खम्या का गुण, कोई में विद्या का गुण, व्यावच ना गुण केही, स्वर्ग सिद्धावेरे, खुबचन्द कहे मेरे गुरु नन्दलाल, ज्यां के चरण नम्या सु, भव भव सुख पावेरे ॥ २ ॥



॥ छन्द दुतिया ॥

श्री सिद्धारथ कुल शृंङ्गार, त्रसला नन्दन जग आधार, सोभा सुन्दर सोवन वान, शरण तुमारो श्री वर्द्धमान ॥ १ ॥ तुम नामे लहिये सुख सम्पदा, तुम नामे मन वांछित मुदा, तुम नामे लहिये सन्मान, शरण तुमारो श्री वर्द्धमान ॥ २ ॥ तुम नामे नही आवे आपदा, भुत प्रेत व्यंतर नहीं कदा । रोग शोग चिन्ता नहीं जाण, शरण तुमारो श्री वर्द्धमान ॥ ३ ॥ दुर्जन दुष्ट वैरी विकाल, तुम नामें नाशे तत्काल । तुम नामें नित्य नित्य कल्याण, शरण तुमारो श्री वर्द्धमान ॥ ४ ॥ ग्रहादीक पीड़ा नहीं करे, ध्यान तुमारो ज्यो नर धरे, धर्मसिंह मुनि नाम निधांन, शरण तुमारो श्री वर्द्धमान ॥ ५ ॥



॥ सवईया ॥

चौविसमा महावीर, शूर वीर महाधीर, वांणी

मीठी खांड खीर, सिद्धार्थ नन्द है, नागणी सी नार जाण, घट में वैराग आंण, जोग लियो जग भांण, छोड्या मोह फंद है, चवदे हजार सन्त, तार दिया भगवन्त, करमा को कियो अंत, पाम्या सुख कन्द है, भणे मुनि चन्द्र भाण, सुणो हो विवेक वान, महावीर जप्पे ज्यांके, ऊपजे आनन्द है, बर्द्धमान जप्पे ज्यांके सधाही आनन्द है ॥१॥

॥ मुनि गुण ॥

अणी जिन सासन में, केई मुनि राज हुवा, गुणा का भंडारी, जिन मारग दिपावेरे, तिरण तारण जहाज, सारे आत्मा का काज, ऐसा मुनि राज नित्य, मिथ्यात उड़ावेरे, कोई में खम्या का गुण, कोई में विद्या का गुण, व्यावच ना गुण केही, स्वर्ग सिद्धावेरे, खुबचन्द कहे मेरे गुरु नन्दलाल, ज्यां के चरण नम्या सु, भव भव सुख पावेरे ॥ २ ॥



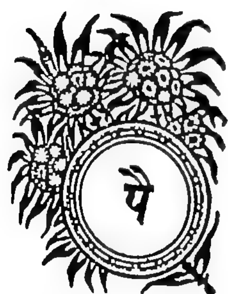
॥ विघ्न हरण ॥

विघ्न हरण मंगल करण, धन श्री जैन धर्म, जिन समरयां पातिक झड़े, टूटे आठों कर्म २, धन साधु धन साधवि धन श्री जैन धर्म, जिन समरयां पातिक झड़े, टूटे आठों कर्म २,





* सवैया-संग्रह *



॥ अरिहंत–स्तुति ॥

पैले पद अरिहंत च्यारूं कर्म किया अंत। लिया है सुगति पंथ॥ प्रभु केवलधारी है। चौंतिस अतिशय पुण। मोटा द्वादश गुण, तीन लोक मांही प्रभु। किरत पसारी है। अनत बली है जाका। नहीं है गुणा को पार॥ शूत्तर विस्तार प्रभू। घोर ब्रह्मचारी है। खुबचन्द कहे कर जोड़ के नमाऊं शीस। ऐसे अरिहंत तांको वंदना हमारी है॥ १॥

॥ सिद्ध-स्तुति ॥

दूजे पद शिरी सिद्ध। हुवा है पन्नरे भेद। मैंने भी उम्मैद थांरां। दर्शन की दील धारी है। आठों ही कर्म ठेल। पाया है मुगति महेल॥ अनन्त सुखां की टहेल॥ जाण रया सारी है। रंग रुप कर्म काया। मोह ने ममत्त माया। दूःख ने दर्द रोग शोग सन्या टारी है। खूबचन्द कहे, कर जोड़ के नमाउं शीस। ऐसे सिद्धराज ताकू वंदना हमारी है॥ २ ॥

॥ आचार्य—स्तुति ॥

आचारज तीजे पद, छांड दिया आठ मद। करत करंमरद। बहू गुणधारी है। छत्तीस गुण करीसोहंत। शरिरशरूपकंत। संघ में सोहत। तै तो पर उपकारी है॥ खटकायाना प्रतिपाल। येसा है दयाल॥ जिन वचन रसाल। ज्यामें चित्त रम्यो भारी है। खुबचन्द कहे कर जोड़ के, नमाऊं शीस, ऐसे आचारज ताको वंदना हमारी है॥ ३॥

॥ उपाध्याय-स्तुति ॥

चौथे पद उपाध्याय पच्चीस गुणा केवाय। नमु नित्य पांय। ज्याने भगन्यां पसारी है। चवदे पूर्व अंग इग्यारे ऊपंगबार॥ भणे ने भणावे॥ आप ऐसा पर उपकारी है

रुचि है नगन। ज्ञान ध्यान मे मगन ॥ शिवपुर की लगन, लाग रही अति भारी है। खूबचन्द कहे कर जोड़ के नमाऊं शीस, ऐसे उपाध्याय ताको वंदना हमारी है ॥४॥

॥ साधु स्तुति ॥

सुणके जिनन्द वांणी। अंतर वैराग्य आंणी, संसार अथिरजांणी, हुआ व्रत धारी है। छाडके मिथ्यात्व रज, कनक, कांमणी तज, संयम शिणगार सज, सुमति विचारी है। दीपावे श्री जिन धर्म, तोड़े है आठों कर्म, पद पावेंगे परमानन्द, ज्यारी बलीहारी है, खूबचन्द कहे करजोड़ के नमाऊ शीश, ऐसे मुनिराज, ताकू वंदना हमारी है ॥५॥

॥ पाचों पद परमेष्टि स्तुति ॥

अरिहंत देवजी विराजमान बारागुणासुं ॥ सिद्धजी विराजमान, अष्ट गुण धारी है, आचार्ज दो अट्ठारा गुणासुं विराजमान, दश आठ सात, उपाध्याय, गुद्धाचारी है, सत्तावीस गुणाकरी, साधुजी विराजमान, मोक्ष अभिलाषी जग ज्ञालको निवारी है। खूबचन्द कहे, कर जोड़ के नमाऊँ शीश, ऐसे पांचों पद जिन, तांकू वंदना हमारी है ॥ ६ ॥



खूबचन्द ककाबत्तीसी

कका के, करम उदय करी गरभ में वस्यो आई, कर उदय करी, दुखःपायो भारीरे, करम उदय करी, नरक नं गोदगयो, करम उदय करी, कुमति विचारीरे, करम उद करी, भव २ भम्यों जीव मुनिराज कह्यो, दया दिल न धारीरे जीव सुख पावे आठूं कर्म खपावे जदी, खूबचन्द व शिव सुख पावे सारीरे ॥ ७ ॥

खखा के,खबर नही छै काल आवे किणवेरां मांहि,चेत चतुर नर सीख हिये धारले, कारमों कुटम्ब परिवार न जाण नर, मोहकूं निवार, जरा ममता को मारले। पां इन्द्री वश राख दया तणों रस चाख, आणी भव मां तेरो जनम सुधारले। खूबचन्द कहे, तेरो खीण २ आ छीजे, अल्प उमर तेमी आत्मा को तारले ॥ ८ ॥

गगा के, गरज न सरी, च्यारू गत मांही भमी आये गरज न सरि परयार पूरा पावियो। गरज न सरि ध दौलत घी पायो घणी, गरज नसरि तिजी गति मां आवियो, गरज नसरि इन्द्र नर इन्द्र असुर हुवो, गर न सरि भीख मांगी घणी खावियो। खूबचन्द कहे, द दिल मांही धार नर, दया दिल धारी जणांसुख घ पावियो ॥ ९ ॥

घघा के। घट में वैराग राख, मोह की निवार छा

करमा की कर राख, शिव सुख पावेगो, घणा छे कायारा जीव, ज्यांने दुःख देइरयो, करम उदय आवेगा तो, नारकी सिधावेगो। करम नहीं छोड़े, भव २ मांही दुःख देने, साधुरी सीख हियामें धार नहीं तो पीछे पछतायगो। खूबचन्द कहे, जरा ज्ञान को उजालो कर, ज्ञान को उजालो किया, परम पद पावेगो ॥ १० ॥

नना के, नारि को निवार संग, करम करेगा कंग, तिरिया के परसंग, राजा रावण मरत है। तिरिया के संगत, केही नर भव हार गया, मानरे अज्ञानी जरा, फूल्यो क्यों फिरत है। करम करेगा रंक माता की न राखे संक, निरलज हुवो, परभव सें नी डरत है। खूबचन्द कहे, मेरी बात हिये धार मूढ, नारि को संग छोड्या, कारज सरत है ॥ ११ ॥

चचा के, चौरिको सभाव मेट, पूरो नी भरेगा पेट, राजा जाणि जावेगा तो, दुःखी कर देवेगा। बन्दीखाने नाखे, थारी संक नहि राखे, थूंतो सांच घणी भाखे, पण तेरो तुइ सेवेगा। उज्जैणी नगरी को राय, विक्रमादित्य केवाय, माथे चोरी आई ज्यारी, कथा देख लेवेगा। खूब-चन्द कहे मूढ चोरी को निवार संग, चोरी को निवार्‌यां संग, सुख मांहीं रेवेगा ॥ १२ ॥

छछा के, छोड़ के संसार ज्याने. लीनो है संजम भार, छै काया ने हणे और, दूजा से हणावेरे। साधु को धरावे

नाम, करे है ग्रहस्थीको कांम, शरणों आवे, ज्यांसे रुपिया गिणांवेरे । हिंसा को उपदेश देवे, मूढ़ लोग. मांनी लेवे, तहकिकात करे-नहि, खुलासा सुणावेरे । खूबचन्द कहे, येसा, कुगुरु को संग छोड़, सतगुरु धार थने, त्रिधसे भणांवेरे ॥ १३ ॥

जजा के, जगत में आयो थूं तो, पुण्य घणा वाधि लायो, छैकायारी जैणा विना, जनम क्यों खोवेरे । मनुष्य जनम पायो, पाप में रह्यो है बूढ़ि, कीच में भरयो है अंग, पाछो कीचमें क्यों धोवेरे। सुरत संभाल,परभव तोकों जाणों लाल, ऊंघतो उड़ाव जरा, नचीतो क्यों सोवेरे, खूबचन्द कहै येम, गेलोहोयरह्यो केम, छैकायारा जीवा ने थूं, रस्ते क्यों डोवेरे ॥ १४ ॥

झझा के, झूंठ बोली रात दिन, लालच में रह्यो लीन, कोड़ी २ जोड़ी ज्याने भेरो कीनो मालरे । करे है ठगाई, मुखकरत बड़ाई, नही लीनी है भलाई, झूंठी फैलाई ते जालरे, कपट करीने, घणा जीवांने डुबोया पापी, करम नी छोड़े, दोख मोटो परो टालरे । खूबचन्द कहे मोको योही तो अचरज आवे, दया विना जीव थारो, होसी कांड मुलरे ॥ १५ ॥

नना के, नींचको नमावे अंग, साधुन को छोड़्यो संग, चार बोल करी जीव, नारकी सिधावेरे । तैंतीस सागर झाक झींक ऊड़ि, थने मूढ़ मात पिता आई वटे,

कणिनी छोड़ायोरे । अन्न को आखो, न बूंद पाणी मिली तोकूं, तांबो शीशो लाल करी, मुख फाड़ि पायोरे । खूब-चन्द कहे, ऐसे, गाफिल रह्यो है कैसे, दया को पिछांण, भव २ सुख पावेरे ॥ १६ ॥

टटा के, टालदे करम, हिये धारले धरम, जीव दया रो मरम, जरा हिरदे पिछांणरे । क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष दूरा कर, मुनिराज कहे, जरा तजदे अन्नाणरे । ग्यान घोड़े बैठ तू तो तपस्या को तीर फेंक, करम बादल हणयां निकलसी भांनरे । खूबचन्द कहे सांची, जीव दया आछी, यातो जिनवर वांची, इमें फेरमति जाणरे ॥ १७ ॥

ठठा के, ठगाई करीने, जुग लियो भरमाई, थेंतो उमर गंमाई, थारो सरे किम काजरे । अलमस्त दिन रात, जीवांतणी करे घात, जिभ्या के सवाद, तूं क्यों करत अकाजरे । दुःख पासी घणों, डर राख परभव तणों, अम्मर तिरेणो तोकूं, मिली धर्म जहाजरे । खूबचन्द कहे जोड़ मिथ्यात्व को दियो छोड़, दया धर्म पायो जरा, ऊंचे शब्द गाजरे ॥ १८ ॥

डडा के, डोकरो हलावे नाड । जावे परवत पहाड, काया का करे है लाड, धर्म नी सुहावेरे । सिरपे सफेदी आई, दांत मुख मांहिं नाहीं, लीलरी लटक आई, जोबन जणांवेरे, शब्द न सुणे कांन, तिरिया करे हैरांन, खाटला

में पड़यो आन, पीछे पछतावेरे। खूबचन्द कहे ऐसी, दांनाकी गति है कैसी, डोकरा समझ, मुनिराज समझावेरे ॥ १९ ॥

ढढा के, ढोरज्यों चरे है घांस, कनक कांमणी पास, किया वनवास, खाक अंग में रमाईरे। मोटी माला काठ की, लेई ने बैठो, हाथ मांही, सिन्दूर को टीको, मृगछाला भी, बिछाईरं। चोरी करे पेट भरे, झूठ को न पार जांके जीव घात करे, सिर जटा भी बधाईरे, खूबचन्द कहे, दया दिलमांही धारयां बिना, चारों गत भम्यो पण, पांचमी नी पाईरे ॥ २० ॥

णणा के। नमो अरिहंत सिद्ध,आचारज उपध्याय,साधू छः काया रा नाथ, पांचो पद भारीरे। संसार असार जांण लेवेहै संजम भार, करणी करे अपार, सुमति विचारीरे। रातदिन ध्यावे, ज्यांरा करम कट जावे, वो तो मुगति सिधावे, जाने आत्मा को तारी है। खूबचन्द कहे खेवा पार करे जे हे नित। मुगति सिधावे जाने वंदणा हमारी है ॥ २१ ॥

तता के, नजदं मिथ्यात्व, कैसा तीर्थ करे है मूढ़। भैरूंने, भवानी, गंगा गोमती को ध्यावेरे। काल-काने, चंडी, मंडि, देव खेत्रपाल, जांकी बोल्मा करी ने मूढ़ मूंड क्यों मुंडायोरे, ग्यान गे सभाव नथी, जीवां की करे है कत्ती, आप मारी खावे, नांम देवी को बतावेरे। खूबच-

न्द कहे मूढ़, अनादि की छोड़ रूढ़, दया को पिछाण, भव २ सुख पावेरे ॥ २२ ॥

थथा के, थिर परिणांम. ध्यान जिनवर केरो, अथिर परिणाम करी, मनक्यूं डोलावेरे । आयो थूं परमाद मेटी, धरम ठिकाणें बैठी सिद्धान्त न सुने, झुक २ झोला खावेरे, सावचेत रह्या साथ, संसार की करे वात, विकथा करी न जीव, बट्टो क्यूं लगावेरे। खूबचन्द कहे तोकूं, अचरज आवे मोकूं, धरम ठिकाणें, झूंठी वात क्यूं वणावेरे ॥ २३ ॥

ददा के, दांन शील तप भाव, हिरदा में लाव तूं तो, कषाय मिटाय तेरो, कारज सरेगोरे । कणीका माता ने पिता, मोह में पड्यो है बीता, हाथ करी रिता, चारों गति में फिरेगोरे । हाथ से कमायो सब होवेगा परायो, तूं तो किम ललचायो, तो कूं नगन करेगोरे । खूबचन्द कहे ऐसे, तुझे समझाऊ कैसे, मुगति पावेगा जरा, पाप से डरोगेरे ॥ २४ ॥

धधा के, धिग् है जमारो थारो, दिल में विचारो जरा, मनुष्य जनम पायो, लेखे तो लगावरे । सिधी खावे रोटी आई, वातां करे मोटी जरा, भांणे बैठी साधन की, भावना तो भावरे । अणी भव मांही तेरी, रेवेगा सवाई, तूं तो जन्म मरण जरा, रोग कों मिटावरे । खूबचन्द कहे साफ, मिटादे अठारे पाप, आत्मा को वशकर, मुगति सिधावेरे ॥ २५ ॥

नना के, नवमांस ताहीं, तूतो रह्यो गर्भ मांहीं, जीयां वेदना सवाई, जीव ऐसा दुःख पायोरे। मुठ्यां वांधी गाढ़ी, थेतो किधी ऑख्या आड़ी, चांम चढ़ी जीम मूढ़, गरभ मांही लटकायोरे। माता को रुदर । और पिताको सुकर करि, हाड़ मांस लोही सब, शरीर बणायोरे खूबचन्द कहे मूरख, गरभ मांही पायो दुःख, जनम लेई ने फिर फूल्यो गुमरायोरे ॥ २६ ॥

पपा के, पेट में भर्यो है पाप। मुखसे बोले हैं साफ, घणा जीवां ने संताप, नाम पण्डित धरावेरे। समज का टोटा वीतो, पोथा वांचे मोटा, करे छः कायारा कूट्टा, जिमे धरम बतावेरे। अठार पुराण कुल, ज्यामें दया कही मूल, लालच का लिया मनमाने ज्यू जमावेरे। खूबचन्द कहे जद, आंधा कूं मिलियो अंध, ज्ञानी विना ज्याने कोण, रसतो बतावेरे ॥ २७ ॥

फफा के, फौजा रेती संग, वीतो पोढ़ता पिलंग, ज्यांने खमा २ करे लोग, सारे दिन्न रातरे। नगारा निशान, आगे बोल रह्या वांण, ईतो चारण ने भाट, और सूरमा संगातरे, लंकपति राय, राजा रावण केवाय, ज्यारी तीन खंड मांहि आण, अखंड वरतातरे। खूबचन्द कहे सार, ज्याने ले'ई गयो काल, चेतरे चतुर नर, हुयो परभातरे ॥ २८ ॥

बबाके, बावोजी बांध्योहै मठ, हाथमें लियोहै तठ, राखोड़ो पेरीने, बावै लंगोट लगाईरे । करे छःकायारा ह्ट्टा, धरम बतावे झूट्टा, सागे हिया फूट्टा, जग करत ठगाईरे । तूंमडो लेइने हाथ, फिरेहै लोगारे साथ, जीमे ताजा भात, मोकूं दिखत दगाईरे । खूबचन्द कहे जोगा, मूड क्यों मुंड़ायो बोगा, घर छोड़ि निसर्यो, पाछो घर मांड्यो आईरे ॥ २९ ॥

भभाके, भूले मति तात और मात, पुत्तर पोता रखी, भूले मति गोरो घात,जेवो नांदपुररे । सुपनेकी माया तो किंम ललचाया, अणां च्यारूमें भमाया, यांको संग र दूररे । पर भव माहीं थारे, संग आवे नाहीं, धूंतो ामकों उखेड़, मति बावजे बंबूलरे । खूबचन्द कहे तुझे, रभवकी नहीं सूझे, दया दिल धार, सब हाजर्यां हजूरर ३० ॥

ममाके, मनुष्य जनम पाय, लावो लेवे कुछ नांय, ाप से कमायो पाछो,पापमें लगावेरे । रात दिन दौडीर, री कीनी कौड़ी, जम्मा जोड़ी सब, मूढ़ धरणी में ड़ावेरे, काल की खबर नहीं, आवे कणी वेरा मांही, ब मन्न मांही, मर भुजग हो जावेरे। खूबचन्द कहे, धन ाप में लगावे पण, तन मन सेती सुकृत में नी लगावेरे । ३१ ॥

ययाके, यौवन में फिरे मातो, काल नहीं जाण्यों

जातो, परमाद में पडी. खिण लाखीणी गमावेरे । साध्
देवे उपदेश, जांपर तूं करे है द्वेष, संगत छोड़ी ने अंग
नीच को नमावेरे । जंतर मंतर और, टोटका टांमण करे,
जांने गुरु धारया वीतो चौरासी भमावेरे । खूबचन्द कहे,
निर्लोभी गुरु बिना, जीया २ देखो तिहां आपणी जमावेरे
॥ ३२ ॥

रराके, रातदिन खावे, जरा आलस नी आवे, लष्ट
पुष्ट होई जावे, पाछो माल नहीं काढ़रे । मात पिता भाई
बन्ध, जामे होई रह्यो अंध, करी खोटा धंध, तूं क्यों
जनम बिगाडेरे । करे पुण्य पाप, वीतो भुगतेगा आप, तूं
क्या करे हे सन्ताप.तेरी आतमा छिजाडेरे । खूबचन्द कहे,
नित उपदेश देवां पण, ग्यानादिक जल छांटी; आंख नी
उघाडेरे ॥ ३३ ॥

ललाके, लोभी गुरु देख, मति जाबजे तू बहेक,
धट नंनगा मागियार देख मिथ्यात रचायोरे । पौषधशाला
मांहा- तलो किया आई, गते तिरखा का परिषा मांही,
परमाद करायोरे । कहु ने संताप सोक, अंग में उपनो
रोग, तिहां थकी चवी, गत तिर्यंच की पायोरे ।
खूबचन्द कहे, वणां करमाको करी धंध,श्रावक पणो आदर,
मुरग सिधायोरे ॥ ३४ ॥

ववाके, वीते है जमारो थारो, माटारो निदामें

खारो, रात दिन जाके माथे, कलंक धरेगोरे। खाणे नी मिलेगा रोटा, सिर पे पड़ेगा सोंटा दड़ी जिम दोटा, खातो चौरासी फिरेगोरे। साधू देखी सागे, थारे क्रोध घणो जागे, थूं तो देखी दूरो भागे, जांकी दूर गन्छा, करेगोरे, खूबचन्द कहे, मुनिराज की निंदा करयासूं, भेरूं को वाहण होइ, भूसतो फिरेगोरे ॥ ३५ ॥

शशाके, सातोंही व्यसन सेवी रह्यो, रातदिन मूढ़, हंस २ करम बान्धे, रायां नी छुटेगोरे। नारकी पड़ेगो जाई, पर्मा धामी तियां, मुदगल सूं कूटेगोरे, सिंह ने सियाल रूप, बेकरे करेगा देव, कागने कुतरा, कानों २ सूं चूंथेगारे। खूबचन्द कहे, विसन सातों ही तजीदे, नहीं तो, जैसा पुण्य पाप तेरा, तूही भुगतेगोरे ॥ ३६ ॥

उन्नीससे त्रेपन साल, सवैया जोड्या रसाल, खाचरौद चौमासा सुण लीजो नर नार रे। सदा ही हमेश, दिल राखीजो दया की रेष सुणी उपदेश तेरी आत्मा कोताररे। जिनजी परुप्यो धर्म जांमे दया तणों मर्म शील ने संतोष खम्मा विनों मूलधाररे। खुबचन्द कहे ऐती छकायारी दया सेती शंका मति राख निश्चय होसी खेवा पाररे ॥ ३७ ॥

॥ समाप्त ॥

गुरू प्रशंसा

राजा ज्यों प्रसन्न होय गांमादि बकशीश करे

सेठजी प्रसन्न होय नोकरी बढ़ायदे । मावीत प्रसन्न होय बतावे गुपत धन्न, पतिजो प्रसन्न होय जेवर घडायदे । देवता प्रसन्न होय पुत्र और धन्नदेत, उस्ताद प्रसन्न होय इल्म पढ़ायदे । खूबचन्द कहे गुरु देवजो प्रसन्न होय, जनम मरण सब दुःखासे छुड़ायदे ॥ ३८ ॥

॥ गुरू की नाराजगी ॥

राजा जो कुपित होय फांसी सूली कैद करे, सेठजी कुपित होय घर से निकालदे । मावीत कुपित होय धन से निराश करे, पति जो कुपित होय मारताड़ त्रास दे । देवता कुपित होय दु.ख देवे द्रव्य हरे, उस्ताद कुपित होय पद बदमाश दे । खूबचन्द कहे गुरुदेव जो कुपित होय, आग नाग वाघ जैसे, छिन्न में विनाश दे ॥ ३६ ॥

॥ लालची कुत्ता ॥

श्वान एक अति भूखो, ज्यांको वासी लूखो सूखो, नीठकर मिल्यो टूको, मूढ़ नही खावेरे । मुंह में लेई ने हाल्यो, नदी के किनारे चाल्यो, आपको आकार जलमांही दरशावेरे । मुख में रोटी को टूको, जाणि ने लेवण ढूंको, मुंल ही को खोयो पाछो नजर न आवेरे । खूबचन्द कहे अणी दृष्टान्तसूं जाण नर, लालच करे सो नर गांठ को गंमावेरे ॥ ४० ॥

॥ बिल्लीयों का न्याय ॥

दो बिल्लि को एक रोटी मिली तब सल्ला घोटि ! बांद्रा के पास जाय हिसाब करावेरे । छोटा मोटा टूक करी त्राजू लाय मांय धरि, नमें जेउं रोटी बांदर ज्यादा तोड़ी खावेरे । सुंपो माकी रोटी थे तो न्याव निकरावां में तो, बांदर सब खाग्यो तब, बिल्यां पछतावेरे खूब-चन्द कहे अणी दृष्टान्त सूं जाण नर, कपटी के पास जाय न्याव क्यूं करावेरे ॥ ४१ ॥

॥ बन्दर की मूर्खता ॥

तखी ने नदी के तीर लकड़ रह्यो थो चीर, अधूरो छोड़ी ने फांदो, घालि घर आयोरे । ये तले तुरत तिहां बांदर आवी ने बैठो, दोनों चीग बीच निज पूंछने फसॉयो है । चंचल सभावी फांदो पकड़ हलायो तब, निकल गयो छे मांही पूंछ पकड़ायो है । खूबचन्द कहे अणी दृष्टान्तसूं जाण नर, पर को बिगाड़े काज तेहि दुःख पायो है ॥४२॥

॥ रंक का स्वप्ना ॥

एक रंक वन्न मांही सूतो, तब नींद आई, सपना मे हुवो जैसे पृथ्वी को नाथरे । छत्तर धरावे शीस, उमराव सोला बत्तीस, खमा२ करे केई जोड़ी दोनों हाथरे । कोंने देवे दान, घुरे है निशानवली रतन ...

हुकम चलावेरे । खूबचन्द कहे अणीं दृष्टान्तसूं जाण नर, सपनासी संपत मे क्यूं राचे दिनरातरे ॥ ४३ ॥

॥ मूढ़ को शिक्षा ॥

बियो कहे बांदर भणी मौसम या बरसात तणी, उधम करे नी मूढ़ बैठो रेवे कांईरे । मनुष्य सी देह थारे, दुःख में क्यों दिन गारे । रेवण के काज घर, लेवे नी वणाइरे । हितकारी देतां सीख क्रोध में हुवो अधिक, बांदर बियो को घर तोड़ी नाख्यो आईरे । खूबचन्द कहे अणी दृष्टान्त सूं जाण नर, ऐसे मूढ़ जनता को शीख दीजे नाईरे ॥ ४४ ॥

॥ भेड़ का स्वार्थ ॥

मीठी दाखतणी वेल ऊंची गई जमी को ठेल, तरु पे रही थी फैल, तिहां वन मांहीरे । भेड़ां चरे चार कोड़ी, तिणमांसू एक मोड़ी हांस कर दौड़ी पण मुख पूगो नाहींरे । मोड़ी पाछी दौड़ी तद, दूजी भेड़ां पूछयो जद, मुखको विगाड़ वेल कड़वी वताईरे । खूबचन्द कहे स्वार्थ पूगे नहीं तो अवगुण बतावे, छतां गुणीजन मांहीरे ॥ ४५ ॥

॥ वणिक पाहुणा ॥

सोनारां के पांमणों आवेतो घड़े सोनों चांदी, और कुमारां के आवे तेसूं हांडला वड़ावेरे । दरजी के आवे तेसुं

वस्त्र सिवावे, और छीपा के आवे तेसूं चूदड़ी वंदावेरे-खाती के आवे तेसूं लक्कड़ घड़ावे और किसाना के आवे तेसूं मांमद हंकावेरे। खूबचन्द कहे तन्त सुणो हो विवेकवंत वांण्या को पाहुंणो कछु काम नहीं आवेरे ॥ ४६ ॥

॥ नीच संगति ॥

काग सुवो दोनों मीत बाग मांही रहे नित, फल फूल खावे तिहां माने अति सुखरे। काग कहे सुण सुवा, अठे घणा दिन हुवा, चाल मारे बाग बिलां खाया भागे भूखरे। लेरां आयो सुवो देखीने अचरज हुवो, खातां भागी चौंच तब करे अति कूक रे। खूबचंद कहे अणी द्रष्टान्त सूं जाण नर ऐसे नीचकी संगत मत कीजे भूल चूकरे ॥ ४७ ॥

काग हंस अष्ट पहर दोनों जगां रहे लेर, कागलो कुबुद्धि लायो हंसने उड़ाइरे। नृप घबराय वन मांही सूतो तरु छाय, तेहनी डार ऊपर बैठा दोनों आयरे काग हड्डी लायो, उठ मुख थकी गयो छूट, भूपत पे पड़यो हाड़ काग भागि दूरो जायरे। खूबचन्द कहे येती नीच की संगत सेती नृप जाग्यो बांणसे दियो हंसने पोढ़ायरे ॥ ४८ ॥

राज महा राज पायो, घोड़ा गजराज पायो, खजाना अखूट फिरे आण निज नाम की। कुटुम्ब संजोग पायो, उत्तम सुभोग पायो, शरीर निरोग है अत्यंत छवि चांम ऊंचासा आवास पायो दासीयने दास पायो

प्रकाश निगरानी सब काम की। खूबचन्द कहे भाई सबही संपत पाई दया धर्म बिना जिंदगानी कौन काम की ४९॥

॥ प्रमादि पुत्र ॥

पिता ले पुत्र के तांई ब्यावन आयो चलाई सगो रूस-गयो तब रुपिया गिणावेरे। राते बींद सोइ गयो नींद, पिता कहे तुरत आई, उठ बेटा फेरा लेले, सगो परणावे है। जान्यां है बहुत लेरां ज्यांने तूं देइदे फेरा मीठी २ नींद आवे मोनें क्यो जगावे है। खूबचन्द कहे अणी द्रष्टान्त सूं जाण नर धर्म में प्रमाद कियां पार किम पावेरे॥ ५०॥

॥ गुण बिना नाम ॥

नाम तो लछमीबाई छाणां बीणें बन्न मांही, रूपांबाई नाम रूप काग सें सवायो है। दयाबाई नाम पण जूवां लींकां मारे नित, साणीबाई नाम जन्म राड़ में गंवायो है। नाम तो जड़ावबाई पासनी तांबा को तार राजीबाई नाम रावे थोबड़ो चढ़ायो है। खूबचन्द कहे अणी द्रष्टान्त सूं जांण नर गुण बिना नाम हीरो काग गले पोया है॥ ५१॥

॥ गुण बिना नाम ॥

नांमतो शीतल दास छेड्यां से ती क्रोध करे, नेणचन्द नांम पण जनम को अंधहै। दयाचंद नांम दिल दया की रहस नांहीं। ग्यानचन्द नांम करे खोटा धन्ध है। नांम तो अमरचंद जीव्यो है अलप काल

सदा सुख नांम पण दुखको समंद है । खूबचन्द कहे अणी द्रष्टान्त सूं जाण नर, गुण बिना नांम जैसें श्वान पे सुगंध है ॥ ५२ ॥

॥ पाप को घड़ो ॥

शेरकी हांड़िमें मूढ दोशेर घालण लागो, ग्यानी देख कहे भाई येती नी समायगो । दो दिन को प्यासो भूखो नीठ कर मिली तोकूं, भूखतो घणीछे येती खिचड़ी न खायगो । मूरख न मांनी सांच लगाई अगनि आंच ढंकण ढक्यों छे पण पीछे पछतायगो । खूबचन्द कहे अणी द्रष्टान्त सूं जाण नर, पापको घड़ोतो कोई दिन फूटजायगो ॥ ५३ ॥

॥ स्त्री का स्वार्थ ॥

लाभोजी बजाज, परदेशमें कमावा काज चाल्यो करमिजाज त्रिया कहे झट आवजो । कमांई हुवांसे, मारे बिंछया, बाजू, बिन्दी, झेला, हार, माला, नथ चूंप घड़ाई ने लावजो । ओढ़न के काज एक लावजो रेशमी चीर, नवहि रकम आप भूल मति जावजो । खूबचन्द कहे नारि धूतारि यों बोलि नांहि, आगरा को पेचो एक थांके लेता आवज्यो ॥५४॥

॥ रूचि बिना ॥

रूचि बिंना ग्यान ध्यान, रूचि बिना दान मान, बिना खान पान, कैसें वण आवेरे । रूचि बिना

प्रकाश निगरानी सब काम की । खूबचन्द कहे भाई सबही संपत पाई दया धर्म बिना जिंदगानी कौन काम की ४९॥

॥ प्रमादि पुत्र ॥

पिता ले पुत्र के तांई ब्यावन आयो चलाई सगो रूस-गयो तब रुपिया गिणावेरे । राते बींद सोई गयो नींद, पिता कहे तुरत आई, उठ बेटा फेरा लेले, सगो परणावे है । जान्यां है बहुत लेरां ज्यांने तूं देइदे फेरा मीठी २ नींद आवे मोनें क्यों जगावे है । खूबचन्द कहे अणी द्रष्टान्त सूं जाण नर धर्म में प्रमाद कियां पार किम पावेरे ॥ ५० ॥

॥ गुण बिना नाम ॥

नाम तो लछमीबाई छाणां बीणे वन मांही, रूपांबाई नाम रूप काग सें सवायो है । दयाबाई नाम पण जूवां लींकां मारे नित, साणीबाई नाम जन्म राड़ में गंवायो है । नाम तो जड़ावबाई पासनी तांबा को तार राजीबाई नाम राखे थोबड़ो चढ़ायो है । खूबचन्द कहे अणी द्रष्टान्त सूं जांण नर गुण बिना नाम हीरो काग गले पोयो है ॥ ५१ ॥

॥ गुण बिना नाम ॥

नांमतो शीतल दास छेड्यां से ती क्रोध करे, नेणचन्द नांम पण जनम को अंधहै । दयाचंद नांम दिल दया की रहस नांहीं । ग्यानचन्द नांम करे खोटा धन्ध है । नांम तो अमरचंद जीव्यो है अलप काल

सदा सुख नांम पण दुखको समंद है । खूबचन्द कहे अणी द्रष्टान्त सूं जाण नर, गुण विना नांम जैसें श्वान पे सुगंध है ॥ ५२ ॥

॥ पाप को घड़ो ॥

शेरकी हांडिमें मूढ दोशेर घालण लागो, ग्यानी देख कहे भाई येती नी समायगो । दो दिन को प्यासो भूखो नीठ कर मिली तोकूं, भूखतो घणीछे येती खिचड़ी न खायगो । मूरख न मांनी सांच लगाई अगनि आंच ढंकण ढक्यों छे पण पीछे पछतायगो । खूबचन्द कहे अणी द्रष्टान्त सूं जाण नर, पापको घड़ोतो कोई दिन फूटजायगो ॥ ५३ ॥

॥ स्त्री का स्वार्थ ॥

लाभोजी बजाज, परदेशमें कमावा काज चाल्यो करमिजाज त्रिया कहे झट आवजो । कमांई हुवांसे, मारे विंछया, बाजू, बिन्दी, झेला, हार, माला, नथ चूंप घड़ाई ने लावजो । औढ़न के काज एक लावजो रेशमी चीर, नवहि रकम आप भूल मति जावजो । खूबचन्द कहे नारि धूतारि यों बोलि नांहि, आगरा को पेचो एक थांके लेता आवज्यो ॥५४॥

॥ रूचि बिना ॥

रूचि विंना ग्यान ध्यान, रूचि बिना दान मान, विना खान पान, कैसें वण आवेरे ? रूचि बिना "

शील, संतोष वलि, रूचि विना विणज वेपार नहि थावेरे। रूचि विना जप तप, रूचि बिना करे खप, रूचि विना धर्म कथा काने नीसुहावेरे। खूबचन्द कहे अणी द्रष्टान्त सूंजाण नर, अंतस की रुचि हुवे फेर कांई चावैरै ॥५५॥

॥ झूँठ का फल ॥

धंनवंत नर ज्याके, झूंठ को नहीं है डर, हँसीमें कहत धाओ धाओ चोर आया है। सुणके तुरत केई सुभट दौड़िने आये, ताको कहे मेतो यूँही सबद सुणायों है। ऐसें ही करत तांके, येक दिन चोर आया, करत पुकार पण कोई न सिधाया है। खूबचन्द कहे सत्य प्रतीत उठावे मत, प्रतीत उठाई ज्यानें प्राणहि गँमाया है ॥ ५६ ॥

॥ सप्त सू व्यसन ॥

प्रथम व्यसन सद् गुरु की करीजे सेवा, दूजो व्यसन तुम जीवों की दया कीजिए,। तीजो व्यसन सत्य वचन धारण कर, चौथो यो व्यसन तू शील में द्रढ़ रीजिये। पांचमों व्यसन नित्य नियम को धारण कर, छट्ठो यो व्यसन तूं सुपात्र दांन दीजिये! सातमों व्यसन संतोष धारण कर, खूब मुनि कहे इम शिवपुर लीजिये ॥ ५७ ॥

॥ सस्ता चौमासा ॥

चारोंही मांस वखांण करे, सम भाव से सूत्र सुणां-वणो है। चौपि रसीली हो, कंठ कला मारु राग मल्हार

को गांवणों है। कोड़ि को खर्चे भी नांय पड़े एक धर्म की जोत दिपावणों है। खूबचन्द कहे ऐसे संत मिले तो क्यों नि चौमासो करावणों है ॥ ५८ ॥

॥ गुरु शिक्षा ॥

ज्यों दरजी पट सार अमोलक बेत करी कटका कर डारे। ज्यों तरखान करोति बिसोले से काष्टकों चीरके छोड़ उतारे। ज्यों कुंभकार मिट्टिवर भांजन लेकर थापल थापक मारे। याविद खूब कहे गुरु देव भी; सच्चि सुणा के जन्म सुधारे ॥ ५९ ॥

॥ ओदशा नार ॥

सिर.पर टाट, ठाठ जुवां को छटके, घूंगा भरियो नाक, आंख में गीजड़ लटके, सेड़ो निकसे बार, लार मुखसें पटके, खूबचन्द कहे धिकार ते नर, नार का हाथ सें भात मुख गट के ॥ ६० ॥

॥ गुजरी ॥

नंदजी के लाल थारो नाम गोपाल, अरे गायां चरावे थुंतो बैठो रहे छांयां झाड़की। दौडयो२ आवे नेडे मांके क्यों लाग्यो है केड़े, गरिबां ने छेड़े थारी फूटी हिया नाड़की। इछ्या वेतो मांन कान दूधने दही को दान, दांगा थने आवे जद मौसम असाड़ की। खूबचन्द कहे देखतही रहगये। जवाब देईने गई गुजरि मेवाड़ की ॥ ६१ ॥

सट्टा बाज मनुष्य

सभाबिच सुणजो सब भाई । सट्टा बाज ने धूंम मचाई । सेठ साहब की नारी बोली, ले लपक्के खिड़की खोली । सैंतीस हजार खोया सट्टा में, बाइस हजार गया गट्टामें, तेरे हजार तासकी पत्ती, बहोतर हजार पर मेली वत्ती । हरक हरक ने जूंवां खेल्या । हाट हवेली गेणे मेल्या । घरको सारो भर्म उघाड़्यो । नव २ वार दिवारो फाड़्यो । छोरी की रकम लेग्या ताकी । तेवी जाय होरीमें नांखी । साठ भगूना छप्पन छाल्या । गया कठेही आज समाल्या । पूछी तो दीनी सो २ गाल्या । रुमाल धोती, रेसमी, वागा, नौकी छमे वेची पागां । ढाल्या पिलंग गोदड़ा गावा,खोई खोवाई ने होगया बावा, गढ़वो गिलास लेग्या तांणी, अबे कांय से पिवोला पांणी, पैसो एक कदियन बांट्यो, घर को कीधो आट्यो-पाट्यो, समचे वात कही सब आगे, सट्टावाज ने कछू न लागे । शिक्षा दे घर वारी सागे, नशर फट्ट के कछू न लागे । पत्त तांरा ने कमखो केम, बूरी लगे तो करदो नेम, खूब मुनि सट्टा को रासो, झड़प वन्ध चौड़े परकासो ॥ ६२ ॥

॥ मुनियों के गुण ॥

अणी जिन शाशन में, केही मुनि राज हूवा, गुणाका भंडारी, जिन मारग दिपावेरे । तिरण तारण

जहाज, सारे आतमाना काज, ऐसा मुनिराज नित, मिथ्यात्व उड़ावेरे। कोई में खंम्या का गुण कोई में विन्ना का गुण, व्यावचना गुण केही, स्वर्ग सिधावेरे, खूबचन्द कहे मेरे गुरु नंदलाल, ज्यांके चरण नम्या सूं भव भव सुख पावेरे ॥ ६३ ॥

॥ सीता हरण ॥

रावण राय त्रिखंड को नायक, भोग विलास मनो गमतीको। बुद्धि विध्वंस भई तिण अवसर, सीता हरी घर आंण मतीको। राम चढ़े दल बादल लेकर, घेर लियो गढ लंक पतीको। देख विचक्षण पुन्याई विन नर, एक रती विन पाव रती को ॥ ६४ ॥

॥ अभिमानी नृपति ॥

सातमो खंड साधनको चाल्यो हिये हुल्लास धरि कुमति को।सबहि सुर समझाय रह्या पण, कंह्यो नहीं मानत नीच गति को। सोले सहस सुर खड़े मुख आगल, रथ डुबोयो जद माहि पतिको। देख विचक्षण पुन्याई विन नर, एक रति विन पाव रती को ॥ ६५ ॥

॥ द्रौपदी हरण ॥

घाति खंडको राय पदमोत्तर, द्रौपदी हरि घर आंण मतिको। कृष्ण चढ़े पंच पांडव लेकर,घेर लियो गढ़ अमर कंख पतिको। सिंहको रूप कियो जद माधव, कष्ट पड्यो

लियो शरण सती को । देख विचक्षण पुन्याई बिन नर एक रत्ति बिन पाव रत्ति को ॥ ६६ ॥

॥ रत्तिबिन मनुष्य ॥

रत्ति बिन्न राज, रत्ति बिन्न काज, रत्ति बिन्न नांय मिले सिर टींको । रत्ति बिन्न रिद्ध, रत्ति बिन्न सिद्ध, रत्ति बिन्न जोग, अजोग जत्तिको । रत्ति बिन्न भाई, रत्ति बिन मांई, रत्ति बिन्न मानुस, लागत फीको। देख विचक्षण पुन्याई बिन्न नर, येक रत्ति बिन्न पाव रत्ति को ॥ ६७ ॥

॥ दरिद्र की रचना ॥

टूटो सो छप्पर घर बिल्ल है अनेक ठोड़, नोर कोर मूसा जोर करत लड़ाईरे । खाट एक पाया नाहीं गोदड़ी बिखर रहि, चांचण, मांकण, जूवां, लिका, तिण मांहीरे। खाली हांडी, बांडो चाट्ट, गूंगो बेटो लुली बेटी, करमा के जोग मिल्यो बोबड़ो जमाईरे । कांणि नारि संकणी सी जणिमें मुरझ रह्यो मूरख, फेर नहि चेते हियो फूटो थारो भाईरे ॥ ६८ ॥

॥ भाग्यहीन मनुष्य ॥

भाग्य हीन एक पुरुष काठ की भारी लायो, पायो आधो मोल रस्ता में चोर लुटायो । घर कंकाली नार मोटो ले मांमें दौड़ी, भाग गयो बन्न बीच आस रोट्यां की छोड़ी, बैठो तरुवर डाल जाय टालन ने तड़को, टूटी तरु

वरडाल माथापे पड़्यो सो पटको। कांटो भांगो नासतां, भाग हीन जावे जठे। करम कमाया आपणां सो भुगत्यां बिन छुटे कठे ॥ ६९ ॥

॥ समय वृथा नहीं खोना ॥

सांस एक खाली मत खोयरे, खलक बीच कीच के, कनक अंग धोयले तो धोयले। और अंधियार पूर पाप से भर्यो है तामें, ज्ञान को चिराग चित्त जोयले तो जोयले। क्षण भंग देह यामें जनम सुधारले मूढ़,प्रेम प्रभू सेति प्यारो होयले तो होयले। ऐसो मनुष्य जमारो बार२ नहीं मिले मूढ़, बिजली के झमके मोती पोयले तो पोयले ॥ ७० ॥

॥ समय बलवान ॥

बिल्ली से मूसो कहे सुन मंजारी बात, डरती रहीजे बापड़ी नहींतर मारूं लात। नही तर मारूं लात, हाथ पग होसी लूली, वहतेर दिन भये भरोसे भटके भूली। कहे गिरधर कविराय फेरियो ऐक डंड्यो धूसो, वक्त बड़ो बल-वान बिल्ली से बोले मूसो ॥ ७१ ॥

॥ आयुष्य की अस्थिरता ॥

ये मेरे देश विलायत है गज, ये मेरे मन्दिर, ये मेरे हाथी, ये मेरे कांमणि केल करे नित, ये मेरे सेवक हैं दिन राती। ये मेरे पूत मपूत कहावत, य मेरे न्याति और ये

मेरे गोती । सुन्दर ऐसे ही छोड़ गयो है, तेल जल्यो ने बुझ गई बाती ॥ ७२ ॥

॥ चुगलखोर मनुष्य ॥

चूके तीर तलवार चूके बरछी और भल्ला, चूके ब्रह्माजी वेद, चूके काजी और मुल्ला । चूके सजत श्रृंगार नट विद्या वो पण चूके । ना चूके चुगलखोर बेइमान । रात दिवस गटक ज्यों भूसे ॥ ७३ ॥

चन्दन है वो पडत है, क्या पड़े पिसणहारी । छीजेगा धनवान क्या छीजे भिकखारी, फूटे माणक लाल, लोहा फूटा ना फूटे । टूटे नरकम तीर, मूसल टूटा ना टूटे । चूके पंडित राज, भरी सभा पण हसे, ना चुके चुगलखोर बेइमान, रात दिवस गडक ज्यों भूसे लिखता चूके, वक्ता चूके, चूके पट्टाबाज । न्याय करण में राजा चूके चूके है वैद्यराज । चूके निशानां चौटका, नजरबाज वो पण चुके । सो सा जूनी ग्याय पग, चुगलखोर ना चूके ॥ ७४ ॥

॥ कर्मों की रचना ॥

कर्म प्रताप तुरग नचावत । कर्म सें रंकपती अति होई । कर्म सपूत सपूत कहावत, कर्म समान सगो नहीं सोई । कर्म फिर्‌यो तब रावण करो माता की लंक पलक में खोई । आप गुमान करे क्या मूरख, कर्म करे सो करे

॥ ७५ ॥

॥ पर निंदा ॥

निंदा नरक लेजाय। निंदा जग वैर बसावे। निंदा गुणोंका नाश निंदा पर दव लगावे। निंदा करे फजीत, निंदा सब दुर्गुण लावे। निंदा मांनको भंग, निंदा ले कैद करावे। बिन पैसे धोबी मिल्यो निंदक धोवे मेल, ज्ञानी आश्चर्य ना करे, सब कर्मों का खेल ॥ ७६ ॥

॥ गुण ग्रहण ॥

गुणग्राही बनिये सदा। लागत नाही कछु मोल, औगुण जोवे आपका। यां में गुण अण तोल॥ यांमे गुण अण तोल, जगत में लोगसरावे, पर भव शूर अवतार, आखिर वो शिवपद पावे। कहत कवि करजोड़, ज्ञान की बातें सुनिये, लागत नहिं कछु मोल गुण के ग्राहक बनिये ॥ ७७ ॥

॥ अपमान की सुध ॥

ज्ञान घटे नर मूढ़ की संगत, ध्यान घटे चितको भरमांयां। सोच घटे ज्यों, साधुकी संगत, रोग घटे कछु औषध खायां। रूप घटे पर नारिकी संगत, बुद्धि घटे बहु भोजन खायां। वैताल कहै विक्रम सुणों, ज्यों करम कटे प्रभुके गुण गायां ॥ ७८ ॥

॥ सुसंगति ॥

ज्ञान बढ़े गुणवांन की संगत, ध्यांन बढ़े तपसी

संग कीने, मोह बढ़े परिवारकी संगत, लोभ बड़े धनमें चित दीने । क्रोध बड़े नर मूढ़की संगत । कांम बढ़े त्रिया संग कीने । बुद्धि विचार विवेक बढ़े । कविगंग कहै, सुसंगत कीने ॥ ७९ ॥

॥ अपमान ॥

मांन घटे कछु मुखसे मांगत, प्रीत घटे नित परघर जायां । बुद्धि घटे ज्यों नीचकी संगत, क्रोध घटे मनको समझायां । नेह घटे चुकते पर चूके, नीर घटे ऋतु ग्रीषम आयां । वैर घटे भुज जोर कियां ज्यों कर्म कटे प्रभुके गुण गायां ॥ ८० ॥

॥ संगत की रेख ॥

काजल की कोटड़ी में, साणां लोग पैष देखो, काजल की एक रेख लागे है पण लागेहै । कोई जावे बागन में, बास आवे फूलन की, कांमणी के संग काम जागेहै पण जागेहै । वैठिये न एक ठोर, भटकाये ठोर २, कायर के संग सुरो भागेहै पण भागेहै । कहत हैं विहारी लाल सुणोहो सयाणालाल, संगत कि एक रेख, लागेहै पण लागेहै ॥ ८१ ॥

॥ जत्ती नाम धरावे ॥

जत्ती नांम धराय के इन्द्रया जीते नांय, परदार को लंपटी रवे भंग ओर गाय । रवे भंग और गाय, वाग-

वाड़ी करे खेती । फेरे ब्याजणां दांम तृष्णा अम्मर जेती । सतरंज चौपड़ रमे अष्ट पहर करे बदमस्ती । और करे स्नान कहो, किण विध कहिये जती ॥ ८२ ॥

॥ श्रेष्ट यति ॥

यति सोही जाणिये, इन्द्र्या जीते पांच, परदारा माता गिने मुख से बोले सांच । मुख से बोले सांच, करे छः काया जेणा, आरम्भ परिग्रह छोड़, पाले श्री जिनवर ऐणा । भवर पणे करे गोचरी, दोषन लागे रत्ती, इन पर करें विहार जिनों को कहिये जत्ति ॥ ८३ ॥

॥ एकादशी ॥

गिरी और छुवारे खाय, किशमिश और बदांम चाय सांठे और सिंगोड़े सें होत दिल स्वादिहै । गुंदगिरि कलाकंद, अरबी और सक्कर कंद, कुन्दे के पेड़े खाय, लोटे बड़ो गादीहै । खरबूजे, तरबूजे और, आंम, जाम निम्बू झोर, सिंगोड़े के सिरे सें, भूख को भगादी है । कहत है नारायण करतहै दूणी हांण, कहने की एकादशी पण, द्वादशी की दादी है ॥ ८४ ॥

॥ पर स्त्री संगत ॥

जोगी की जोगाई गई, साधु की सिधाई गई, बड़ों की बड़ाइ गई, रूप जाय अंग से । ज्ञानी का ज्ञान जाय,

॥ शील की महत्वता ॥

शील पाले कोई पून्यवंत जिवड़ा शील समान नहीं व्रत कोई, शील समान नहीं तप इस जगत में शील तणी फिरे जगत दुहाई, सेठ सुदर्शन व्रजसामि तदा जम्बु कुंवर व्रत धार होई, येवैराग्य संतोष जाण गया जिन, कहे कवि नन्द प्रणाम जोई ॥ ८९ ॥

॥ मन मगन ॥

राजा तो मगन राज काज के सवाज पर, रंकतो मगन सेर चूनकी लगन में । धनी तो मगन धन दौलत गाड़न पर, कांमी तो मगन मृगानयनी के बदन में, सूरो तो मगन सूरताई झूंझन पर, कूडो तो मगन कुढ़ताइ विखवाद में । कोऊ काहू में मगन कोऊ काहू में मगन ॥ मुनिराज तो मगन एक वीतराग का भजन में ॥ ९० ॥

॥ काल दूसमन्न ॥

घूरे नगारा कूंचका छिन्न भर छांना नांय, कोई काल कोई आज है, कोइ घड़ी पलक के मांय, कोइ घड़ी पलक के मांय, मांन हो मनवा मेरा, धरयो रहे धनमाल होवे जंगल में ड़ेरा । कहे दिन दर्वेश भजन कर जीत जमारा छिन्न भर छांना नांय कूंच का घुरे नगारा ॥ ६१ ॥

॥ दुनियां में कलंक ॥

॥ शहद का बिन्दु ॥

मानव जनम वृक्ष कालरूप जाण हाथी, रात दिन्न रूप मुसा आयु जड़ काटत है। संसार समान कूप। राग द्वेष अजगर, कूटुम्ब समान माखा चटा चट खात है। विद्याधर साधक है, आवरे तुं दूखिनर, लालचमें पडयो रे हाहा क्यों करत है। हीरालाल कहै मिठो लागो है टपको सुख अलप दिन्ना को सुख दूखतो अनंत है ॥ ९५ ॥

॥ चुगल खोर बन्दर ॥

सिंहको अवाज सुण कहत है सियार नार, सुणों भरतार आयो वन्नहिको राज है। हरिमन सोचकरे कोंण आज आया घरे, बांदर कहत अरे गिदड़ की आवाज है। मंत्री हमारो येही लावत है दिलासा देही, दगों जाण प्राण लेइ गयो सिंह भाज है। हीरालाल कहै बुद्ध प्रबल प्रताब लेई, सिंहको छोड़ायो घर जंबुक निवास है ॥९६॥

॥ औरतों के नाम ॥

इन्दर सुन्दरबाई, प्यारबाई, धन्नाबाई, रुपांबाई, रम्भाबाई राजबाई जाणिये। चांद ने सुरजबाई, कँवर, केशरबाई, तिजा, चौथा पांचिबाइ, नाम यों वखाणिये। सुलसां सुभद्रां धन्ना रेवंति, जेवंति नाम, नाम नहिं जाणे तियां गोत कों पिछा-णिये। काम पर योगे जानां, अलावे सलावे मांना, हीरा-लाल कहे जिन्न आज्ञा कों प्रमाणियें ॥ ९७ ॥

॥ नारियों के शृंगार ॥

सोहन जड़ित चूड़ो रुड़ो हार मोती तणों, नाक नथ वैंशर ज्यों लिलाट टींको भारी है। कड़ा, तोड़ा, लंगर रम्मझोर घोर बाजी रह्या, बिछां विंट्या अंगोठ्या ने दंत चूंप न्यारि है। कांकण ने करंमदि गेंद, बाजु, बंद, बिन्दी नोगरी, फूलरि, काजर टीकी सिणगारी है। कर्णफूल शीश फूल दूलड़ि तिलड़ी मुख, हीरालाल कहे शील बिना नागी नारि है ॥ ९८ ॥

॥ कृष्ण पराक्रमःधात्री खंड़ ॥

कियो रूप नर सिंह, द्वारके मुले आयो, महितल मारि लात, नादसें अंमर गजायो, धरणी भई धड़धड़ाट, थरहर ध्रुजण लागा, गढमढ मंदिर कोट, धड़ड़ड़ पड़िया भागा, देख अतुल बल खलबल्यो, मन विचार इसड़ो कियो, हीरालाल कहे, नृप पद्मने, सरण सतिको जाय लियो ॥ ९९ ॥

॥ सत्य वचन में शूरा ॥

फिरे नंदिको पुर, फिरे सूरो रण चाढ़ियो, फिरे, मेघ पट्टल, फिरे गज मदको चाढ़ियो। फिरे सूर्य को घाम, फिरे चंद्राकि छायां, फिरे ऋतु विन वृक्ष, फिरे सुख पायां काया। वय बालि वनिता फिरे, फिरे मित्र अगनी मे डरे,

ीरालाल कहे ऐसा पुरुष का, वचन अचल कभी ना फिरे ॥ १०० ॥

वचन काज श्री हरिश्चंद्र राजको छोड़ी आयो, वचन काज श्रीरामचंद्र, वनवास सिधायो। वचन काज श्री लंकापति, राज विभीषण को दीनों, वचन काज श्रीकृष्ण, धावो धात्री खंड कीनो, वचन हार मानव बुरो, निपटनी होवे लाज, हीरालाल कहे वचने बंध्या, तुरत सुधारे काज ॥ १०१ ॥

वचने होवे मिलाप वचने वैर मिटावे, वचने बधे दौलत वचने अमृत रस पावे, वचने पांमे राज वचने विद्या बल आवे, वचने शीतल होय वचने वैराग उपावे। रोगशोग वचने मिटे, गुरू मावित्र वचने रींजिये। हीरालाल कहे रस वचन को बुद्धिवंत नर पीजिये ॥ १०२ ॥

॥ अधिक धर्मप्रेम ॥

अधिक मात और तात अधिक सुत नार स्नेही। अधिक बंधु परिवार अधिक सज्जन जन के ही॥ अधिक राज को ठाट पाट पिताम्बर गहना। अधिक माल रसाल अधिक मुख अमृत वयना। अधिक पद भूपत भयो अधिक रूप रमणी घणो। हीरालाल कहे इस जगत में अधिक धर्म जिनवर तणों ॥ १०२ ॥

अधिक ज्ञान गुण ध्यान अधिक तप संजम

अधिक शील संतोष अधिक पराक्रम पूरा। अधिक दया उपदेश कियो उपकार, अधिक जीव यतना जाणी, अधिक धीरज धरणी धार, अधिक तेज दिवाकर जमो। हीरालाल

गुण ठाणी है, सिद्ध गति दायक नायक सहू साधुनके, हीरालाल कहे आदि अरिहंतको जाणीये ॥ १०६ ॥

गुरु गुण कथन करत नहि आवे अन्त, ज्ञान के सागर संत सदा सुखदाई है। करत उजास ऐसे सूर्य आकाश तैसे, चंद है सीतल जैसे, तैसे रिखराई है। ऐसा है दयाल दाता करि है अनंत साता, हीरालाल कहे ज्ञान गुरु गुण गाइये ॥ १०७ ॥

देखो इस जगत को झूठ की रची है जाल, सांचसे न चाले चाल जगत संसारी है। कूड़ा जो कलंक देत निंदक है लाज रहित, दुष्ट सेति करे हेत नर्क अधिकारी है। सांच के न आवे आंच, झूठ कहा रहै राच रतन सरिखो कॉच करत ऊजारी है। सुगुण सुजाण नर तुरतहि छाण करे। हिरालाल कहे सतगुरू गुण धारी है ॥ १०८ ॥

॥ असली की नकल ॥

असल की नकल बणाई चतुराई करी तांमे, काहा गुण देखो दिल में विचारी है। तुरंग या गज केरी, नकल बनाइ धरी पुरुष आरूढ नहीं होत असवारी है। नृप की नकल नहीं राज को चलावे काम, सेठ की नकल स्वांग सेठानी न धारी है। हीरालाल कहे तोल असल को मोल कोन, नकली वस्तु को और वैचत वजार है ॥१०९॥

॥ मूढ नर ॥

कासी मे निवास कियो मूढ को न खुल्यो हियो, सूरज उद्योत भयो, अंध के अंधियार है। गंगा में नव-रायो खर, तुरग नी होत पर, अमृतसुं सिच्यो नीम मधु ना निहार है। जोग मिल गयो मुध, तोहि नही छोड़ी रूढ़, ज्ञान नही पाया मूढ, कर्मोकी मारहै। समुंदर मांहि पेम प्यासो जो कोइ रहे नर, हिरालाल कहै, तेने पड़ धिक्कार है॥ ११० ॥

॥ सेठने—सेठाणी समझावे ॥

चोरी को करन चोर चाल्यो राते कोही ठोर, आयो ३ नगर पोर खात खणे सूरंग। सेठानी कहत सुनो सेठ चोर आया पोर, सेठजी कहे ते जाणु याहि बात पूरे। धन माल लेई कर चोर चाल्या निज घर, कहे हीरालाल सोतो गयो घणी दूरे, जाणु २ करर्यो चोर माल लेई गयो, एसो जाण पणो पायो तामे पड़ धूलरे ॥ १११ ॥

मे तो थने उपदेश दियो घनी करी रेश, थने तो न लागे थारा करमाकी गत है, धर्म की जाण मीन जग की बताई रीत मनो सव बात कही सांची २ मत है। थारे तो न आस आइ मन में भी नहीं भाई, हीरालाल दोष नाहीं थारी याही मत है जैसा पुण्य थारा होसी तेसा आगे आड़ा आसी, म्हारी गत मेंही जाणुं थारी याही गत है ॥ ११२ ॥

॥ नगर वर्णन ॥

सुन्दर बजार वर्ण्यो वगज वैपार वित, वनिता ने विनय ंत वास सुखकारक है। बण कड़ वसे तियां बांमण ने विद्यावंत, वैद वादी विवेकी और वसे वैश्या नार है। वाग े वगीचा बन्न बावी वारी विरछंद, वाहन वाजित्र वीर वेजासु विचार है। बुरजा बब्बर बंगला चारूंहि वर्णू भला, ीरालाल कहे येसो शहर श्रृंगार है ॥ ११४ ॥

॥ बाग वर्णन ॥

आंम जांबु निम लींबु, निग्रोद केतोड़ि वैल, पलास पेपल केल राज रूंख राणि है। डाड़म विजोरा दाख मंडप ़भी का केही, चंपा ने चमेली वेली गुलाब वखाणी है। ाइ जुई गुच्छ गुम्म फल फूल रह्या लुम, मरवो मोगरो ाध केतकी कहाणी है। खटपद चितलित चंदन बावनो ्त्त, हीरालाल कहे येसो मंडी वृक्ष जानिये ॥ ११५ ॥

॥ छेः लेश्या वर्णन ॥

एक समें भेला होइ चाल्या है मितरी खट, पाको ांबो देख कहे कीस तरह कीजीये। एक कहे मूल काटो ़जो कहे ऊपर सेती, तीजो नर कहे लघु साख काट जेये। चौथा झुड़ काचा पाको पांचमाने पाको ्रटो नर कहे इम हेटे पड़ी लीजिये। छेइ जणा

।। केशी गोतम—स्वामी की चर्चा ।।

सावंति नगरी मुझार समो सर्या अणगार, गौतम केशी कूमार, जगतके चंदणा, सम गम करी वेऊ, चरचा करीहै येऊ, द्वादश प्रश्नका किया सुद्ध निरणा, शंसय मिटाइ, करादिया शूद्ध चितमांही, परंम हर्ष पाई शिवपुर संदणा। कहै हीरालाल जोड़ी, हस्त दौ मस्तक चोड़ी, केशी ने गौतमजीने करूं नित्य वंदणा ।। १२० ।।

चार महाव्रत रूप पार्श्व जिनेंद्र कह्यो, पंच महाव्रत वृद्धमानजी वखाणीयें, प्रथम सरल जड़ वंक जड़ छेला कह्या, मझम सरल प्रज्ञावंत मुनि जाणिये। समजात दुक्कर २ क्रिया पालण, तांते महाव्रत किया चित भेद आणीयें, निर्मल बुद्धीवत कियो है संशय अंत, हीरालाल कहे केसी मुनीजी की वांणी यें ।। १२१ ।।

अचेल सचेल दोइ, किया है जिनेन्द्र जोई, एक ही कारज होइ, दिसे किंम फेर है, लोक प्रतीत मुख्य मार्ग साधणो यह, विविध प्रकार गुण अर्थ को सो मेर है, ज्ञान ने दर्शन चारित्र, निर वहावा काज, धारे वस्त्र मुनिराज, ममता विगर है, गौतम वचन सुणी हर्ष्या है केशी मुनी, हीरालाल कहे गुणी जनकी यह टेर है ।। १२२ ।।

अनेक हजार वैरी, रह्या है चौतफ घेरी, । सन्मुख, ज्यांने केम करीये, एकजीत्या जीत्या

जीत्या जीत्यादश, दश दूर्जन जीत्यां काय पसरीय, आतम कषाय पंच, इन्द्री यों करीये वस, लीयो है सबाको यश, अहंपि विचरीये, तृतिये प्रश्न ज्यांको, दीयो है उत्तर तांको, हीरालाल कहे यांको ध्यांन हिये धरीये ॥ १२३ ॥

जगतरा जीव दीसे पासमें बंधाइ रह्या, मुक्त पास लघुभुत रूपी यों विचरता, बंधन बंधन छेदी आगम कषाय भेदी, चेतन अवेदी फेर पापसे भी डरता, राग द्वेष दोड ज्यांको विश्राम नहीं तांको, मोह रुप पास मांह सम नहीं रहता, हिरालाल कहे एसो सासण को न्याय लहे, केशीने गोतम कहे शिव सुख करता ॥१२४॥

अतर हियाके माही लता जो प्रकट भइ, जहर रुप फल खावा थकी जो निवृतिया, सर्वप्रकार छेद उखाली ये मुल सेत, सामसगरा पाल्य देत हितकारी पथीया, तृष्णा रूपणी वेल नगन मे रही फेल, सतोष करण झेल मेट डाँवी जतीया कहे हीरालाल मन चन्न है प्रजावत, लालचिके वेल हत पांय मोक्ष गतीया ॥ १२५ ॥

अनल प्रबल घेर ज्वाला जगत माही, सरीर के ताई कर्म क्रश ज करत है महा मेघ थकी जल उत्तम प्रगट भयो, सीचता शीतल थयो फेर न बधन है । अग्न कषाय रूप मेघ रुप जिनराज वाणी रूप धारा पाणी गहन

श्ररत है, शिव सुख महा सिद्ध वसत सकलविद, हीरालाल क्षमा रिद्ध पातक हरत है ॥ १२६ ॥

अति साहसिक मींम भमत है चऊ फेर, आरुढ ऊपर भया एम केम ध्यावे है । पाप पंथ जात गृही राख्यो है बंधन बांध, सुपंथ छोड़ करी, कुपंथ को ध्यावे है । मन रुप तुरंगको वेग जैसे कुरंगको, स्थिर नही रहत छिन्न माहे जावे आवे है, सुत्रकी रासी वांध, सुगत मार्ग वहे, हीरालाल कहे गती ऊर्ग को पावे है ॥१२७॥

कू पंथ के मांही भमत पड़त जीव, भटकत भव कूंप अधव को करणों, दान पद करतको जाणपणों जाण रह्यो, सिधा सुद्ध मार्ग को कियो सुद्ध निरणों, तीनसे त्रेसठ मत पाखंड परुप्यो नित्य, ऊवट मारग पथ दूक्कर है तिरणो, सुत्तर चारित्र रुप मारग अख्यात जीन, हीरालाल कहे भव २ माही सरणो ॥ १२८ ॥

महा मोटो ऊदक को वेग है मचल मंड, निपजत जग जंतू सरणा को ठाम है, ऊदधी के मांही एक द्विप है प्रसिद्ध महा, गमन करत जहां अविचल धाम है । जन्म मरण वेग भर्‌यो है अथाग जल, डूबत है जग जीव पाया विश्राम है । श्री जिन धर्म श्रुत हीरालाल कहे पोत, पहोंचाव शिवपूर ऊत्तम ऐ गांम है ॥ १२९ ॥

ऊदधी तिरवा काज नावांको लगायो साज, तहां

विराजे राज किम रहे पाज है। छिद्र सहित नाव कादियन पार जाय बिना ही छिद्र नाव तरवा को काज है। सरीर या कही नाव नावडयो चैतनराज, संसार तिरण को यो कठिन समाज है। आश्रव रूप नीर रोक दियो शूरवीर हीरालाल कहे तिर गया ऋषिराज है ॥ १३० ॥

अन्धकार घोर महा प्राणी बहु फसे जहां, ऊद्धतकारणं कोरा जगतसुं न्यार है भांनू एक प्रगट, हुवो लोक निर्मल कियो है उजास महा, गत अंधियार है। इण जग मांही जिनराज है हर्ष भार, कियो है उद्योत महा सवन को प्यार है। एकादश प्रश्न में अन्धकार निरो कयो, हीरालाल कहे भया ग्यान जय जयकार है ॥ १३१ ॥

शरीर मानसी दुःख दाह प्रकार कह्यो, जीव को आराम सम धाम सो ठिकाणा है। अविचल ठाम लोक अग्र शुभ धाम, जनम मरण जिहा जरा नहीं जाणा है। क्षेम शिव शांत रूप कह्यो है थाइ, मछय मच्या वहां गति समान है ठाणा है, चार गति रूप अन भवजो कह्यो है सन हीरालाल कहे यह ठाणा संपताणहे ॥ १३२ ॥

कहे कहा अणगार हाल्यो थान नमस्कार, धार्यो है सुन्दर पार भव सब हरणा। पंच महाव्रत रूप, धर्म अंगीकार कयो प्रथम चरम जिन मारग सुधरणा, सुन्दर चारित्र नगा अब कियो संताप, पाया है धर्म इष

पर्म सुख करणा, केशीने गौतम भगवंत महा यशवंत; हीरालाल धरि खंत चरनका सरणा ॥ १३३ ॥

जय जय पार्श्व जिन जय जय महावीर, जय जय गणधर देव गणपती करणा, जय जय चऊ विध संघ मारग निहग वहे, जय जय गुरु देवनकी ज्ञान गुण धरणा, सम्मत उंनीस सो पेंतालीस शूद्ध वहे, हरष प्रमोद लहे सुणों बहू वरणा, छंदके प्रबंध पंच दश करी संघ हीरालाल कहे मुज्ज प्रभुजीका सरणा ॥ १३४ ॥

॥ चंदन मलियागिरी ॥

कूसुमपुरी को राजा चंदन शीतल ताजा। एक दिन महाराजा। भयो दुःख भारी है ॥ राज छोड़ काज छोड़ पुत्तरां को खांधे चोड़, निकलियो नरपत साथे लेइ नारी है, पर देश जाय पर घर पर काम करे, दुःखे २ पेट भरे कोइ न आधारी है ॥ कहे हीरालाल संत देखो या कर्म गत, उलटिया दुःख अंत देखत अपारी है ॥ १३५ ॥

पेट ही के काज रानी करमा की खेंचिंतानी, जंगल में जाय आनी लक्कड़ की भारी है, वेचण के काज कर, बोली है आवाज धर, सोदागर रूप देखी मोहयो ते वारी है, दगा सें लेगयो रानी काहू नें खबर जो बोलत है दीन बानी होत पर हारी है, कहे राय

रानी, पुन्न वंत पूतजानी नेणा नीर बहे पाणी, हेज हीये भरीया ॥ १३९ ॥

जक्तकी देखी रीत तोड़ी है सज्जन प्रीत, धर्म को कर्यों मीत परभव साहाही है, पुत्तरकों थापी राज, राणी ने चंदण राज, करण आतम काज, गुरु सुख दाई है, आतम अराधी करीकाल, सुभ गत लाधी जगतकी छूटी व्याधी ऊंच गत पाईहै, सम्मत उन्निसे इकतीस शुद्ध लहै, हीरालाल इम कहै उदयपुर मांही है ॥ १४० ॥

॥ दशारण भद्र राजा ॥

विचरत २ आया श्री वीर धीर । दशारण पुर तीर । बाग मे विराजिया । सुणके आगम जिनराज तणी पड़ी गम । हर्ष्यां भविक जन मन माहे गाजिया । करी है सजाई नरपती । ऐसी चित लाई ऋधी वृधी ठाई । ज्यांस्यू वैरी जाय लाजिया । कहे हीरालाल वीर वंदण को महीपाल, हाथी, घोड़ा, रथ, पाल, दल सब साजिया ॥ १४१ ॥

अष्टादश सहस्र गज घोड़ला चौवीस लख, सहस्र एक सुखपाल छत्तर जो धारिया, एकवीस सहस्र रथजोड पाय दल केई कोड, कूण करे मुज होड़ राय मन भरिया । पंच सय परिवार अंते वर लिया लार । करी सृंगार

आकाशे उतरीया, देख दल बल पूर राज ख्या
हीरालाल वीर वंदण निसरीया ॥ १४२ ॥

सुरपत आया खास बैठा जिनवर पास,
नाम वारखान जाणी है, मनचही मन मांही
जोग नहीं. पराक्रम सज्झाही कही सब वाणी है
महत्त किया राज पक्ष को बखाण छज, पांच सय
दंत आठ जाणी है, कंवल का लागा ठाठ नाटिक
मांत. कहे हीरालाल सब रचना बखाणी है ॥ १४३ ॥

पेरावन देख करी मान सब गयो गरी, चितवन
सोच में उतरीया, संयम समान नाहीं ठाम तीन लोक
ऐसी मन मांही लाह चारित्र आचरीया, इन्द्र कर नम
थन हो थे अणगार । गुण गाह वारंवार तेही पांव पड़ी
कहे हीरालाल रामपुरा है रसाल चाल, अड़तीस साल
चौमासो सुख करीया ॥ १४४ ॥

ताप सहै मेण तणों गोलो, धूप लाग्यांथी पिंघलणो ॥ १४५ ॥

लोकां ने उत्तर दीयो पाछो माता पासे गयो, माताए तो वेंण कह्यो माथे सल चोड़ने, नवमांस पेट मांही राखी जन्म दीयो मांइ, वली नारी परणाइ अठी वठी जोड़ने छोरा छोरी थारी नार लेइने निकलबार, माता का वचन धार मेंव्यो मन कोडने, लाख तणों गोलो कह्यो अग्न देख गल गयो, हीरालाल कहे देखो बैठ गयो छोड़ने ॥१४६॥

मात और तात को डीगायो नहीं डीग्यो नर नारी पासे गयो घर, क्रोधनी चंडार है। तड़क भड़क नार कहे मोल्या भरतार, खाउ न खटाउ सुख पाइ न लगार है। जिम तिम करी पेट भरूं नित प्रत ऐम तूं तो धार बेठो नेम। प्राण तजू तत्कार है, हीरालाल कहे नारी वचन डीग गयो लकड़ गोलो अग्नीवाल कीयो छार है ॥१४७॥

नारी तूं नरक वाट मेले है कुगति घाट, आप घात करसी तो जनम बिगाड़सी, म्हारे नहीं आवे लेरां मेटूं भव दुःख फेरा, ज्ञानी गुरू मेरे को देखाइ ज्ञान आरसी संसारी विषय सुख जाणीयो अनंत दुःख, न्याति गोति संसार का। गरज न सारसी, मिट्टी तणो गोलो कर्यो आँच लाग्या पक्को भयो, हीरालाल ऐसो रह्यो सब दुख टारसी ॥ १४८ ॥

अहूगम चौवदे पूर्व चार ज्ञान कलाधारी है। तेजसलेश्या ने छिपाय राखी है आतम मांही, घोर गुण घोर तप घोर ब्रह्मचारी है। संयम तपस्या करी भावत आतम मुनि, हीरालाल कहे ताकों, वंदू वारम्वारी है॥ १५२॥

बीजे पाट जम्बू स्वामी, छेला शिवगत गांमी, वंदू सिर नामी थया बाल ब्रह्मचारी है। आपही तरुण पणे तरुणी तुरत तजी, प्रभवा प्रमुख घणा तार्या नर नारी है। आगमकी पूछा करी जगतका उपकारी, सूत्र अर्थ तदू भय लिया धारी है। चर्म केवली जिन सासण का हुवा वैली हीरालाल कहे तांकी जाउं बलिहारी है॥ १५३॥

अशोक वृक्ष और स्फटिक सिंहासण जाण. त्रण छत्र श्वेत चम्र अम्बर में सोभता। महेंद्र ध्वजा भामंडल प्रकाश करें, धर्म चक्र देव दुदभी गगन मे गाजता। दूध जैसो लोही मांस अहार निहार नही पास, सुगन्ध श्वासो श्वास रोग रहित दीसता। द्वादश गुण धणी, नमू ऐसा देव- भणी, हीरालाल कहे अणी रीत थी विराजता॥ १५४॥

नमो देव अर्हत चौवीसीजी भगवंत, वाणी मीठी इधी अंत अमृत की धार है। सरस्वती वरसती घन्न जिम गरजती, भव्य जिम हर्षती हृदय अपार है। शिवसुख तणी दाता, बुद्धजन तणी माता, तेरा गुण सभी गाता, पावे कौण पार है। वाणी को हृदय धरे देवता चतुर नर, हीरालाल कहे कर रह्या जय जयकार है॥ १५५॥

॥ स्तुति मनहरछंद ॥

श्री जिनराज मुज साज के करण काज, पूर्ण पर्म ज्ञान ध्यान तांको धरणा । सर्व गुणां की सिद्धि ऋद्धि, सर्व जगत की निधि । सर्व सुरनर पर्म पद करणा, तिम्र हरण दिन करण किरण तेज, मेटत मिथ्यात्व महा मोह दल हरणा । हीरालाल कहे मनवांछित फल लहे, जय२ जिनवर चरण का शरणा ॥ १४९ ॥

तुम गुण सिंधू इंदू झलकत जल बिंदू, कहां ते समावे नीर, कूप केता भरणा । चरम सागर और अम्बर को अंत कहां, मेरु गिर सम तोला, तुला ते उतरणा। गुण तो अनंत बुद्धि अल्प न लहे अंत, जन्म जरा का दुख, मेटन है मरणा । संकट विकट नहीं आवत कधी, हीरालाल कहे जिन चरण का सरणा ॥ १५० ॥

श्री महावीर ज्यां के अहो निश रहे तीर, गणपती गणधर पूछना करण कों, छठ २ पारणां करत अप्रति हत ध्यान कोठा मांही निज आत्म धरण कों । इन्द्रभूतिजी नाम गौतम गौत्र कहे, सात हाथ सोभे तन कंचन वरण को । ऋद्धि सिद्धी नव निद्धी सकल समाधी कीधी, हीरा-लाल कहे जिन आपके चरण को ॥ १५१ ॥

प्रथम विराजे पाट स्वामी श्री सुधर्मा गणधर पचमां ते मोटा उपकारी है, जिन नहीं जिन सम आगम की

बत्तीस उपमा वर्णवी प्रश्न व्याकरण मझार ॥१॥
मन वच काया शुद्ध करी धारे शील सुरंग ।
सयंभुरमण दधितिरगयो रही तिरणी अवगंग ॥२॥

सवैया—जोतषी में निशाकर, आगर में रत्नागर, बहू रत्न रत्नां मांही मुख्यता वखाणिये । मुगट आभूषण मांही वस्त्र माहे खेम जुग्ल अरविंद कुसमा में सुवासित जाणिये । चंदना में गोशीसक ओषध्या में हेमवंत, नादियां में सीतासम ओर नहीं मानिये । दधि में सयंभूरमण रूचक है गोलाकार, एरावत कूंजरा में अग्रेसर ठाणिये ॥१५९॥

चोपदां मे सिघ सुरो नागांमांहे धरणीन्द्रो, सोवन कुंवार मांही, वेणो देव लाईये । कल्प मांहे ब्रह्म लोग सभामें सुधर्मा जोग, स्थिति में लव स्थिति उग सवट्ठ सिद्धमांहीं ये । रंगामे किरमचीरंग दांनामे अभय अंग, वज्रऋिषभ संघेण मे अति अधिकाइये । संठाणे चौरस स्थान ज्ञान में केवल ज्ञान ध्यांना मे सुकल ध्यान निरमल ध्याइये ॥ १६० ॥

लेशा में सुकल लेशा मुनियां में जिनंद जैसा, क्षेत्रां मे विदेह क्षेत्र महत्व वताया है । मेरूगिर ऊंच मांही नंदनवन वन मांही, जंबुवृक्ष वृक्षा मांही प्रतिष्ठ कहवाया है । सैन्या में चक्रवर्ती, दीपत है पृथ्वीपति रथ माहे हरि रथी, को नशाया है । हीरालाल कहे सीलव्रत यों अ म तीनों लोक मांही सुरनर गुण गाया है ॥ १६१

पहले पद अरिहंत द्वादश गुणवंत, दूजे पद सिद्ध गुण अष्ट के भंडार है। तीजे पद आचारज गुण है छत्तीस राज, उपाध्याय गुण करी पच्चीस प्रकार है। समस्त साधु कर जोड़ी नित्य प्रत वंदू, ज्ञानके आगर गुण सत्तावीस धार है। कहे हीरालाल ऐसे जापिये गुणों की माल, फेरिये नौ कर वाल अष्टोत्तर शतवार है। नमूं देव अरिहत अष्टादश दोष रहित, शिवपुर सौही लेत तेही अरिहंत है ॥ १५६ ॥

नहीं है अज्ञान मद, क्रोध मान माया लोभ, रती अरती निद्रा शोक झूंठ न बोलत है। चोरी न मच्छरभाव भय नहीं घट मांय, प्राणी बध प्रेम जाव क्रीडानी संगत है। काम नहीं आवे जाने, हीरालाल कहे ताने अठारा ही दोष मांय एक न पावत है ॥ १५७ ॥

बाल ही पणामें बस्यो साधुजी की संग मांही, यामें ही कुटुम्ब सब याको ही आधार है। यामें मात यामें तात यामें भ्रात भगिनि है, यामें काकी मित्र सब परिवार है। यामें आसोसी और पाडोसी वसणहार, एक ही गांव का, यामें केई नरनार है। हीरालाल कहे मेरो सम्बन्धी मिल्यों है सन्तो, संसार का न्याती गोती जाणू न लगार है ॥ १५८ ॥

शीलव्रत की ३२ उपमा

दोहा—शील रत्न सब मे बड़ो सब रत्नां सरदार।

दरसन जिनवांणी अदभुत रस, सुणिया भविक हर्ष चढ़त अगात है, हीरालाल कहे अदभुत रस पियां लहे, परम मुगती पथ सिद्ध गति पात है ॥ १६४ ॥

रुधिरको रस जहां रौद्र प्रणांम जाण, भ्रकूटि लिलाट नेत्र मुखको विकार है, पशुवध परिणांम वैरिको विनासे ठांम, असुर दानव पर वेह तरवार है, रुधिर प्रणांम सेती विनोंकों विभंग करे गुरु जन, त्रिया संग गुढ़ अतिचार है, हीरालाल कहे एसे रुधिर प्रणांम सेती आठों ही करम घाती होवां जै जै कारहै ॥ १६५ ॥

त्रिवड़ा ते लज्जा रस संकासे ऊपत भयो, रखे कोई जाणलियो मम काज करियो, प्रथम संजोग समे रुधिर को वस्त्र होत, त्रिया भाव केरे काज आगे लेइ धरियो, तथा लज्जा आंण वहे पोता की सैया को कहे, लोकिक की लाज लहै अकाज पर हरीयो। हीरालाल कहे रस पांचमा को अर्थ लहे, मुनी लाजे पाप सेती, भव दधि तरियो ॥ १६६ ॥

विभत्स को रस दुर्गंध से दूगंछा करे, तीह से प्रगट भयो वैराग रस भाव है, अशूची अशूध पुद्गल को भरी तन, श्रोतादिक द्वार सव अशूची की आव है, धन-- वैरागी जन जान लियो एहवो तन, धरियो वैरागे जिम जल नाव है, संजम को सार जो संसार को पार, हीरालाल कहे योही तिरण को दाव है ॥ १

॥ नव रस वर्णन ॥

दोहा—आगम अनुयोग द्वार में नव रस रचित संसार।
वरने जिन आगम विषे विरला लहे विचार ॥
वीर, शृंगार, अद्भुत रस रौद्र त्रिवड़ा इम जाण,
विभत हांस करुणा कही उप शांत नव वखाण ॥२॥

॥ सवैया ॥

आदी ही मे वीर रस दांन दिया होवे जस, तपस्या करियां मुकम करे कोटि तंनको, निर्ग्रंथ धर्म धीर होवे महा गम्भीर, राज पद त्याग व्रत धारे जके जनकों । काम क्रोध मोह प्रीत, शत्रु मोटा लिया जीत, वेरीको विनासे तहां, धारे धीर मनको । हीरालाल कहे महावीर सिद्ध नाम एह घातिक कर्म चाय कीधा महा घनको ॥ १६२ ॥

बीजो है शृंगार रस ललना के होत वस, त्रिलोक विलास लीला रति सुख जाणिये । कांकण मोत्याको हार नवा [illegible] सिणगार, अंजन मंजन शुभ गंधादिक आणिये । सिंगार वचन रस उपजत उनमत, तरुण पुरुष युवती के संग ठाणिये । नेवर को झणकार घूघर सबद प्यार, हीरालाल कहे रस सिंगार वखाणिये ॥ १६३ ॥

अद्भुत रस अपूर्व वस्तु कोई देख्या सेती, मुख अरु नेनसे निरख विस्मान है । शुभा शुभ रूप जोय हर्ष विखवाद होय, तांके चित मांही, विकल्प उपजात है । जिन

दरसन जिनवांणी अदभुत रस, सुणिया भविक हर्ष चढ़त अगात है, हीरालाल कहे अदभुत रस पियां लहे, परम मुगती पथ सिद्ध गति पात है ॥ १६४ ॥

रुधिरको रस जहां रौद्र प्रणांम जाण, भ्रकूटि लिलाट नेत्र मुखको विकार है, पशुवध परिणांम वैरिको विनासे ठांम, असुर दानव पर वहे तरवार है, रुधिर प्रणांम सेती विर्नोकों विभंग करे गुरु जन, त्रिया संग गुढ़ अतिचार है, हीरालाल कहे एसे रुधिर प्रणांम सेती आठों ही करम घाती होवां जै जै कारहै ॥ १६५ ॥

त्रिवड़ा ते लज्जा रस संकासे ऊपत भयो, रखे कोई जाणलियो मम काज करियो, प्रथम संजोग समे रुधिर को वस्त्र होत, त्रिया भाव केरे काज आगे लेइ धरियो, तथा लज्जा आंण वहे पोता की सैथा को कहे, लोकिक की लाज लहै अकाज पर हरीयो । हीरालाल कहे रस पांचमा को अर्थ लहे, मुनी लाजे पाप सेती, भव दधि तरियो ॥ १६६ ॥

विभत्स को रस दुर्गंध से दूगंछा करे, तीह से प्रगट भयो वैराग रस भाव है, अशूची अशूध पुद्‌गल को भरीयो तन, श्रोतादिक द्वार सव अशूची की आव है, धन जो वैरागी जन जान लियो एहवो तन, धरियो वैरागे मन जिम जल नाव है, संजम को सार जो संसार को ऊतारे पार, हीरालाल कहे योही तिरण को दाव है ॥ १६७ ॥

पंच मियां भावो नित्य भावना, अशुचिने आश्रव संमर निर्जरा जाण, धर्म भावना चित धरमको लावना, लोगा लोग एक दश बोध दुहा द्वादश, जनम मरण मांही फेर नही आवना, हीरालाल कहे भव्य भावोरे भावना नित कर्म खपाई हित मुगति को पावना ॥ १७१ ॥

सुनो हो चतुर नर दुवादश चितधर भाखी श्री जिन-वर ताकि एह रीत है। प्रथम अनित्य तन धन ने जोबन पन, कारमो कुटुम्ब किम कीजे तहां प्रित है। मंदिर मकान वर द्वारादि अनित्य जान, खान पान वसनजो भूषण में नित है। कहे हीरालाल याही भावना भरत भाई, महिलों में केवल पाई गया ऊंचि गत है ॥ १७२ ॥

असरण को सरणो जिनंद मारग तणो, और नही कोइ तणो आगंम आधार है, मात पित मिल्या भाइ विवध प्रकार आई, आयुष्य के अंत नाही राखे तिणवार है, श्वांस खांस कुष्ट आदी देही में अनेक केई, सोलेस प्रकार राज रोग अधीकार है, संकट हरण भव दुःख को मेटण जण, हीरालाल इम चीत्यो अनाथी अणगार है ॥ १७३ ॥

जोरे जीव ज्ञान नैन विवध विचार वैण, संसार समुद्र फैन भान कैसो भलको, लख चोरासी मांही फंस्यो है अनंत जाही, ऊंच नीच भयो जैसो चपलाको झलको, बाप मरि पुत्र भयो पुत्रको पुत्र थयो, उलट पुलट जैसो

करी, अशुभ अधव साय करमा को सोत है। हिंसा भूंठ आदी बिसबोल कह्या आश्रव, तांको जो पर हरे कर्म मल्ल धोत है, कहे हीरालाल एसी समुद्र पाल महाऋषि, भाई है भावना जैसी पाया धर्म जोत है ॥ १७८ ॥

समकित आदि बिस बोलकों सुलट किया, संमर को ठांम जीयां कर्म को न्याव है। रोक दियो आश्रव संमर भावना कर पाप सब परहर संवुडा केवावे है। जैसे नीर नाव मांही रोक दियो आवे तांही, जैसे वासुदेव दल अरिकों नसावे है। हीरालाल कहे केशि मुनि वंद्या सुख लहे, चरण सरण गहे उंचिगत जावे है ॥ १७९ ॥

अकाम सकाम दोई निर्जराका भेद योही, त्रीयंच मनुष्य मांही सह्या दूःख भारी है, मन विना सहे दुःख परवस मरे भुख, तोही मिल जाय सुख सुरपद धारि है, अनसण आदि द्वादस भेदे तप करे, ज्ञान सहीत काज सरे जांकी रीती न्यारी है, कहे हीरालाल तप करके निहाल लाल, एसी करतुत जाल अर्जुन मारी है ॥१८०॥

लोक मांही एक जिनधर्म है जहाज जाण, तारण तिरण काज भव जीव दासता। चिंतामणी कामधेनु कल्पवृक्ष मांनु, तेनुं वंछित गुण्वारा देनु राखे शुद्ध आसता, जिनवर दिनकर मिथ्यात तिम्मर हर, केवल ज्ञान धर धर्म का भासता, हीरालाल कहे धर्म रुची जिने धर्म रूच्यो, दया पाली ताज्या कर्म पाया गुण मा...

नाटक को खलको हीरालाल कहे लीनो संजम मु
तुरत त्यागन कियो नासीका मो मलको ॥ १७

एकंत भावना एकाएकी है, चेतन मेरो को
देख ज्ञान चित धरणो, आवताही एका ए
एकाएकी, आगम गमन सो तो करमाको कर
संचित कर्म भोगत आपो आपी, सुख दुः
आपको उधरणो, कहे हीरालाल नमीराज भये
एकंत विराजी काज संजम को सरणो ॥ १७५

जैसे निश वास काज पंखि तरु रया
परिवार मिल्यो जीव बहू भांत है, कोइ तो नर्क
आगम गम, कोइ तीरीयंच कोई मनुष्य में जात
चैतन्य भय ताको पण रहे नेह, चय उपचय
के साथ है । हीरालाल कहे एसी मृगा पुत्र
जानी स्मरण ज्ञान यसी फेर नहीं डिगत है ॥

असुर्ची या तन सुची मानत मुरख जन.
खिण जाय खटको । जब तक देत साज त
काज, तान मान रग राग कर नृत लटको ।
भूम ढक्यो है अतर धर्म, विनाही चैतन्य कहे
पटको, कहे हीरालाल एसी सनंत कुमार चक्री
करी राज खट खडको ॥ १७७ ॥

तन है तलाव जामे आश्रव द्वार पंच,
संच जामे भारी होत है । मिथ्यात्व अव्रत प्रम

मांही आयुष्य पुरण करी, आलोइ निंदिय कर गया खेवा पार है। पेंतिस वर्ष लग पाल्यो है संजम भार, वहोत्तर वर्ष सव आयुष्य विचार है। कहे हीरालाल घणो कियो उपकार जाण, शिष्य को भणायो ज्ञान ध्यान का भंडार है॥ १८५॥

॥ अथ पाटावली ना सवैया ॥

श्री महावीर जी के पाट परंपरा जान, सुधर्माजी जंबुस्वामी आदि इम जाणिये। प्रभवाजी संभवस्वामी यसोभद्र संभुतविजे, भद्रवाहु स्थुलभद्र अष्टमा वखाणिये, आर्यगीर वलसिंह सोवनस्वामी वीरस्वामी, छंडिलाजी जीतधर आर्यसमंद आणीये, नीदलने नागहस्ति रेवंतजी सिहगणी, थंडिलाजी हेमवंत नागजीत मानीये॥ १८६॥

गोविंदस्वामी भूतदीन छोह गणी दुसगणी, देवढ गणी क्षमा श्रमण वीरभद्र गाइये, संकरभद्र यसोभद्र विरसेन विरसंग्रामसेन, जयसेन हरीसेन जयषेण लाइये, जगमाल देवरिख भीमरिख कर्मरिख, राजरिख देवसेन संकरसेन ध्याइये, लक्षमिलाभ रामरिख पद्मसुरी पेंतालीस, हरीसेन कूसलदत जवाण रिख ठाइये॥ १८७॥

जयसेण विजेरिख देवसेण सुरसेण, महासुर स्वामी महासेन धारि है। जयराज गजसेन मीश्रसेन

सात राजु मांही ऊर्ध लोक अधो, सात राजु मध्य ऐक राजद्वीप समुद्र असंख्य है, कल्प ग्री वेग पंच अनुत्त सुरवर, सिद्ध ठांम सब पर सरूप अलख है, व्यंतर भुवन पती सुख देख रह्या अती, सातों ही नरक गती महादुःख रंक है, खट द्रव्य रुप लोक लख्यो शिवराज जोग, हीरालाल कहे जिन वचन निशक है ॥ १८२ ॥

बोध वीज दुर्लभ सुलभ सुरनर रिद्ध, कारज सर्व सिद्ध आत्म स्वरूप है, शुद्ध ज्ञान समकित चारित्र है यथातथ्य मिथ्यात भरम चित तिमिर निरुप है, किजीये जतन पायो रतन अमोल हाथ, पर वचना के साथ पालिये परूप है। अठ्याणु सुत मति बोध दियो एक सुत, हीरालाल कहे सिद्ध स्वरुप निरुप है ॥ १८३ ॥

॥ गुरु महाराज श्री रत्नचंद्रजी के गुणग्राम ॥

संवत आठारेसों अठोत्तर साल मांही, माघ विदि सातमी को वार मंगलवार है, कनजेड़ो गांम ठांम पिता दयाचंदजी नाम, तांके पुत्र अभिराम रत्नचंदजी अवतार है। उगणिसों चवदा में जेष्ठ सुदी पंचमी को, सर वाण्या गांम मांही लीधो संजम भार है। साल्या ने वनोई ठांई मग मिल्या मुख शेठ, जिनधर्म सांचो जांणी कीधो जय २ कार है ॥ १८४ ॥ संवत उगणीसो पचास के साल मांही, द्वितीया असाड़ विदी बीज शुक्रवार है, रजनि के काल

मांही आयुष्य पुरण करी, आलोइ निंदिय कर गया, खेवा पार है। पेंतिस वर्ष लग पाल्यो है संजम भार, वहोत्तर वर्ष सब आयुष्य विचार है। कहे हीरालाल घणों कियो उपकार जाण, शिष्य को भणायो ज्ञान ध्यान का भंडार है ॥ १८५ ॥

॥ अथ पाटावली ना सवैया ॥

श्री महावीर जी के पाट परंपरा जान, सुधर्माजी जंबुस्वामी आदि इम जाणिये। प्रभवाजी संभवस्वामी यसोभद्र संभुतविजे, भद्रबाहु स्थुलभद्र अष्टमा बखांणिये, आर्यगीर वलसिंह सोवनस्वामी वीरस्वामी, छंडिलाजी जीतधर आर्यसमंद आणीये, नीद्लने नागहस्ति रेवंतजी सिहगणी, थंडिलाजी हेमवंत नागजीत मानीये॥ १८६ ॥

गोविंदस्वामी भूतदीन छोह गणी दुसगणी, देवढ गणी त्तमा श्रमण वीरभद्र गाइये, संकरभद्र यसोभद्र विरसेन विरसंग्रामसेन, जयसेन हरीसेन जयषेण लाइये, जगमाल देवरिख भीमरिख कर्मरिख, राजरिख देवसेन संकरसेन ध्याइये, लक्षमिलाभ रामरिख पद्मसुरी पेंतालीस, हरीसेन कूसलदत अमाणि रिख ठाइये। १८७ ॥

जयसेण विजेरिख देवसेण सुरसेण, महासुरसेन स्वामी महासेन धारि है। जयराज गजसेन मीश्रसेन विजे·

सिंह, शिवराज लालजीने ज्ञानजीरिख भारि है। भाणो जी रूपजीरिख विजेराज तेजरिख, कुंवरजी स्वामी के पीछे हरिजी विचारी है, गोधोजी स्वामी गुणवंत परस रामजी पुनवंत, एते सब पाट जाकी गांउ वली हारी है ॥ १८८ ॥

लोकष्णजी म्हारामजी हूवा जग अति नामी, दोलत-रामजी स्वामी गणी गुण धरणं, लालचंदजी मोटा स्वामी हुकमीचंदजी हुवानामी, शिवलालजी शिवगामी उदेचंदजी उदय करणं, चौथमलजी गुणवान श्री लालजी वर्तमान अठोतर पाट इम धरो नित चरणं। कहे हीरालाल गुरु मेरे जवाहरलाल, जिन धर्म मति पाल पारके उतरणं ॥ १८९ ॥

॥ सनत कुमार चक्रवर्ति ॥

सुरलोक मांही सुरपति है विराजमांन, दियो है अवधिज्ञान येसी वात जाणी है, जैसो रूप सनत कुंमार चक्रवर्ति जाण, तेसो रूप जगमांही और नी वखाण्यों है, दोय देवता के मन्न श्रद्धा न वैठी छिन्न, आई नहीं आय या तो इन्द्र तणी वांणी है, कहे हीरालाल देव ततार्खिण आया चाल, जम्बु दीप है रसाल भरत वखां-णी है ॥ १९० ॥

वृद्ध वनाई देह जुमी ने जजरी वेह, पनिया की पोट मोट शीर के उपर है, आया ठट्ट तांही चाल निरख्यों

रूप रसाल, गर्भ भरायो भूप सुणके बड़ाइ है, हिवड़ा सुं देखत हो सिंनगार करण देवो, फेर थे जोइजो जदी बैठों सभामाही है, सोलाही सिंणगार सजी सभा में विराज-मान, कहे हीरालाल अब ब्राह्मण बुलाईये ॥ १९१ ॥

देखने हलायो शीश कहे पृथ्वी कोई, रही अधूरी ओर रही अणी मांही है, जैसो रूप पेला होतो तेसो अब नांही रह्यो, गर्भ भराणी काया छिन्न पलटाई है, सुणो हो रंगीला लाल करलो हियामे ख्याल, पिकदानी पीकडाल देखो क्यों नी भाई है, सुणके वचन घबरानो नरपति तन, कहे हीरालाल मन इस विध आइ है ॥१९२॥

तुरत तंबोल नांखी देखे तव नरपति, कलबल हुई काया अशूद्ध अपार है। अशूच भावना भाइ मन में वैराग लाइ, दियो सब छिटकाइ राज ने भंडार है, खट खंड आंण पुर सोलह शेष-होता शूर, चौसठ हजार अंते वर परवार है, सात से वरस तांही रोग रह्यो तन सांही, केवल ज्ञान पाई मुक्ति मंझार है, कहे हीरालाल देखो गर्भ कीयां को ख्याल, येसे जान अभीमांन मत करो नर नारी है ॥ १९३ ॥

॥ चतुर-गति-गमन्न ॥

कौन २ गति मांही भटकत भवमाही, जनम मरण तांही पार नहीं पायो है, सातोंही नरक तणां न्यारा २

कीनी, आज अनोज अंकोज हारे हरि, या अँगिया जुनइ तुम छीनी. मैंतो सदा वृज में मही बेचती दांन त्रिषे दमरी नही दीनी, नंद ददाजी कों पुछही देखो कवि तुम ग्वाल की गगरी लीनी, काहेकों पुछही देखो ददाजी कों छांड़ गुमान ग्वाल हटीली ॥ १९७ ॥

या वृजमें सब जानत है येक नंदकालाल दधिको जो दांनी इन्द्र को लोक महेश के लोकमें आंनहमारी, को नही मांनी, वैरही वैर कहे वृज नागरी, जाती है जोबन जोर जोरानी ॥ १९८ ॥

येतो कहा अभिमांन धरो वात बड़ी २ मोइसें तांनों, मात तिहारी सदा मही बेचत, सांची कहत बुरोजी नमानों, काहे को गाय चरावतहो हरी, तांते कहावत घोषको रांनों, जात अहिरकी एक सबहै हरि, को दश गांयनको अधिकांनों ॥ १९९ ॥

॥ कृष्ण ॥

वात विचार के बोलरी भांमनी, एकही जातमें भांत घणी है, नांही तरु सब चंदन के सखी, ठौरही ठौर कहां लाल मणी है, पांड़व के पाहर बहुत है आलीरी मेरु विना नाकाहुं हेम कणी है, गोप बड़े २ गोकूल में, नंदराय विना कहो कोंन धणी है ॥ २०० ॥

थूंतो वेठो रेंवे छांयां भाड़की। दोड़यो २ आवे नेड़ माके धुं लाग्यो हे केडे। गरीवांने छेड़े थारी फूटी हीया नाड़ की, इच्छा वेतो मांन कांन दूध न दही को दांन, दांगा थने आवे जद मोसम असाड़की, खुबचंद कहै कानों, देखत ही रहगयो जवाव देइने गड, गुजरी मेवाड़ की ॥ २०४ ॥

॥ पाप्यों का तिरणा ॥

हिंसाके करैया मुख झूंठ के वोलैया, पर धनके हरैया कूर्णा ने जांके अंग है, रेणके खवैया मधु पांन के पिवैया, कूड़ी शाक के देवैया कठोर जांका हिया है, नर्कके जवैया पर नारके रमैया, कन्द मुलके भक्खईया ज्यांने और पाप किया है, तेही तिरजात छिन्न एक में विनोदी लाल, जेहे नवकार मंत्र मन बच्छ ध्याइये ॥ २०५ ॥

जगमें श्री जीवन जड़ी पंच नवकार मंत्र, वार २ जपिये, खिण न भुलाइये, सोवत उठत सुख जोवत परदेश जाय, रणमें भुजंग सिंहं देख न डराइये, संकट न पड़े भुत वित कोइ नही छले, अग्नि मांही नही जले भव सागर तिर जाइये, तांकों कहां दुर सुर कहत है विनोदी लाल, जेहे नवकार मंत्र, मन वच ध्याइये ॥ २०६ ॥

॥ धर्म हीन मनुष्य ॥

विगरी विगरी किनकी विगरी, इनकी विगरी जिने ज्ञान

॥ धर्म वीर ॥

रंगरे रंगरे किनको रंगरे उनको रंगरे, ज्याने जगमें आय तजी ममता, समता कर बैठ रह्यो, हरि के संगरे काम क्रोध तजी दूखियां सुख ज्ञान लीयो, अनवे जगरे निजतंत विचार भज्यो भवतारण, मोह निंद निवार, उव्यो जगरे, हलके मलके झलके निकेछु, मुनिराज कहै, उनको रंगरे उनको रंगरे ॥ २१० ॥

॥ मुढ मनुष्य ॥

धृगरे धृगरे किनको धृगरे, धनपाय करि धर्म नांही करी मुढ, पन्थ तज्यो सुगति मगरे, कछु देवगुरु धर्म ठीक नहीं, गुरु ज्ञान गुणी की सिख नहीं धरतो पगरे, रहे रंगराता करमंन माता, लेहे लीन लता कुगुरु संगरे, फिर सात व्यसन को संग करे मुनिराज कहे, तिनको धृगरे विनको धृगरे ॥ २११ ॥

धुररे धुररे किनको धुररे, विनको धुररे, सुध साधको देखके द्वेष करे नर, मुर्ख न्यात्र नही नररे, कोइ बार हजार विचार कहै, अब बुझ न लहे भवनी हररे, चित शूद्ध नहीं बुद्ध बुज्झ नहीं, दिल्ल हुज्झ दिखावत युं खररे, फिर गंडक ज्यु घुर्राट करे, मुनिराज कहे विनको धुररे विनको धुररे ॥ २१२ ॥

कषाय, कहो कैसे केड़ो छुटे, वचन रूप यो शैल, वृद्ध के साले, कहै जैनि जिनदास, जरा में जोरन चाले ॥ २१७ ॥

डगडग हाले नाड़ पग दोई लड़ थड़ करता, मुख में पावे नहीं दांत, आँख सें आँसु झरता। अणगमतो अन्न कठण भुंगड़ा आगे मैले, कहे जैनी जिनदास डोकरो पाछो ठेल ॥ २१८ ॥

उठ्यो जावे नांय, चले तो तंगाड़ि आवे, घरमें खमें ठंड, धूप में कौन ले जावे, करे घणी अडांट, बात काने नी धारे, कहै जैनी जिनदास, जरासुं काज नी सारे ॥२१९॥

मन में आवे रीस, जोर अब कैसे चाले, बेटा पोता कूटम्ब देख सब सामां बोले, नेड़ा आवे नांय, डोकरो कांम जो कैसी, कहै जैनि जिन दास, जरा आयां दूःख देसी ॥ २२० ॥

बेटा बोले नांय सगा निज बापसुं, बिपत भोगवे जिव पुर्वला पापसुं ॥ सुख दूःख भुग्त्यां विनां, कहो किंम छुटे, कहै जैनि जिन दास, जरा आयां तन लुटे ॥ २२१ ॥

विल २ मतकर बाप, मौन कर वेठो रहिजे, म्हें लाजा लोगां मांय दया हमारि लीजे, वर्ष लीया अब साठ, लाज कहाँ गइ है तेरि ॥ कहै जैनि जिन दास, जराने काया घेरी ॥ २२२ ॥

न ने वसकर राख ले तिणसे मिल्सी आय, कण वाराने
ण मिले मण वारो मणखाय । २२७ ॥

॥ पुर्व संचित कर्म ॥

जिस्म घर मांदो पुत वैद कफ वाय बतावे, ज्यो
पुछे कोई जोतषी जद कोई ग्रह नतावे, भोपा पुछयां भुत
कहे वाण विजासण कीदो, जंत्र मंत्रना जांग कहै कोई
कामण कीदो, मांदो ऐक नव २ मता मुलन जाणे मर्म,
साधु कहेरे प्राणीया थारा पुर्व बांध्या कर्म ॥ २२८ ॥

॥ भागहीन मनुष्य ॥

कामणी कंथ चल्यो परदेश, गयो करनाल उज्जैन को
ध्यायो, गोड़ सुं गोड़ वड़ी गुजरात, गयो मुलतान से
लाहोर आयो, धातुर वाद अनेक कीया वली, जहाज चढी
नर वंदर ध्यायो, डावसुं सहस उपात्र कीया पण, भाग
विना एक कोड़ी न लायो ॥ २२९ ॥

॥ ठग के ठग पाहुणो ॥

जीमत देखी कटोरी अमोलक छीके धरी जलसुं भर
पागे, वारी पीयो ने खोज भरी, तिग जाय धरी जलमें
अनुरागे, जाग धणी पग खोज लियो पुनी, जीमत प
कहीयो ल्ड सागे, लाल कहे कोटी उपाव करो नही
चले ठगको ठग आगे ॥ २३० ॥

ान ने वसकर राख ले तिणसे मिल्सी आय, कण वाराने
हण मिले मण वारो मणखाय । २२७ ॥

॥ पुर्व संचित कर्म ॥

जिस्म घर मांदो पुत वैद कफ वाय बतावे, ज्यो पुछे कोई जोतषी जद कोई ग्रह नतावे, भोपा पुछयां भुत कहे वाण विजासण कीदो, जन्त्र मंत्रना जांग कहै कोई कांमण कीदो, मांदो ऐक नव २ मता मुलन जाणे मर्म, साधु कहेरे माणीया थारा पुर्व बांध्या कर्म ॥ २२८ ॥

॥ भागहीन मनुष्य ॥

कामणी कंथ चल्यो परदेश, गयो करनाल उज्जैन को ध्यायो, गोड़ सुं गोड़ वड़ी गुजरात, गयो मुलतान सें लाहोर आयो, धातुर वाद अनेक कीया वली, जहाज चढी नर वंदर ध्यायो, डावसुं सहस उपाव कीया पण, भाग विना एक कोड़ी न लायो ॥ २२९ ॥

॥ ठग के ठग पाहुणो ॥

जीमत देखी कटोरी अमोलक छीके धरी जलसुं भर पागे, वारी पीयो ने खोज भरी, तिण जाय धरी जलमें अनुरागे, जाग धणी पग खोज लियो पुनी, जीमत पांण कहीयो लइ सागे, लाल कहे कोटी उपाव करो नही जोर चले ठगको ठग आगे ॥ २३० ॥

न ने वसकर राख ले तिणसें मिलसी आय, कण वाराने
ण मिले मण वारो मणखाय । २२७ ॥

॥ पुर्व संचित कर्म ॥

जिस्न घर मांदो पुत वैद कफ वाय बतावे, ज्यो
पुछे कोई जोतषी जद कोई ग्रह बतावे, भोपा पुछयां भुत
कहे वाण विजासण कीदो, जंत्र मंत्रना जांग कहे कोई
कांमण कीदो, मांदो ऐक नव २ मता मुलन जाणे मर्म,
साधु कहे रे प्राणीया थारा पुर्व बांध्या कर्म ॥ २२८ ॥

॥ भागहीन मनुष्य ॥

कामणी कंथ चल्यो परदेश, गयो करनाल उज्जैन को
ध्यायो, गोड़ सुं गोड़ बड़ी गुजरात, गयो मुलतान से
लाहोर आयो, धातुर वाद अनेक कीया वली, जहाज चढी
नर बंदर ध्यायो, डावसुं सहस उपाव कीया पण, भाग
विना एक कोड़ी न लायो ॥ २२९ ॥

॥ ठग के ठग पाहुणो ॥

जीमत देखी कटोरी अमोलक छीके धरी जलसुं भर
पागे, वारी पीयो ने खोज भरी, तिण जाय धरी जलमें
अनुरागे, जाग धणी पग खोज लियो पुनी, जीमत पांण
कहीयो ल्इ सागे, लाल कहे कोटी उपाव करो नही जोर
चले ठगको ठग आगे ॥ २३० ॥

॥ लोभी वणिक ॥

एक समे मेरे पितुजी पधारत, बडे ही दीपक और रेन अंधेरी. कोठेसी कोनर गोन्दई तत. आंगन बिचमें होगइ ढेरी. गरज के काज दुमेरी लागत काग करी न त्राजु फेरी, दाग पडे ज्युं तोलगे महाजन तलठ तेरी न जुवार ही तेरी ॥ २३१ ॥

॥ एक २ से द्वेषता ॥

कुंवर को देखी जैसे रोष करि श्वान, रोष करे निर्धन निचारकी धन्न वंत कुं, रैनके जगैया को विलोकी चोर रोष करे, मिथ्या मति रोष करे सुनत सिद्धांत को, हंसको विलोकी जैसे काग मन रोष करे, अभिमानी रोष करे देखत महंत को, सुखवि को देखी कुखवि मन रोष करे, ऐसे मन रोष करे दुष्ट देखी संतन को । २३२ ॥

॥ सुमित्रता ॥

क्षीर की संगत नीर वस्यो जब, देह गुण आप समान कर्यो है, आंच लगी उस क्षीरन को, आप जल्यो पग जल्न न दीयो है, नही देखत नीर डर्यो पड्यो पग आन पड्यो है, अली हरि जल्है वेग मिल्यो प्यारे, मित तो कीयो ऐसो ही कियो है ॥ २३३ ॥

॥ धन्नसंचे—तांबिसर्ण ॥

कंचन के आसन और वासन सव कंचन के, कंचन के पिलंग इनामत ही धरे रहेगे, हाथी हुलसानन में घोड़े घुड सालंन में, कपड़े जांम दांनि में, घड़िवंद ही पड़े रहेंगे, बेटा और बेटी दोलत का कछु पार नाही, जवाहरात के डब्बे के ताले ही जड़े रहेंगे, नेकी और बदी संग चलेगी, मनि रांम कुटम्ब के लोग एक दीन्न रोते ही रहेंगे ॥ २३४ ॥

॥ रात्रि भोजन ॥

आंधो भोजन रातको करे अधर्मि जीव, ओछा जीतव कारणे देवे नर्क में नीव, देवे नर्क में नीव रीव करसी भव२ में, पचसी कुंभी मांय बले जों ठूंठा दवमें. परमां धांमी देवता घणी उड़ावे झीक, रत्न कहै तज मांनवी सुण सत गुरु की सीख ॥ २३५ ॥

कीड़ी कमेडी कागला रात चुगण नहीं जाय, मन-खां देही पायने रात पड्यां किम खाय, रात पड्यां किम खाय जाय मार्या त्रुप प्राणी, कीड़ पतंग्या कुंथवा पड़े भांणां में आंणी, लट्ट गजाई सुरसली इली अंड़ समेत, रत्न कहे ध्रग तेहने खाय कर २ हेत ॥ २३६ ॥

जलोद्र उत्पन्न हुवे जुंके पड़ियां पेट, मुखमें जाय मस्तका वमण करावे नेट वमण करावे नेट, ढेट तज ढेटाई, बाल-करे सुरभंग कोड मकडी ध्याई, कपाली सड २ मरे

त्रिछु तरो समंद, रत्न कहे तज मांनवी रात्रि भोजन अंग
॥ २३७ ॥

रात्रि भोजन दोष बहु देखो वेद पुरान, एक वर्ष का त्याग मे छः मासी फल जांण, आंगनर मन में गमता, पावे अम्मर विमान मिले सुख मन गमता, रतनचंद भन मांनवी सुख २ दे छिटकाय, अल्प दिना के मांयने अमरा पदमें जाय ॥ २३८ ॥

करतां भोजन रातको न्यात जात परवार, केरी ज्यूं सुख से लियां सुगातणों हे आहार २, छांट पड़ी शिर ऊपर गर्नी गंध मरम आहार, किड्यां खायो ज्यां करे च्याटको देना चमाकियो सुख दियां कुमल्हाय, रत्न कहे छः मागनी बुद्धि भ्रष्ट होजाय ॥ २३९ ॥

होवे गुंगो ने बागलो पग ऊंचा शीर हेठ, चांम चटी ज्यूं च्याटकारतां ज्यों रात भरता पेट, रात भरता पेट भटनर मनकी ममता, मांस आहारी ज्यो कह्यो जेनर रात चरता, रात्रि भोजन त्यागदे, धन्न जी के नर नार, रत्न कहे रात्रि चरे ते नर पशु गंवार ॥ २४० ॥

अन्न मांस सम दाखियो न्होट समप जल धार, सूर्य अस्त हुवा पछे ज्यों खावे नर नार, ज्योंखावे नर नार या शिर मर्त्री वाणी मारकंड पुरांण में तांही में इण विध आंणी, करे हुन्दा मांन्बी ने वह सूतक होजाय, रत्न कहे सूर्यमनि

हारो, कांम क्रोधको भंम चले तिहां लोभको नीर वहे अति भारो, तिरहुं तिर जांनु नहीं संग नही कोई देत सहारो, चुकछे मेरी माफ करो मोंह, एसे अपंग कों पार उतारो ॥ २४८ ॥

॥ पोपांबाई को राज ॥

युक्ति उपाई एसी उम्मर गंमाइ, किनी न कमाई कांम भयो न भलाई को, अवधि जब आई तब कौन हे सहाई भाई, राई भर कछु न वसाइ ठुकराई को, आइ पहुंचाइ पिछ ताइ माइ थाइ जाइ, छुट्यो तातो किशन सगाई को इहांतो सधाही धुंम धांमही मचाई पण, उहातो नही छे भाई राज पोपांबाईको ॥ २४९ ॥

करत परपंच इण पंचनके वस पड़्यो, परदारा रम्म भय नहीं आणत बुराई को, पर धन्न हरे पर जीवन की करे घात, मद्य मांस खाय लव लेस न भलाई को, होयगा हिसाब जब मुख सें न आवे जाब सुन्दर कहत लेखो लेगा राइ राई को, इहां तो करे विलास जम्म की न तोकों त्रास, उहांतो नही छे कछु, राज पोपांबाई को ॥ २५० ॥

॥ मनुष्य की—भूल ॥

और कोई चूके तो नृप पे होत न्याय, नृपही चूके तो कहो कहां जाइये, और कोई भूले तो पंडित पे पडे न्याय,

हारो, कांम क्रोधको भंम चले तिहां लोभको नीर वहे अति भारो, तिरहुं तिर जांनु नहीं संग नही कोई देत सहारो, चुकछे मेरी माफ करो मोंह, एसे अपंग कों पार उतारो ॥ २४८ ॥

॥ पोपांबाई को राज ॥

युक्ति उपाई एसी उम्मर गंमाइ, किनी न कमाई कांम भयो न भलाई को, अवधि जब आई तब कौन हे सहाई भाइ, राई भर कछु न बसाइ ठुकराई को, आइ पहुंचाइ पिछ ताइ माइ बाइ जाइ, छुटयो तातो किशन सगाई को इहांतो सबाही धुंम धांमही मचाई पण, उहातो नही छे भाई राज पोपांबाईको ॥ २४९ ॥

करत परपंच इण पंचनके वस पड्यो, परदारा रम्म भय नहीं आणत बुराई को, पर धन्न हरे पर जीवन की करे घात, मद्य मांस खाय लव लेस न भलाई को, होवेगा हिसाब जब मुख सें न आवे जाब सुन्दर कहत लेखो लेगा राइ राई को, इहां तो करे विलास जम्म की न तोकों त्रास, उहांतो नही छे कछु, राज पोपांबाई को ॥ २५० ॥

॥ मनुष्य की—भूल ॥

और कोई चूके तो नृप पे होत न्याय, नृपही चूके तो कहो कहां जाइये, और कोई भूले तो पंडित पे पढे न्याय,

॥ बिन छाण्यों जल ॥

विंन छाण्यां जलमें पडे उठ सवेरे जाय, जीव असंख्या मारने पिछे रोटी खाय, पिछे रोटी खाय पशू जिंम कैसे भुले, कर जीवां संगहार धर्म कर मनमें फुले, रांम चरन वे मांनवी भैसा पदको जाय, अण छांण्या जलमें पड़े उठ सवेर जाय ॥ २४५ ॥

॥ ताड़ वृक्ष ॥

अरे ताड़ लम्बो घणों उंचो गयो आकाश, गैरी छांयां जाणके में आयो तुझ पास, में आयो तुझ पास कुंप में छांयां डारी, नहीं साता को कांम देखली शोभा थारी, इण अटवी के मांयने तुझ बिन चोखो घास, अरे ताड लम्बो घणों उंचो गयो आकास ॥ २४६ ॥

॥ मूर्ख मनुष्य ॥

अगर चंदन काट करी सुर वृक्ष उखाड बंबुल कों बोवे, सोवन थाल भरे रज रैत, सुधा रस सें कर पांव ही धोवे, हस्ती महांमद मस्त मनोहर, भार वही करतांय डबोवे, धर्म को छोड अधर्म करे, जस्स राज यु देह अकारज खोवे ॥ २४७ ॥

॥ संसार समुद्र ॥

आन पडी गहरा जलमें ज्यां नाव नही कोइ खेवण

कहै गिरधर कविराय धर्मको रह्यो न पायो, मार्यो जात गरीब राज कलियुग को छायो ॥ २५४ ॥

॥ भाग्यहीन मनुष्य ॥

कोडी मिले न भाग बिन हुन्नर करो हजार, को नर पावे सायबी बिना लेख करतार, बिना लेख करतार सात सागर फिरआवे, भटकत मरे बेकाज गांठ की लाज गंमावे, कहै दीन दर्वेस चहुं दिसि आवे दौड़ी, हुन्नर करो हजार भाग बिन मिले न कोडी ॥ २५५ ॥

॥ बुद्धिहीन मनुष्य ॥

कंथ बिन कांमनी वसंत ऋतु कोकिल बिना, गज बिना दंत, जैसे पंखी बिना पर है, दीपक बिना मंदिर महिप मजलिस बिना, मन्न बिना दांन जैसे सर बिना धड़ है, मोती बिना पांणी, जैसे सत्य बिना वाणी, जैसे आंख बिना ज्योत, जैसे कमल बिना सर है, भुजा बिना बल, ज्युं कवित रस चित बिना, गति बिना हंस, जैसे बुद्धि बिना नर है ॥ २५६ ॥

॥ बेढंगी फूहड़ औरत ॥

करे धांन कुधांन' पिसती दलियो पीसे, चाले धम-ड़क चाल, दीसती भुंडी दीसे भरचा न धोवे हाथ, क कम नहीं बांधे, रहे उघाडो पेट, धंकडे गेटा

पंडितही भूलें तो कौन समझाइये, और कोई डूबेंतो नावसें तिराईलेत नाव ही डूबेतो काहूसे तिराइये इंधन में लगें आग पांणीसें बुझाइ जात, पांणी में लगे आग काहू से बुझाइयें ॥ २५१ ॥

॥ हाथ में हीरा आया ॥

कहे दास सग्रांम हाथ में हीरा आया, बाय दिया वेंसुर घाल गोपण में वाया, ओग दिया सब फेरु लारे रह्यो ज्यो एक, जौहरी मिल कीमत करी, जद रोयो माथो टेक येडातो घणा गंमाया, कहे दास सग्रांम, हाथ में हीरा आया ॥ २५२ ॥

॥ मन्न चंचल ॥

कबहुंक मन्न सोंच पड़्यो कबहुंक वंछित रूप अपारा, कबहुंक दोड़त भोगन में कबहुंक जोगी की रीत सॅभारा, कबहुंक थिर्ता भूतरहे कबहुंक छिननमे कोश हजारां, सुरता नर ऐम विचार करो प्यारे, मन्नकी लहर का, अंतन पारा ॥ २५३ ॥

॥ कलियुग ॥

कलियुग तेरा राज में भयो अँधेरो घोर, शोर कियो कोतवाल ने उलटो दंडे चोर, उलटो दंडे चोर, जोर कोतवालने चाले क़ाजी साहब वजीर, लॉच ले सॉच न बोले,

कहै गिरधर कविराय धर्मको रह्यो न पायो, मारयो जात गरीब राज कलियुग को छायो ॥ २५४ ॥

॥ भाग्यहीन मनुष्य ॥

कोड़ी मिले न भाग विन हुन्नर करो हजार, को नर पावे सायवी बिना लेख करतार, बिना लेख करतार सात सागर फिरआवे, भटकत मरे बेकाज गांठ की लाज गंमावे, कहै दीन दर्वेस चहुं दिसि आवे दौड़ी, हुन्नर करो हजार भाग बिन मिले न कोड़ी ॥ २५५ ॥

॥ बुद्धिहीन मनुष्य ॥

कंथ बिन कांमनी वसंत ऋतु कौकिल बिना, गज विना दंत, जैसे पंखी बिना पर है, दीपक बिना मंदिर महिप मंजलिस बिना, मन्न विना दांन जैसे सर बिना धड़ है, मोती विना पांणी, जैसे सत्य बिना वाणी, जैसे आंख बिना ज्योत, जैसे कमल बिना सर है, भुजा विना वल, जुं कवित रस चिंत विना, गति विना हंस, जैसे बुद्धि बिना नर है ॥ २५६ ॥

॥ बेढंगी फूहड़ औरत ॥

करे धांन कुधांन' पिसती दलियो पीसे, चाले धमड़क चाल, दीसती भूंडी दीसे भरया न धोवे हाथ, कांचवे कस नहीं वांधे, रहे उघाड़ो पेट, थूंकदे रोटी सांधे,

रहे लटूरया लटकता, शीश न ढांके पल्लो, वैताल कहै विक्रम सुनो, ऐसी रांड़ से, रंड़वो भलो ॥ २५७ ॥

॥ काल चक्कर ॥

काल हसे सुन हो नर मूरख, मूढ़ अजाण नर हो अंध अज्ञानी, कंप रहे मुझसे देव दांनव, भूंचर खेचर कंपत और विमानी, तीनहुं लोक में आंण फिरे, मुझको तूं भूलरया मध पांनी, कोठी कील्ले गड़ मांही लुख्यो पण । छोड़त नांही चल्यो किण ठांनी ॥ २५८ ॥

॥ सत्य वचन में सुरा ॥

कहना वचन किसी सिंह को, गजा शिर ठोकर मारे, कहना किसी नृप को, ते नजर सें काम सुधारे, कहना किसी साह को, सो देख दालिद्र दूरो करे, पण क्या कहना कंगाल कों, थूंक उछाल कपड़ा भरे ॥ २५९ ॥

॥ गर्भ में कोल कर आयो ॥

कोल बोल कर आवियो, पायो मनखां देहे, प्रभु नांम तो भूल गयो, धन्न कामन सें नेह, धन कामंन से नेहे धर्म से रहे अपूठो, देवे सखरी शीख, तांही पे पड़े ज्युं टूटो, अरे अज्ञानी जीवड़ा, गयो नर्क दुःख भूल, फेर जासी बापड़ा, थारां वहीज होसी शूल ॥ २६० ॥

॥ मालिकने कैसें भुलां ॥

कहे दास सग्राम धणी ने भुला किंकर, भुल्यां भुंड़ी होय माजनों जावे विखर, विखर जावे माजनों होय गधाकी जोंण, टांचि मोरां उपरे उपर लादे गोंण. उपर लादे गोंण धणी ने भुल्यां जिकर, कहे दास सगरांम धणी ने भुलां किंकर ॥ २६१ ॥

कहे दास सग्राम थें नमों नारायण सामी, क्यों कर देस्यों जवाव पुछसी अंतर जांमी, अंतर जांमी, पुछसी गुनां करो थे च्यार, मद माटी दारु भखो तको पराई नार, तको पराई नार करो थे एवि खांमि, क्यों कर देसो जाव पुछसी अंतरजांमि ॥ २६२ ॥

॥ जलकी यतना ॥

कपडो पेरे साठ गज जलको छांणे नांय, पिवे जीव असंख्या घूंट २ के मांय घूट २ के मांय, कुबद्ध या थने काणि सीखाइ, जीव असंख्या मारतो दिसतो वड़ो कसाइ, रामचरण वे मांनवी भेंसा पदको जाय, कपड़ो पेरे साठ गज जलको छांणे नांय ॥ २६३ ॥

जांमा पाग पछेवडी नवा करावे और, जल छांणन ने नातर्यो करदे सांदा जोड़, करदे सांदा जोड़ ताशमें तारा आके, छोटा मोटा जीव कहो किस विध राखे, रांम चरण वे मांनवी मनुष्य नहीं है ढौर, जामा पाग पछेवड़ी नवा करावे और ॥ २६४ ॥

॥ श्रेष्ट धारण करना ॥

गंग प्रवाहको नीर पियो तव कूंपको नीर पियो न पियो है, अब हिर्दे प्रभु नांम बस्यो तब और को नांम लियो न लियो है, पुन्य संजोग सुपात्र मिले तब कुपात्र को दांन दियो न दियो है, कवि गंग कहे सुण शा अकबर मुर्ख मित्र कियो न कीयो है ॥ २६५ ॥

॥ लंपटी नर ॥

घर नारी विचारी उघाड़ी फिरे परनारके साड़ी रंगी ली रंगावे, नारी के हाथमें चुड़ी नहीं पर नारी के फुटरा गेणां घड़ावे, धर्म के तांहीतों पाई नही व्यभिचारी मे सारी कंमाइ लगावे, दाम भी दे बद नांम भी हो पर नारी के खातिर प्राण ही गंमावे ॥ २६६ ॥

॥ चोर की दशा ॥

चोर बंध्यो इम चिंतवे ज्योर छुटू ऐक वार, अबके चौरी ना करूं लाऊं इंधन भार, लाऊं इंधन भार दांन हातासुं देसुं, सवर करि घर मांय मोजमें बैठो रेसुं, छुटयो ने विसरी गयो फिर भी वही विचार, फेर जासी बापडा थारे वांहीज पडसी मार ॥ २६७ ॥

॥ च्यार दिनकी चान्दनी ॥

च्यार दिनाको पांवणो जोवन जाणों एह, डूंगर

नाळा सारखो छिन्न में देवे छेय, छिन्न में देवे छेय देखतां जोवन जावे, दिन्न २ छिजे देह बुढापो नेड़ो आवे, जरा न आइ जब लगे तबलग हो हुंशियार. खरची बांधो धर्म की जोवन है दिन्न च्यार ॥ २६८ ॥

॥ संयम की अथिरता ॥

छांडके संसार छार छारके विहार करे, मायाकों निवार फ़िर माया दिल धारि है, पीछेही को धोयो कीच फेर किच बिच फंसे, दोनों पंथखोया बात बनीसो विगारी है, साधु कहे लाय नारी निरखत लुभाय रह्यो, कंचन की करे चाय प्रभुता पसारीहै, लीनी है फकीरी फिर अमीरीकी आश करे, कायकों धिक्कार तेने पगड़ी उतारी है ॥२६९॥

॥ आसा तृष्णा ॥

जो दस विस पच्चास भये सत होत हजार तो लख मंगगी, कोटी अड़ब खड़न्न भये, पृथ्वी पत्ती होने की चाय जगेगी, स्वर्ग पाताल को राज मिल्यो, तृष्णा अधिक अति आग लगेगी, सुन्दर एक संतोष विना नर, तेरीतो आग कबहुं न बुझेगी ॥ २७० ॥

तृष्णा आग अपार तृष्णा जग भीख मंगावे, तृष्णा हत्याचार तृष्णा सब ज्ञान भुलावे, तृष्णा करे फजित तृष्णा ले कैद करावे, तृष्णा कटावे शिश, तृष्णा नर्क ले

जावे, मात पित अरु सज्जनों तृष्णा गीने ऐक, ज्ञान सदा समता धरो प्रगटे गुण अनेक ॥ २७० ॥

॥ भाग्य साली मनुष्य नही छीपे ॥

तारा की जोत सें चन्द छिपे नहीं सुरज छिपे नहीं बादल छायां, चंचल नारीका नेण छिपे नही कपुत छिपे नहीं बात बणायां, रण चड्या रजपुत छिपे नहीं दातार छिपे नहीं घर मंगत आयां, जोगी का भेष अनेक करो पण कर्म छिपे नही बभुत लगायां ॥ २७१ ॥

॥ तजरे गांव गंवारन्न को ॥

तजरे मन गांव गंवारन्न को जियां हेत प्रीत नहीं हरकी, चंचल चोर कठोर वसे परवाहा नहीं प्रमेश्वर की, परी ताप करे पिंड़ पाप भरे कथा न सुने ज्ञानी नर की, परमानंद कहे, फिटकार पड़ो जिहां लाज मृजाद नहीं गुरु की ॥ २७२ ॥

॥ मन्न का विचार ॥

तुं कछु और विचारत है नर तेरो विचार धर्यो ही रहेगो, क्रोड़ उपाय करो धन के हित भाग्य लिख्यो जितनों हीं लहेगो, आज के काल घड़ि पल में तुझ काल अचानक आय गहेगो, राम भज्यो न कियो कछु सुकृत, सुन्दर यों हीं पिछताय रहेगो ॥ २७३ ॥

॥ मतिहीन मनुष्य ॥

ज्यो मातिहीन विवेक बिना नर सजी मतंग जाई इंधन ड़ोवे, कंचन भांजन धुली भरे शठ मूढ़ सुधा रस सें पग धोवे, वो हितकाग उड़ावन कारण डारि महामणि मूरख रोवे, त्यो न्नर देह दुर्लभ वनारसी पाई अज्ञान अकारज खोवे ॥ २७४ ॥

॥ पांणी में पतासा ॥

जीवन जरासा दुःख जीव ने जरासा, तांपे डरहे खरासा काल शिर पे खड़ासा है, काऊ विरलासा ज्यां में जीवे द्वे पचासा, अंत वंन्न विच वासा ये बात का खुलासा है, सध्या कासा भांन कांन करिवर कासा, चल दल कासा पांन चपला कासा उजासा है, ऐसा सार हांसा तांपे किशन अन्नति आशा, पानीमें पतासा तेसा तन्नका तमासा है ॥ २७५ ॥

॥ फक्त मनुष्य का रूप ॥

दिसतको नर दिसत है पण लंछन तो पशूके सबही है, उठत बैठत खावत पीवत सोवत ही घर जाय सही है, धर्म विंना धंधन में दिन्न काढ़त ढोर ज्युं घरको भार वही है, और जोग सब आय मिले पण ऐक कुंमी सिंग पूंछ नही है ॥ २७६ ॥

॥ धर्म नेम नहीं ॥

दातार नहीं सुरा नहीं नहीं धर्म नहीं नेम, सोनर आया जगतमें जाण जनावर जेम, जाण जनावर जेम करी नहीं सुकृत करणी, जाण्यां नहीं जगदीश भार मारी है जननी. कहे दिन द्रवेश जिवतां अवगत जातां, नही धर्म नहीं नेम नहीं सुरा दाता ॥ २७७ ॥

॥ खोटी सोबत सें हानि ॥

नीचको नेह अनाथको जीवन, ओछेसें प्रीत कपूतकि आशा, वैरीमें वास वेपार परहत वेश्या के साथ रम्मे सार पाशा, चुगल पाड़ोस चले ठग साथ मुर्ख मित्र राजनसें हांसा, दास नारायण एम कहे भाइ एति वातमें होत विनासा ॥ २७८ ॥

॥ पंचोंका न्याय ॥

न्यांयकी रीतिकों पीछी धरे झगड़ा सुनके हिवड़ो हुलसावे, चोर अन्यायकी पक्ष करे साहुकार के हाथ में गोला धरावे, साख भरे अपराधिनकी कहे हां-हां गरीब के कलंक चड़ावे, नर्क पड़े महा दुःख भरे जकरे पर पंच ते पंच कहावे ॥ २७९ ॥

॥ पर निंदा ॥

धूल उछाले मानुंर पड़े तासके शीश, २ तेही तेसा फल

पावे, ज्यूं हरि भगतकों निंद आप शिर कर्म चड़ावे, रांम चरण मोटो कलंक टलेन विश्वा वीस, धूल उछाले भांनु पे पडे तासके शीश ॥ २८० ॥

॥ कुटुम्ब स्वार्थ ॥

नारी चाहे वसन भूषण भांत २ ही के, मात तात चाहे धन धानहु को धपनो, मित्र सहु न्याति मिले कुरा पाती आठों जाम लगरयो स्वार्थको लपनों, पडियो जंजाल विच कयो कछु नहीं जात, जाणे त्रिलो की नाथ भुल्यो जपनो, तुमहो परविण संत विनहु दाखत हुं, सेवा करूं रावरी के सोच करूं अपनों ॥ २८१ ॥

॥ परस्त्री संगत ॥

नार बुरी घर की पर की पण पार की नार महा दुःख दुति, तन मन्न कों सब चुंस लेवे जाणे शिल संतोष हरे जिम भूति, लाज न मातन तातन पुत्र कि जेर भरी हड़की जींम कुत्ती, रिखलाल कहे पर नार सुं राचीयो वहोतसी खावेगा मुंह पर जुती ॥ २८२ ॥

॥ हिता हित अजाण ॥

पुन्य और पाप को भेद न जाण्यों, तो सुत्र ग्रंथ पड़्यो कंई कांम को, धोवत २ फट्ट गयो तब वस्त्र को मल कट्यो कंई कांम को, जीसके कुल मांही कलंक चड्यो तब तेज प्रताव वड्यो कंई कांम को, जिसके घट माहीं गुरु

भक्ति नहीं, तब ऊपर राम रट्यो कई कांम को ॥ २८३॥

॥ स्वभाव नहीं मिटे ॥

पावक कों जल बुंद निवारण सुरज ताप कों छत्र कियो है, व्यादि को वेद तुरंग कों चाबुक, चौ पद के गले डंड़ दियो है, हस्ती महा मद मस्त के अंकुस भूत पिसाच कों मंत्र कियो है, औपद है सब की सुख कारक, स्वभाव कों ओषद नांही कीयो है ॥ २८४ ॥

॥ उम्मर प्रमाण ॥

पुरसा ये प्रमाण वर्ष चालीसां मिठा, पाका होत पचास दुःख साठां में दीठां । सित्तर सगो न कोय आश अस्सी में नांही, न्याय निव्वे में होय हंसे सब लोग लुगाई, सो वर्ष पुरा भया तंन सें होगया जोजरा, घर कि त्रिया यूं कैह अब मरे तो सुधरे डोकरा ॥ २८५ ॥

॥ शादि की ममता ॥

प्रथम नार मर गई फेर दूजी कों लायो, दूजी भी मर गई फेर तिजी कों लायो, तिजी भी मर गई, चौथि सें मन्न उमायो, वर्जरया सब लोग कुटुम्ब पण करे मनाई, साठ वर्ष का हो गया अब क्यों करे सगाई, डोस्यो बोल्यो टटकने अवध बिना नहीं मरसूं, रंडवा

कर गई तीन नार एक रांड हुं पण करसुं ॥ २८६ ॥

॥ औरों को शिक्षा ॥

पुण्य के प्रसाद ऐसो मनुष्य जमारो मिल्यो अब नहीं साधन की संगत सुहात है, रात दिन मनसोबा करे धन्न मेलवे का, आयु घटजात ज्यांकी चित्त में न बात है, हिरन का नग छोड़ काचन का नग लेत, आपही के हात आप खोटा खायां जात है। रिखजी कहेरे हुंडि औरां की शिकार देत, आपकी हुंडि का दांम रिता खोयां जात है ॥ २८७ ॥

॥ पग बिन कटे न पन्थ ॥

पग बिन कटे न पंथ बांह बिन हटे न दुर्जन, तप बिन मिले न राज भाग्य बिन मिले न सज्जन, गुरू बिन मिले न ज्ञान द्रव्य बिन मिले न आदर, ताप बिना नहीं मेह। मेह बिन लेव न दादर. सगरांम दास सांचि कहे बोल वचन पाछा फिरे। धृग धृग है उन जीवो को मन्न मिलाय अतर करे ॥ २८८ ॥

॥ स्त्री शिक्षा ॥

प्यारी कहे सुन प्राणप्रिया परनारी के संग न जाव-नारे. एक जान जाय दूजो जोर हटे फिर गाठ को माल गंमावनारे, राजा सुने तुझे दंड देवे फिर जुतियो की मार

पढ़ावनारे, लोग सुने फिट फिट करे तेरी जबांनि में धूल पड़ावनारे। प्रमानन्द कहे सुन प्राण पिया परनारी के संग न जावनारे ॥ २८९ ॥

॥ पांच पतासा कारणे ॥

पांच पतासा कारणे नारी किया सिणगार, बिछा पेरे बाजणां गल नवसरियो हार, गल नव सरियो हार जानके डेरे चाली, पुठ दियो भरतार रोल जान्यामें चालि, बेटो बाप भाइ सुणे शर्म नहीं लगार, पांच पतासा कारणे, नारी करे सिणगार ॥ २९० ॥

॥ बिन सोचे कांम करे ॥

बिना विचार्यो जो करे सो पिछे पिछताय, कांम बिगाड़े आपणो जग में होत हंसाय, जगमें होत हंसाय चित्तमें चैन न पावे, खांनपान सन्मान राग रंग मन में नहीं भावे, कहे गिरधर कविराय दुःख कछु टरत न टारे, खटकत है दिलमांय, कियो जो बिना विचारे ॥ २९१ ॥

॥ बुरी २ बातें ॥

बुरो मरुटस्थ पंथ बुरो जंगल को वासो, बुरो निचको नेह बुरो मूरख से हांसो, बुरी सुमको सेव बुरो भगनी घर भाइ, बुरी नार कुलक्षणी सासु घर बुरो जमाट, बुरी पेटकी भुख बुरो है रणसें भागणो, सुविचार सुख कवि कहे, बुरो है जंगल में जीवणो ॥ २९२ ॥

॥ दुर्जन से दूर बसिये ॥

बाल से ख्याल बड़े सें विरोध, चंचल नारि सें ना हंसिये, आग से राग जोगी की छेड़ अजाण के नीर में ना धसिये, जुहारी की प्रित अजाण को साथ, चोर को जाण के ना फसिये, कवि गंग कहै सुण शाह अकबर, कूड़ से दूर सदा बसिये ॥ २९३ ॥

॥ बात करामात है ॥

बातन्न सें देवि और देवता प्रसन्न होय, बातन्न सें सिद्ध और साधक कहात हैं, बातन्न सें खांन सुलतांन या नरेश मांने, बातन्न सें विद्यवांन लाखों ही कमात है, बातन्न सें वैर बधे बातन्न सें वैर घटे, बातन्न से पुन्य अरु पाप बंध जात है, बातन्न से यश अपयश दोनों ही होत, मनुष्य के बिच ऐक बात करामात है ॥ २९४ ॥

॥ कुसंगत से बिगाड़ ॥

बिगरे पय कांजी की छिंट पड्या, कलधोत कु धातन मे बिगरे, बिगरे तप पुंज कषाय कियां, नृपराज अनिति कियां बिगरे, बिगरे कुलजात कलंक चड्यां, पद ऊंच कु संगत से बिगरे, बिगरे सुभ मित्र जहां छल है सुभ धर्म मिथ्या मति सें बिगरे ॥ २९५ ॥

॥ अज्ञान का रास्ता ॥

बुद्धि विन्न करे वैपार द्रष्टि विन्न नाव चलावे, कंठ विन्न गावे गित लाभ विन्न खर्च वढावे, गुण विन्न लाय विदेश आदर विन्न अलगो जावे,जोरविन्न मांड़े राड़, भुख विन्न भोजन खावे, अनहोति इच्छा करे विन समझी कहे बात, वैताल कहे विक्रम सुनों ये दस मुरख की जात ॥ २९६ ॥

॥ अज्ञान बुद्धि ॥

बाल कहा जाने बात हिता हित अंध कहा जाने बाट यही है, इन्द्र कहा जाने भूंमि सुधा मुध आग कहा जाने छात नइ है, काल कहा जाने गाड़ कों बालक मोत कहा जाने एकलो ही है, दुष्ट कहा जाने दयाको मारग चोर कहा जाने खटाव नही है ॥ २९७ ॥

॥ फिरवी चेत ॥

बालपणे न संभाल सक्यो, कछु जानत नही हिता हितकों, जोवन वेश बसी बनीताउर लाग रही लछमी लछमी कों, दो भव मुढ बिगाड़ दिया डर आन जरा निजकों निजकों, आये हैं सेत अजु नर चेत, गइ सो गइ अब राख रही कों ॥ २९८ ॥

॥ धर्म दुकान ॥

बजाजी दुकांन पर कपड़ा मिल्लन, अरु पंसारी दुकांन

पर परचुनी पावे है, सराफी दुकांन पर गहणों लादत, अरु कंदोइ दुकांन पर मिठो मन भावे है, सोनी की दुकान पर घड़नो लादत अरु वैद्य की दुकान पर औषधी वतावे है, तेजमल कहै ऐसी अनेक दुकांन जग, धरम दुकांन पर शिव पंथ पावे है ॥ २९९ ॥

॥ बंदा बाजी झूठ है ॥

वंदा वाजी झूठ है मति सांच कर मान, कहां बिरबल गंग है कहां अकवर खान, कहां 'अकवर खान भले की रहत भलाइ, ऐन सवेरे देख उठकर चलना है भाई, कहे दिन दरवेश मानरे गाफील गंदा, मति सांचकर मान झूठ है वाजी वंदा ॥ ३०० ॥

वंदा वहोत न फुलीये खुदा खमेगा नांय, जोर जुलंम न। किजीये मृत्यु लोकके मांय, मृत्यु लोक के मांय तमासा तुरत वतावे, जेनर करे गुमान तेनर खत्ता खावे, कहे दिन दरवेश समझरे गाफिल गंदा, खुदा खमेगा नांय वहोत न फुलिये वंदा ॥ ३०१ ॥

॥ मुरख मनुष्य ॥

विन्न तेड्यो घर जाय विन्न वतलायो वोले, विन्न मांके हंम देत विन्न पर जोजन डोले, विना दियां सन्मांन जाय वैठे आगेरो, वैठ अंग भिड़ाय फिर २ खावे फेरो,

चाले रस्ते खावतो गुपत बात चौडे कहै, वैताल कहै विक्रम सुनों मुरख छांनां किम रहै ॥ ३०२ ॥

॥ जिव्या लोलपी ॥

भेख लेइ साधु तणों हरे विराणां माल, जिव्या केरा लोलपी देह को राखे लाल, देहकों राखे लाल सरस आहार नितकों ताके, लुखा सुखा देख तेना अवगुण भाखे, ते साधु असाधु है हीये विमासी देख, दो भव अणी विगाड़ीया साध तणों लेइ भेख ॥ ३०३ ॥

॥ भैरूं पूजा ॥

भाटाका भैरुं किया कुड़ पत्थर पर तेल, कियो लाल सिंदुर में दीनी मानता मेल, दीनी मानता मेल पकड कर वकर मंगायो, पापी कियो अन्याय मारकर तेहिज खायो, रांम चरण सांची कहै सुणरे मुरख हेरु, कुड़ पत्थर पर तेल किया भाटा का भैरूं ॥ ३०४ ॥

॥ विन पाणी का मोती ॥

पांणी विन्न मोतीको छिवत नही हातन में, पांणी विन्न सिंगाड़े सिरोही कौन कांम की, पाणी विन्न घोड़ा को खरीदे नही सोदागर, पांणी विन्न सुक्व जाय वेला देन्व पांनकी, पांणी विन्न शूरवीर ठाडे रहे रण विच, भाग जाय कायर वतावे देह चांमकी, अरे नर ज्ञानी तुं पांणी

का जतन कर, पांणी के गये से जिंदगानी कौन कांम की ॥ ३०५ ॥

पांणी विन्न हीरा नीलंम पुखराज मणी, पांणी विन्न मोती की किमत हलका नी है, पाणी विन्न घोड़े को खुराक मिले नहीं, पांणी विन्न मछली ने हारी जिंदगानी है, पांणी विन्न, खलकत की चिज सब सुख जात, कहे ज्ञानी जिसका गया पांनी, उसी को मरण तो कबुल पण, जिंद-गानी धुल धांनी है ॥ ३०६ ॥

॥ संत समागम ॥

मात मिले सुत भ्रात मिले पुनी तात मिले युवति सुखदाई, राज मिले गजराज मिले सब साज मिले मन वंछित पाई, लोक मिले पर लोक मिले सुर लोक मिले वैकुंट में जाई, सुन्दर सब सुख आन मिले पण संत समागम्म दुर्लभ भाई ॥ ३०७ ॥

॥ अभिमान का नाश ॥

मेरो देश मेरो ग्राम मेरो अति उंचो ठाम, मेरो भयो नांम सारे जग में विख्यात है, मेरो रूप मेरो वस्त्र मेरे है कुटुम्ब वन्न, मैं हूं वड़ो आदमी वड़ी ही मेरी बात है, मेरे पुत्र मेरे न्याति मेरे घोड़े मेरे हाथी, मेरो वंश उंचो और उंची मेरी जात है, कहे राधेश्याम प्राण तन्न से निकल जात, तब मेरी२ सब धरी ही रह जात है ॥ ३०८॥

॥ जीवन का लाड़ ॥

मात पिता युवति सुत बंधव लागत है सबकों अति प्यारो, लोग कुटुम्ब सब हित राखत होय नहीं हमसें यह न्यारो, देह स्नेह जब लग जानों तब लग बोलत शब्द उचारो, सुन्दर चेतन शक्ति गई तब, वेग कहे घर बाहीर काड़ो ॥ ३०९ ॥

॥ कुटुम्ब झूरणां ॥

मात कहे मेरो पुत सपुत है वैन कहे मेरा सुन्दर भैया, तात कहे मेरो कुल दिपक लोक मे लाज अधिक बधैया, नारी कहे मेरो प्राणपति जिनके में लेऊं नित बलैया, कविगंग कहे सुन शाह अकब्बर, जिनके गांठ सफेद रूपया ॥ ३१० ॥

॥ माया स्थिर ॥

माया२ करत हे देखतही विरलाय, जैसे आभा गगन में मिल २ बिछड़ जाय, मिल २ बिछड़ जाय हुई न किसकी होवे, रोकावे दरबार में घणी विटम्बे काया, देखत ही विरलाय स्थिर कर रहे न माया ॥ ३११ ॥

॥ जिंदगी से प्यार ॥

रूप भलो जब लग दिशत तबलग बोलत चालत आगे, खावत पिवत सुने अरु देखत, सोय रहे पुनी उठके जागे,

मात पिता युवति सुत वन्धव प्रेम करी भगनि गल लागे, सुन्दर चेतन शक्ति गई तब ताही कों देखत वि ड़र भागे ॥ ३१२ ॥

॥ त्रिया चरित्र ॥

रांम चरण नारी तणों चरित्र को नहीं छेय, गावत २ रोय पडे रोवत ही हंस देत, रोवत ही हंस देत लाज शरम नही आवे, लम्बो घुंगट काढ़ वचन विकराल सुनावे, वाता वाता लड़पडे वाता २ नेह, रांम चरण नारी तणों चरित्र को नहीं छेह ॥ ३१३ ॥

॥ दगल बाजी ॥

लिलोवी छोड़ी परी लोभ छोड़ीयो नांय, दुगणां तिगुणा चौगुणां मांड़े वहियां मांय, माडे वहियां मांय तोलमें ओछो तोले, पंसेरीमे पात्र भेलदे ओले भोले लेतां देता लोभ वश सौ २ सोगन खाय, लिलोति छोडि परि लोभ छोडीयो नांय ॥ ३१४ ॥

॥ गुण अवगुण ॥

विरला वो संसार नेह निर्धन्न से पाले, विरला वो ससार आमंद अरु खर्च सम्हाले, विरला वो संसार देख कर रहे अपुठो. विरला वो संसार जिव्हसे बोले मिठो,

आतम तारे प्रभु भजे तंन मन्न तजे विकार, अवगुण उपर गुण करे विरला वो संसार ॥ ३१५ ॥

॥ जोबन को जोर ॥

वांकी वांधे पागड़ी जोवनीयां के जोर, अकड मकड़ राखे घणी करतो मुंछ मरोड़, करतो मुंछ मरोड़ छिद्र पराया ताके, राज धन्न जौबन अंध मर्म पराया भाखे, खबर पड़ेगा बापड़ा जद मार पड़े सोटाकी, जोवनीयां के जोर पागडी वांधे वांकी ॥ ३१६ ॥

॥ स्वार्थी पागल ॥

स्वार्थ के काज अन्याय करे, कछु धर्म अधर्म न जानत पागल, झुंठी की सांची बनाय कहे अरु साच को झुंठ कहे मुख आगल, पुत्र पिताको नातो न मानत जानत नही जो धर्म को कागल, भज्जु कहे मन्न साच करो जग मांय, झुंट या मच्छ गल्या गल ॥ ३१७ ॥

॥ वैश्या पुत्र ॥

सर्व देव नित नमे सर्व को गुरु कर मांने, सर्व शास्त्र नित्य सुंने धर्म अधर्म नहीं जाने, सर्व व्रत नित्य करे सर्व तीर्थ फीर आवे, गुण अवगुण नहीं जाने सर्व के गुण मुख गावे, इण विध चाले चाल कहो पार कैसे लहे, असल पुत्र वैश्यां तणो कहो बाप कीसको कहे ॥ ३१८ ॥

॥ साधु की निंदा ॥

साधां की निंद्या करे कांने सुनी न जाय, दुष्ट जीव हरांम को बैठो भिष्टा खाय, बैठो भिष्टा खाय काड़दो बस्ती बारे, बांडे गधे चड़ाय कुतरा करदो लारे, रांम चरण साची कहे मुंडो करदो श्याम, साधां की निंदा करे कांने सुनी न जाय ॥ ३१९ ॥

॥ कुलच्छण ॥

सोवत नंग वजावत अंग, आप कलेश करे सो कुलच्छण, दांत को पिसत मुंछको तोडत, शीश ढंके अरु ताड़त तच्छग, भुंमि खणे गळ हाथ लगावत, विन प्रस्ताव हंसे सो कुलच्छण, दास नारायण किम वाम करे कछडी, नाम पडे ठग कुलच्छण ॥ ३२० ॥

॥ लोभी वणिक ॥

सुण साहजी मगरांम कहे, थोको थोड़ी भार, लेता देतां पापको किण विध पाड्यो फेर, किण विध पाटनं फेर करनं ऐसी कम्माई, तोता वार हजार कभी न गयी कांई । नायव लेखो मागसी देसी उठा टेर, सुण साहजी मगरांम कहे थोको थोड़ी भार ॥ ३२१ ॥

लच्मी जणे सो सारंन में सार, सो सारंन में सार ऐक पापन की पुरी, चोर जुंहारी चुगलखोर जणे नार भंड मुरी, रांम चरण सांची कहे यांमें फेर न फार, सति नार सुरा जणे वड भागण दातार ॥ ६२२ ॥

॥ शूरवीर होगये ॥

हरि नाथ कहां रावण कहां जालिंन्द्र कहां जुग चावन का, कंस कहां उग्रसैन कहां इन्द्र जीत फेर नहीं आवन का, चक्रवत हुवा सो भी नांही रह्या ठाकुर दीसे सब जावन का, तेरी मन मांने सोही करले प्यारे सांई दिनतो हक्क बतावन का ॥ ३२३ ॥

॥ सुमित्र के लक्षण ॥

खीर की संगत नीर करी तब देह गुण आप समान करयो है, ताप लग्यो खीरंन को तब जारयो नहीं पण आप जरयो है, निर विना पेखी पया कर कुद अगन माही आप गिरयो है, वीर कवी प्यारे वेग मिलो तुम, मित्र किया एसो ही कीयो है ॥ ३२४ ॥

॥ अल्प आयु—काम बहोत ॥

आयु तो अल्प ज्यामें जीव शोच बहुत करे, करने के वहु काम कहां २ कीजिये, वेदन को अंत नांही पुरांण को पार नाहीं, रांगनितो अनेक चित्त कहां २ दीजिये,

कवीकी कला अनेक छंदको परवेश बहु रागको रसीलो रस कहा २ पीजिये, सो वातन की ऐक बात निपट बतायो जात, सुधारयो चाहे तो भव मन वश किजिये ॥ ३२५ ॥

॥ रूपये की रचना ॥

आठ रयेण एक मास मास बारे मे पक्यो, पावक मे लियो जन्म जगत साराही देख्यो. लिखिया लेख लिलाट जगत जिनके संग दोड़े, संत जन दीनी पुठ प्रित कबहु नही जोड़े, पांव विना फिरतो रहे अन्न पांनी नही खाय, घर २ फिरतो रहे विटल्यो नही केवाय ॥ ३२६ ॥

॥ त्रियाका पुन्य अरु पाप ॥

ऐक ज्यो नार श्रृंगार करे नित येक भरे या परघर पाणी, येक ज्यो ओड़त पाट पिताम्बर एक ज्यो ओड़त फाटी पुराणी. ऐक कहावत बांदी बडारण एक कहावत है पटराणी, कर्म के फल देग लिये चितमें तोहुंन चेत मुरख प्राणी ॥ ३२७ ॥

॥ मनुष्यका पुन्य अरु पाप ॥

ऐकही मात पिता सुत्त बधव एकही पटके दोनो भा ऐकनो तेज तुरंग रमे एक मागत खावत भीख पराड, को गांवमे नांम न जाणत ऐकके द्वार फिरे है छत्र

को लेख मिट्यो न मिटे प्रभु आपके हाथ की छाप बनाइ ॥ ३२८ ॥

॥ निचकी संगति ॥

काग रू हसं रहे तरू उपर दोनों परस्पर चित्त मिलायो, ऐक समय तिहां भुपत लेखत छांयां निहार तिहां चली आयो, काग कुमित ने भिष्ट करी तब खैचत बांण के तिर चलायो, काग उड्यो और हंस हण्यो प्यारे नीचकी संग मे प्राण गंमायो ॥ ३२९ ॥

॥ साधुके लच्छण ॥

कोउक निंदत कोउक वंदत कोउक भावसे देतंह भिच्छन्न. कोउक आय लगावत चंदन कोउक डारत धुरि तन्छन, कोउक कहे ये मुरख दीसत कोउक कहै ये वहोत विचन्नण, सुन्दर काहूपे राग न द्वेप सो सब कहीये साधुके लच्छन्न ॥ ३३० ॥

॥ प्रश्न ॥

कौन तुच्छ में तुच्छ कौन मोवन में भारी, कौन दुध से उज्जल कौन काजल में कारो, कौन रवि में तेज कौन अग्नि मे तातो, कौन लोह में कठिन कौन मदिरा मे मातो, कौन विछु में डंक कौन माधु जन दिठी, कौन पवन में तेज कौन साकर मे मीठी ॥ ३३१ ॥

॥ उत्तर ॥

मांगन तुच्छ सें तुच्छ सपुत सोवर्न सें सारो, जस दूध सें उज्जल कलंक काजल सें कारो, नैण रविसें तेज क्रोध अग्नि से तातो, सुम लोहे सें कठिंन मोह मदिरा सें मातो, वचन विछु सेंडंक दया साधु जन दिठी, मन्न पवन्न में तेज गर्ज साकर सें मिटी ॥ ३३२ ॥

॥ रूप विरण सित ॥

गर्भ न कीजे देहको जाय पलक में टूट, जैसें भांजन काचको जाय पलक में फुट, जाय पलक में फुट जोवो सन्त कुंवारो, इन्द्र वखांण्यो रूप विणस्तां न लागी वारो, भांडो हे मल मुत्र तणों देह असुचि सर्व, हाड़ मांस लोही भरयो तांको कहां गर्व ॥ ३३३ ॥

॥ तत्व भेद नहीं जाने ॥

जाट कहा जाने भट्टका भेद में, भिल कहा जाने वैत जगाको, मुढ कहा जाने गुढ की बातकों, भैंस कहा जाने मत सगा को, हिंभ्क कहा जाने मुन्दर को सुख, गधा कहा जाने नीर गंगा को, कवि गंग कहे सुन शाह अकबर, भोलो कहा जाने भेद दगाको ॥ ३३४ ॥

॥ नर्क दुःख ॥

नर्क तणा दुख घोर सुणतां काया धुजे, पर भवको

डर आण छोड़ जन विरला बुझे, क्षेत्र वैदना अनंत दश लागी लारे, जम्मकी पन्दरा जात पकड कर पांव पछारे, ले मंड़ासो हाथ आणकर लागे भुंमी, दें मुदगर कीं मार पकड़ कर घाले कुंभी, पाप तणां संचे कीया जीण से उपनों आय, कुम्भी न में हैला करे कौंन छुडावे माय ॥ ३३५ ॥

॥ बात को रेलों ॥

पिसत पडगई छाकडीयां पांवां आयो रेलो, पांणी भरतां टाट घसी पणघट को पुछे, गेलो, पणघट को पुछे गेलो वात या घणी मठारे, पिछी केवे लोग ऐक की सुणे अठारे. नाथु कहे आवे रेलो तो उणी वातने भेलो, पाणी भरतां टाट घसी पणघट को पुछे गेलो ॥ ३३६ ॥

॥ मर्द के लच्छण ॥

मर्दकी द्रष्टि दीर्घ मर्द तलवार बजावे, मर्द लेके फिर देत मर्द खावे भोग खिलावे, पडे मर्द में भिड मर्द को मर्द छुडावे, कभि न बदले बोलके सुख दुख दर्दी दर्द के, बेताल कहे विक्रम सुनो ऐसे लच्छण मर्द के ॥ ३३७ ॥

॥ च्यार वाते चंचल ॥

राजा चंचल होय मोम अपनी कर राखे, पंडित चंचल होय सभामें सांची भाखे, हस्ती चंचल होय फोज में शंक हटावे. घोड़ा चंचल होय ढांम त्यागी पर पावे, ये च्यार चंचल भला राजा पंडित गज तुरी, बेताल कहे,

निक्रम सुनो चंचल नार निश्चय बुरी ॥ ३३८ ॥

॥ कुलक्षणी त्रिया ॥

धर्म तणो नहीं ध्यान साध संताने भांडे, बडका बोली नार कंथसें कल्ह जो मांड़े, बालक आवे हाथ जद वह तटके पटके, सासु देवे सिख जब कुत्ति जुं कटके, शर्म गंमाई सासरे किया पियर मे भांड, अबरा ओड़े ओड़णा महा शंकणी रांड, महा शंकणी रांड़ पेटतो ढंड़ो फंडो, दिखत की विकराल नारको मुंड़ो भुंड़ो, कहे गिरधर कविराय सुनोरे सगला सोई, कंवारा रहीजो पण ऐसी नार को परणों मत कोई ॥ ३३९ ॥

॥ झूठ ही झूठ ॥

झुंठही झुंठ वसे निश वासर, झुंठ ही झुंठ को मंडप छायो, झूठही चाकर झुठही ठाकर, झूठही माल मस्करा खायो, चाकर ठाकर एक वसे जियां पर धान करे मन चायो, वंडरी वड वसे दरवार में वंडन ने भग डंड मचायो ॥ ३४० ॥

॥ मारवाड़ देश ॥

मारवाड़ थलियां मांहीं ऊंनी २ लुहां वाजे जाणे लागी झालरे, गांम आवे मोड़ा २, रेत मांही पड़े फोड़ा मोवण का तोड़ा तिजे वर्ष पड़े कालरे, पिवासा उमन चरिया पारिभो नमो, उत्राध्यैनजी मांही भारव्यो

दीनका दयालरे, नेमीचन्द कहे ऐसे बोले मालवाका संत, मारवाड़ देश मांही, केसे आवां चालरे ॥ ३४१ ॥

॥ कुटुम्ब–भूरणां ॥

मांईतो पुकारे छाती कूट २ लाड़ले को, पिताजी कहेरे मारो नंदन कहां गयो, भैयाजी कहेरे मारी बांह आज सुनि भई भगनी कहेरे मारो वीर दुःख देगयो, कांमनि कहेरे मारो शीश सरदार कहां, सुवाजी कहे भतिजाने कोंण लेगयो, सुन्दर कहत बांकि कुण सच्चो जांण, वोतो काले बेठो हाटड़ी ने आज कांई होई गयो ॥ ३४२ ॥

॥ दगाई का फल ॥

एक अहिर चली पय बेचन, पांणी मिलाय करी चतुराई, जाय गांव में बेच दिया तब, दुनी मन में हरषाई, लोभ काज अकाज कियो पण, जानत है प्रभु जग तांई न्याय विचार कीयो एक बन्दर, दूध को दूध ने पांणी को पांणी ॥ ३४३ ॥

॥ पुत्र प्रेम मीठो ॥

भूख्या मीठो अन्न उष्ण मीठो उनाल्, भोजन मीठो लूण ओषध मीठी सियाले, मीठो प्रेम परिवार यान मीठी अरु दीठी, मीठो खांडकी चिज माहा मीठी अंगीठी, जिणमें मीठो गज्ज कंठ मीठो स्वर तणो, कवि गंग कहे

मगला विचे पुत्रपर प्रेम रस मीठो वणों ॥ ३४४ ॥

॥ कडवो यो संसार ॥

कडवो यो संसार जिको विन्न तेडयो आवे, कडवो यो संसार कंठ विना गीत गावे, कडवो यो संसार विन मनख्य सें हांसो, कड़वो यो संसार [illegible] गामो, कडवो वचन दुर्जन तणों कड़वो [illegible] कवि गंग कहे ओ ठाकरां, मुरख को संग कडवो [illegible] ॥ ३४५ ॥

॥ धर्म–विर–मनुष्य ॥

मन मन लुका शाह दलपत राय हुंव मार्ग. [illegible] रणजीत सिंह ने आतमा सुधारी है, रांम नाथ [illegible] के सांजत के सुरजमल, मिश्री लाल आला शाह, [illegible] उगारी है, लालाजी हैद्रावाद सादड़ी में गोरा [illegible] लखमी चंदजी नलखेड़े तीर्थ अपारी है, गुणनो [illegible] यामे कहा तक कहे कालु, धन्न जैन धर्म पार हुंव उपगारी है ॥ ३४६ ॥

॥ ना कछु मार ॥

उजाड को कूप चंडाल को रूप, दोर्जी को भूप काम न कछु. निचको नेह मंगी को गेह. [illegible] कछु न कछु ऐठ को अन्न निर्धन को मन्न, कंजुस को धन काम न कछु. मुर्ख को संग कर मन प्यारे [illegible] काम न काम

॥ ३४७ ॥

॥ कपटी की धुर्तता ॥

कपट मेति निपट वोल्दे हियाकी न गाठ खोले, मनको उपाय करे वोले सब कुछ हे. ओर मुं तो नेह गखे हिया की न बात डारबे. ओर के शीर आल देत आर रहत दुरहे. जेसो हे पतंग रंग तैसो हे कपटी को संग. छाडत न वार लागे नहीं जेसो पुर हे. इत्यादिक अवगुण सुणी के सबीक जन. कपटी की बात मांन ज्यांके मुंटे धुल ॥ ३४८ ॥

॥ ज्ञान-पांन-बीडी ॥

समकित पान सुधार के चुनो चारित्र लाय, करणी रो काथा करो बीडो लेवो बनाय, बीडी लेवो बनाय सुपारी तपस्या लीजे. प्रभु नाम की डाल इलायची मुख में दीजे रहे मगन अतिशय पाप को काटो जाई, नरसिंह निहार ज्ञान की लाली छाई ॥ ३४९ ॥

॥ व्यसनी धर्म से दूर ॥

जाजम री नहीं सुजान जुए नहीं चौपड खेलन. अतोगन नहीं अमल भांग नहीं उर्दाया मगन, सोपारी ने फंन चांट नहीं नागो. हुक्को नहीं धर्यो हाथ कहो रंग आवतो किन जाना में देख गयां बात लागे, आतर रहे साधु सुनो ऐसा देख दुखाने ॥ ३५० ॥

॥ विनयवान चेली ॥

आरजीका जाय रही एक स्थानक, रात पडी कही चेली के तांई, साकल देई ने कीलो लगावो जा,ढूढी सति पण कीली न पाई, गुरणी कहे दो कर उगली, जद दे उंगली ने रात विताई, धन विनय वांन उगत भांन यों, केवल ज्ञान ले मोक्ष सिधाई ॥ ३५१ ॥

॥ सुपने की-सायबी ॥

सपदा गड्डी छांडी रसोई चडी छोडी, सुन्दर मडी छोडी आप काहूपे गयो, टाडे दाम दासी छोडे घोडे बाग ग्वांत छोड़े, यार आसपास छोड़े मनकों दगा देगयो, वृद्ध पिता मात छोडे भाई बिल्ह बिलाट छोडे, पुत्र किलट किलाट छोडे कहे कवि निपट सेग, गुणी हो गियागा लोग ज्यो सुकृत कियो सो सग मे लेगयो ॥ ३५२ ॥

॥ सुख-दुःख-कर्माधीन ॥

रुजगार तो बणे नांय धन्न नहीं घर माय, ग्यानको फिकर बहुत नार मागे गहणो,लेणायत फिर जाय मिलत उधारो नांय, फिर निल्या कुमारग चोर यांरे नहीं लों, दुःख पुत्र जुवारी भया घर खर्च बड गया, सपूत पुत्र मर गया ज्याको दुःख सहणों, पुत्री वर योग थई परणाई सो रिढा भई, ऐता दुख सुख माने ज्याको दुख सहणों ॥ ३५३ ॥

॥ धर्म-खोजना ॥

ढूंढत २ ढूंढ लिया सब वेद पुराण कूरांण में जोई, जैसे मही में मक्खन ढूंढत ऐसें दया में लियो है जोई, ढूंढत है तबही चिज्ज पावत विन ढूंढे ही नहीं पावत कोई, ऐसें ही धर्म दया में ढूंढ लियो जिवदया विन धर्म न होई ॥ ३५४ ॥

॥ जुंवारी—मनुष्य ॥

जुवां रम्मे नर जैय माया तणों आंगे छेय, हाट और सारा गेय देवे गेणों मेलरे, लोग मुडे देवे धुर न्याति दुःख भर पुर, घर हुंति करे दुर फिरत अकालरे, लेणां यत लागे आय घरे राड़ करे तांय, मरे विष फांसी खाय बहोत दुख लेवरे, विगड़त दौउंलोय संका नहीं मुल कोय, वार २ कहूं तेने जुवां मति खेलरे ॥ ३५५ ॥

॥ मांस-निषेध ॥

हीरण सुसांन गाय जीव घणा जग मांय, तेहनी बिधंसे काय मांस केरे काजरे, निरदैय महादुष्ट खाय २ वणे पुष्ट, नारकी में जाय दुष्ट करत अकाज रे भुंमि जिम तप भाड़ रोवे घणां बाका फाड, आवे जम्म तणीं धाड़ गाजे जिम गाजरे, कांनि २ लेवे रोक घाले हे गला में तोक, मांस खायां महा दोष मांस दुरो तजरे ॥ ३५६ ॥

॥ दारु-निषेध ॥

दारु पियां जावे बुध रहे नहीं कछु सुध, दिसे भुंडो नुरे, तिरीया बैंन तणी तोय ठीक नहीं पड़े कोय, बोले मुख भुंडो थाय वाजत बेसुर रे, जादव कुंवार ने दारू तणों कीयो पांन दियो दुःख आसमांन देवता करूर रे, वाजे घणों भुंडो मुख, लोक नहीं मेले रुख दारू पियां महा दुःख, दारू दुरो तजरे ॥ ३५७ ॥

॥ वेश्या-निषेध ॥

वेश्यां छे धुतारी नार सज्ज सोले सिणगार, परघर माड़े प्यार करत खरावरे, कांम अंध नर कांमी तहांसु लपट होई, नर भव देवे खोइ मुरख गंवार रे, लोक में अपजश थाय मरीने दुरगत जाय, लाल थांबो करे तांय चेपंछे तीवार रे, उछली आकाश जाय झेले तिरशूल तांय, कहुं तोय समझाय तजो वेश्यां नाररे ॥ ३५८ ॥

॥ शिकार-निषेध ॥

एहडा की ने अंघ बांदे नरकांरा वंद वांधे, कुमति के फंस फन्दे मुरख अभिमांनिरे, एहड़ारे परताप सहे अति घणी ताप, तोड़ २ खाय सांप करत हेरान रे, एहेड़ा सुं अंध कुप गयो छे श्रेणिक भुप, दिसे वणों बदरूप सहे दुख खानरे, सकरो सवायो कथ वेणां साहू कहे संत, एहेड़ा में

दौष अंत तजो विद्वानरे ॥ ३५९ ॥

॥ चोरी- निषेध ॥

चोमासा की रात चोर दगो घात खेले जोर,गांव २ ठोर २ फिरत अकालरे, दोड़ो करी लावे दांम करे अति भुंडो कांम, पाप ऊदय आवे जद पकड़े भुपालरे, देवे मार भर पुर नांक कांन करे दुर, आमों सांमों करे शूर चौहट्टा के बीचरे, दुरगत जाय मर शाता नहीं तिल भर, चोरी दुर तजो, नर चोरी छे चंड़ालरे ॥ ३६० ॥

॥ पर स्त्री-निषेध ॥

परनारी संग जाय शंका नहीं आंणे कांय,निंदा होवे लोक मांय राजा देवे दंड़रे, सुत्त तणी सुणे वात लाजे घणां माय तात, दुख धरी दीन्न रात हुवे भुंड़ो भांड़रे, सदा रहे मुरझाय मरीने दुरगति थाय, जम्म आय होवे दोरूं करे खड़ खंड़ रे, मुख करे हाय २ कारियन लागे कांय, विशे सहु दुख दाय विशे दुरो तजरे ॥ ३६१ ॥

॥ मूरख लच्छण ॥

मान विना एक स्थान रहे नर, ज्ञान विना चरचा पद खोले, पच्छ विना झगड़े परसें,नर काज विना परघर ड़ोले, कंठ विंना नर शब्द करे प्रेम विंना नर लोचन गोले, ओर निंद्रा में लीन सदा मुरख लन्छन ईण पर बोले ॥ ३६२ ॥

॥ अभिमानी–मनुष्य ॥

टैट करी भर जोवन मे गुरू देव सें हेत भीत न बांधी, भामनी भोग मे राच रह्यो नित, लोगां के पेट में राबड़ी गधी, काल का कागद आंण खड़्या जब, मेंहे गीणे नही कछु आंदी, अब काहे कों शोच करे मन मूरख तेंने पाणी पेला पार न बांधी ॥ २६३ ॥

॥ मूंजीकी–दशा ॥

शोभो सिधड़ मरगयो ठेठ मसाणे जाय, धन्न माल रख्यो रह्यो काल पहुंतो आय, काल पहुतो आय पैसो एक न ओझ्यो, बेटो होतो एक तेपण आंण न पुंछ्यो, कहे गीरधर कविराय सुंनरे मनवा गीदड़, ठेट मसाणे जाय मरगयो शोभो सीधड़ ॥ २६४ ॥

॥ दयाविंन–मूढ़ ॥

सब वेद पुरांन कुरांन पड़्यो ओर पिंगल भी सब देख लियो है. सूत्र सिद्धान्त अनेक पड़्यो और जोड़ कलामे प्रवीण भयो है, चोत्र कलामें बहुत विचक्षण जोतिष ज्ञान अभ्यास कियो है, रूपचन्द कहे अनेक पड्यो पण, जीव दया विन मुढ रयो है ॥ २६५ ॥

॥ मियाजी की पोशाक ॥

मियाजी बजाज कि दुकांन जाय चार गज टूक लियो, मुफ्त ही पचाय गज लाया दो आंने मे, दो गज का

अंगरखा आगे पिछे वाह करी, मगजी और संतोष बैठ सिवि तह खांने में, सवा गज का तवाक पाव गज की दोय टोपी, आधे गज का रूमाल गया हुरंम्मखाने में, बीबी के पास बैठ मियांजी तारीफ करे, सारी पोशाक बनी पूरी आठ आने में ॥ ३६६ ॥

॥ मनुष्य की—गन्धी देही ॥

हस्ती दांत के खिलोने होत भांत भातन के, बागांके बागम्बर शिव शंकर चित्त लाया है, मृग की खाल बिछा-वत योगी राज, बकरे की खाल कुछ पांनी भर पिलाया है, करेले की खाल में होत है सुगंध त्यार, वृषभ की खाल देखो अन्न को थपाया है, सांभर के सट के बांधत है सिपाई लोग, गेंड़े की ढाल राजा राणां मन्न भाइ है, नेकि और बदि संग चलेगी, मयारांम मनुष्य की खाल कछु कांम नहीं आई है ॥ ३६७ ॥

गोरो २ गात देखी काहेको गुमान करे, रंग सो पतंग रंग कल उड़जायगो, धुवां केरो धरहर ढहतां न वार लागे, नदि के किंनारे रूंख सामल उठ जायगो, बोलतां सें बोलिये न बोलिये गुमांन धर, जोवन गंमायां पिछै कोड़ हांण पायगो, मनुष्य शि गंधी देही जिवतां ही कांम आवे, मुवां पिछै काग कुत्ता सियाल्या न खायगो ॥ ३६८ ॥

॥ तन्न का तमाशा ॥

वादल कि छायां खलक सुपने कि माया, कागज
ा ढोल जो लुंका चहुकाशा है, धुवांकि दिवाल मकड़ि
के जाल, मच्छर कि खाल नहीं तोला अन्न मासा, है ऐता
। जिहां न खुवी अभिमांन करे, किकर के पांन जोलु
ुद्रन के यासा है, मोंती जल काशा पंछी निष करत वासा,
ाणी का पतासा तैसा तन्न का तमाशा है ॥ ३६९ ॥

॥ शेखीबाज मनुष्य ॥

होटा पर मुंछ भंमाय रहयो, सर नाय रहयो शिर
ाग कोटयां, ठोर २ वाल जमावे डारत तेल बड़ेही
चेनणी या, आप वडे सरदार नमें और वाप चरावत औरंकि
गड्या, गोखिमें देखोतो फाटा पड़े मियां, नोकरी पुछोतो
तीन रुपैया ॥ ३७० ॥

॥ कॅवल्ल वन्द—दुमल—छंद ॥

प्रभेष्ट महा पद पंचन कों पहले प्रणमों पह उठ सदा,
परमार्थ के पथ पावंन कों परमात्म कों पहचान मुदा,
भव सिंध जहाज उतारन्न को समरो मन मोहन पंच पदा,
दिव्यके सुखके गर्भ विनको, गिव साधंन कों सुख दाय
सदा. हेम सिंहासन माणक मंड़त तापे तिंन सो छंत्र
रंया, चामर इन्द्र करे विव मुरत वृक्ष आसोक से छांयां
रंया, शूर मताप दियो शशि मंडल उंच महेद्र धंजा फर

कैयां, गरजत चक्र बजे सुर दुंदाभि, फुले बरसे जिनराज दिपैया ॥ ३७१ ॥

॥ वीर—वांणी॥

ऊंच गंभीर महा स्वर पंचम मेघसी द्वंदाभि सम मन मोहे, जोजन ऐक लगे सुणते सव चहू भवजगे मतं दोष ने पावे, या सुण परमोद लहै सुर मानव आवे तिर्यंच भले गुण ढोवे, सव सु भाषा मांही समझे सव श्री जिन वेण अनुपम सोवे ॥ ३७२ ॥

॥ चौ—प्रकार धर्म ॥

दांन सुं शील तपो युत भाव चौविद धर्म महासुख दाता, मोक्ष करे सुख स्वर्ग वरे नरलोक विषे वहु रिद्ध मिलाता, दालिद्र दुख—करे चकचुर लहै जीव उत्तम संपत साता, तीरथ नाथ वखाणत है ईम धर्म कथा सुनते वहु ज्ञाता ॥ ३७३ ॥

या सुन वांणी वैराग चड़े खट खंड़ पति वल देव नरेशा, राज सुत्ता दिक मित्र महाभट्ट सैन पति वलदेव नरेशा, सेठ धणी नर नार घणी सुख भोग तजी ग्रह संजम वेषा, श्री जिन शाशन मांही भये रिख छांड़ दिया सव भार कलेशा ॥ ३७४ ॥

जाश प्रसाद भये सुर सिद्ध विमाण अनोतर मांय विराजे, देव भये अही मंद भये, वड़ भाग नरिंद महा छवि

छाके, देव गुरु पद इन्द्र सामानिक लोकपति पदवी गुण गाजे, चक्रपती वरके सव भुप महा ऋद्ध धंन लहे जग गजी ॥ ३७४ ॥

गौतम खंदक सोमिल से शिवराज ऋषि सुखदेव वखांने, यां विध भव्य अनेक तिरे भव सिद्ध जहाज प्रभु पगमाने, आपतिरे ओर तारत हे प्रभु श्री जीन देव जिनंद सुजाने, सेवक वंदत हे कर जोड करो मुझ पार दया निधाने, ॥ ३७५ ॥

श्री जिनदेव मुनिश कों वंदन आवत देवपति हर्षाई, सुंदर जाण विमाण विपय चढ़ साथ सभी परवार सजाई, तिन प्रदिक्षिणा दे चरण नमी धर्म कथा सुन प्रीत लगाई, फेर नमे कर जोड़ रचे वर नाटिक गीत महा चतुराई ॥ ३७६ ॥

धर्म कथा अति सुंदर श्री जिनराज कही अति सुख पाया. केई नर नारी लिये रिख चारित्र केई अनुव्रत केई मग आया, पुन्य उदय तिर्यंच तथा तिराये सो श्रावक केई समदृष्टि सुहाया, देव भये जगता अति परमोदत सर्व ही बहुनामि गुण गाया ॥ ३७७ ॥

कोड भजे हरि श्याम विरंचेई इन्द्र शशि सरिता सिरांवो. महेस गणेस शिवा दुर्गा जलधाउ वायुर माई तरासो.जक्ष सुरासुर नाग गणे जग नायक संगत अनेक

घरांको, सर्वीत तारक उत्तम श्रीजिन सेवक शान्ति करांको ॥ ३७८ ॥

॥ श्रेष्ट—साधु ॥

महिला परच्यो छांड़ दियो भले भये निग्रन्थ, सेज संतोष आत्म वस चले मुक्ति के पंथ, चले मुक्ति के पंथ संततो ऐसा कहीये, धीर वीर गंभीर गुणा कर गिरवा लहिये, परउपकारी साधजी तिरण तारण की जहाज, कर जोड़ी हुं नित नमुं धंन मोटा मुनिराज ॥ ३७९ ॥

॥ जिव रक्षा ॥

जिव दया सुत्तर में ठांम २ कही जिन, जिव के वचायां पाप कठे नहीं जाणीये. दसमां अंग के मांही ज्ञानी दीयो फरमाई, सर्व जीव दया काज कही जिन वांणीये, सुत्तर आगम टिका चुरण पईना मांही, जहां २ ताहां २ जोवो जिव दया ही वखाणीये. दया रूचे कोई पुंन्यवंत केरा घट मांहीं, निंदक कषाई मांस खावे ज्यांने तांणीये, सवैयो सचायो कीनो धनासरी नांम दीनों, ज्ञानी के वचन सत हिरदा में टांणीये ॥ ३८० ॥

सैणिक राजा के सुत्त हाथी भव दया पाली, मेघरथ राजा दया काज मांड्यो मरणों, धर्म रूचि दया धार कर गया खेवा पार, श्रेणिक वजायो पडो सुत्तर में निरणां, नेमजी ने दया पारी छोड़दी राजुल नारी, मेतारज दया

पारी मेट दीयो मरणों, तेवीसमां जिनराये तापस के पास जाये, नाग को बचाये दियो नोकार को सरणों, सवैयो सवायो किनो धना सरि नांम दीनों, जीव दया धर्म पाळो ज्यो थे चाहो तिरणों ॥ ३८१ ॥

॥ सीता स्वयंम्बर ॥

जुडे जहां धीर रघुवीर सभा राजन की, तां दिन लौन क्यों न चटाई चांप बांण की, परण्यो हे जहां की रिख तृण हे तोरे तांई, वरणी न होई ये जरणी जांन की, पांनी पर तिरे पत्थर पहाण पगार पर, अगले न उडे सुवान कंचन ज्यूं पान की, रावण की राणी मुख वानी वहु स्यानी, कहे जानकी न आनी तंत निसानी घर जानकी ॥ ३८२ ॥

॥ मंदोदरि—शिक्षा ॥

लंकापत राणी समझावत हे वार २, वोही रांमआये तिनकी राणी हर आनी हे, सिख हु न मांनी कंथ भयो अभि मानी, ये नार हे विरानी तुम कहा जान घर आनी है, तेरी भई जो दिवानी तेरी वुद्ध जो हरानी, तिन लोक की थरानी सो मेरी म्हारानी हे, च्यार वेद में वखांनी तिन में गाड हम टानी, मेरी मुक्ति की निशानी सो भवांनी जान आनी हे ॥ ३८३ ॥

॥ बड़ा पदपांना ॥

पहले थे हम मर्द मर्द की नार कहाये, कर गंगा स्नान शिल्ला सें युद्ध कराये, हुवे समुद्र पार घाव वरछी के खाये, इतने कष्ट हमने सहे तब वड़ा पद पाये ॥ ३८४ ॥

॥ मुर्ख को ज्ञान नही ॥

आंधे कों वेठ के दिखाइये आरसी, वैराकों वैठके वैंण सुनांई, हीरो गंवार के हाथ दियो तब श्वान के अंग सुगंध लगाई, मुर्ख के हाथ तम्बोल की वींड़ी गधा के शिरफ़ुल ओड़ाई, मुढ के आगे ज्ञान कह्यो जैसे भैंस के आगे वेंण वजाई ॥ ३८५ ॥

॥ उपदेशी ॥

पेट चड़े पुनि वहार पड़े पालणा मे चड़े वड़े गोद वना के, हाथ चड़े अरु घोड़े चड़े सुखपाल चड़े चड़े जोम धना के, वैरी ओर मित्र के चित्त चड़े कवि ब्रह्म भणे दीन वीते पनाके, इश कृपालु कों जाण्यो नही अव खांधे चड़ चाल्यो चार जणां के ॥ ३८६ ॥

॥ प्रथंम जिन ॥

धनुप तन पांन से वर्ण कंचन मय चौंरासी लक्ष पूर्व आयुप को धार है, अयुध्या सें गिरि कैलाश पे कर्म हनी वृपभ को चिह्न लख आतम निहार है, छांड़ के

स्वार्थ सिद्ध इक्षु के वंश मांही नांम श्री ऋषभनाथ त्रिविध दुःख टार हे, श्री नाभिजि के प्यारे मरू देवी मात वाले नयन शिव दुलारे, ते ठाकुर हमारे है ॥ ३८७॥

॥ आयुष्य अथीर ॥

ये मेरे देश विलायत हे गज ये मेरे घोड़े ये मेरे हाथी, ये मेरे कांमनी केल करे नित ये मेरे सेवक है दिनराति, ये मेरे पुत सपुत कहावत ये मेरे न्याति ये मेरे गोती, सुन्दर देख ही छोड गयो तेल जल्यो ने बुझगइ बाती ॥ ३८८ ॥

॥ गुरूबिन—ज्ञान नहीं ॥

पड्या के ने बैठे पास अक्षर न बांच सकें, विनांही पड्या कहो केसे वांचे फारसी, जौंहरी के मिल्या बिन हाथ ल्न लिया फीर, बिनाही जौंहरी वांको सांझो कुण टारसी, वैद्य के मिल्या बिन औषधी बतावे कोन, बिनाही वैद्य मार्गें औषध हे आरसी, सुन्दर कहत पट गुरू बिना ज्ञान नेंन, अंधन मे आरसी ॥ ३८९ ॥

॥ पंथी—मुसाफीर ॥

फूटोनी नगर आय पंथी जीव वस्यो आय, रत्न के निधि मानों मोक्ष ज्यांको घर है, मिथ्याति शीकारी काम मोह अवदाग नारी, कांमादि तस्कर चोर दुष्ट बुरे न है, नीव नो अचेत मोह खोन निज संपदाको, तेह गुरू

पहेरेदार पुकारे दया कर है, गाफिल न सोवे भ्रात हुइ है अंधेरी रात, जाग जागरे वटाउ यहां चौरन को डर है ॥ ३९० ॥

॥ बच्चों के लाड़ से हांनी ॥

लड़का राखियो अटक में मति चड़ावो शीश, नित्य प्रत लाड़ लड़ावतां विगड़े विसवा विस, विगड़े विसवा विस हाथ हुंदर नही आवे, वेठ सभा के वीच उंच पदवि नही पावे, कहै गिरधर कविराय सुनोंरे उसके घर का, मति चड़ावो शीश फेर नहीं सुधरे लड़का ॥ ३९१ ॥

॥ हंसका वंसखोना निच काग ॥

मगन हंस दिल विच निच कों पांख में धरिया, अन्तर आनी राग कागकूं अलगा करिया, अलगा करिया काग ऊड़ निज वन्न कों चाल्या, मुंह से कतरी पांख हंस को नीचे डाल्या, हंस वन्स का खोवन वाला नही मान्यां उपकार नाड़ से दिना हंसा, यह जगत की रित प्रित कहा किनसें कीजे, कहे जैनि जिन दास मोंन कर बैठो रहीजै ॥ ३९२ ॥

॥ खीचड्यो वैराग्य ॥

लागत है भुख वेग मिलत न अन्न नित, मन में विचारे सुखी दिसे अणगारी है, परखदा में कर जोड़ कहे मुनि राज सेती, दीजिये संयम मोय संसार असारी है, मात कहे

नन्दन में आज्ञा है मेरी तुझे, भोजन जीमीने फिर होजो
दीक्षा धारी है, खीचड़ी में घृत खुब जीमत ही भुल्यो
धर्म, खीचड्यो वैरागी रिख तिलोक ऊचारी है ॥ ३६३ ॥

॥ मसाराग्यो वैराग्य ॥

तरुण उमर मांही मरजावे कोई जन, होवत उदास मन झुरे नर नारी है, संसार असार सब सुपना की माया सम, एक दिन सबही कों जानो निराधारी है, छोड़िये संसार फन्द करत विचार जन, जलाय के स्नान करी आवे घर वारी है, मोह मदिरा में अंध करे फिर घर धंध, मसाण्यो वैराग्य रिख तिलोक ऊचारी है ॥ ३९४ ॥

॥ दस बोल दुर्लभ ॥

जैसे साहुकार की हवेली आय लागी लाय, धबड़ २ जल रही जैसे होलका, देख साहुकार होशियार हो निकाले सार हीरा मणि मोती रतन अमोल का, काया झोंपड़ी में जरा मरण की लागी लाय, धर्म ध्यान करो भाई कांम नहीं पोल्का, कहत हजारीमल ज्ञानि वचनों के वल, दुर्लभ रतन जीन जोग दश बोल्का ॥ ३९५ ॥

॥ श्रमण आलोचना ॥

ज्ञानहु को चोर दया दानहु को चोर, तप त्यागहु को चोर करो चोर अरि हंतको, आचार गोचार धर्म

ध्यानहु को चोर, व्रत रूपहुको चोर भाव चोर भगवंत को. अनंती २ वार लियो है संयम भार, मारग उपट चल्यो कु गतिका पंथको, कहत हजारी मल ज्ञानी वचनों के बल, निगुण धरायो मुढ, नाम निगरंथ को ॥ ३९६ ॥

॥ प्रमाद सें हांनी ॥

ज्ञानमे आलसी घणों ध्यान मे आलसी घणों, तप मे आलसी घणों खावण में सुरमों, लाडू खाउं पेडा खाउं घेवर जलेबी खाऊं मालपा मगद खाउं, खाउं बाटी चुरमो, दही खाउं दुध खाउं, घृत खाउं गुड़ खाउं, खांउं २ लागी खिक पेट भरो पुरमों, कहत हजारीमल ज्ञानी वचनों के बल. आनम कल्याण सेती रह्यो घणों दुरमों ॥ ३९७ ॥

॥ शिष्य लोभ ॥

मेरो चेलो होजा झट बताउं चित्तौड़ गड़, जेपुर ने ऊदेपुर रत्नपुरी जात्रसुं, जोधाणे बीकाणे मेरनाणे, अजमेर दिल्ली कोटा बुंदी सुरत मुंबई परसावसुं, लाडू पेडा घेवर और जलेबी बदाम सींग, मेवा पकवान निन नवाही खवाव सुं, कहत हजारीमल ज्ञानी वचनो के बल, वाग मे लगाई आग चेलाजी के चावसुं ॥ ३९८ ॥

॥ शिष्या लालच ॥

मेरी चेली होजा भोली लेउले पानरा ओली, खावांगा पुरन पोली छोड़ गांदा धोवणो, ओ ढले चादर धोली

आपणी बनावां टोली, विचरांगा होली २ छोड़ रोटा पोवणों, रोटा माटे आई मोली पछे उची नीची बोली, पातरा भरीक नाख्या जदी लाग्यो रोवणों, कहत हजारीमल ज्ञानी वचनों के बल, चेला चेली काज करयो संयम डुबोवणों ॥ ३९९ ॥

॥ जैसे गुरु जैसे चेले ॥

कुदेव के पास जावे हाथ जोड़ आज्या खावे, रगड़ २ नाक सारो दिन सेवता, धुप लावो दीप लावो नारेल नैवद्य लावो, भेट लावो पुजा लावो लावो २ केवता, तुंतो जावे देव पास देव थारी करे आस, दिल में विचार देख देवता के लेवता. कहत हजारीमल ज्ञानी वचनों के बल, भाटला की नाव जैसे अन्ध नर खेवता ॥ ४०० ॥

॥ कर्म दोष भाव रोग ॥

कोईक बतावे दोष माता भेरूं देवता को, कोईक बतावे ग्रह गोचर की छायां है, कोई जो कहत, देख लिख्यो है विधाता लेख, कोई जो कहत सब रांमजी री माया है. एक रोगी नो नो मता पुरा नही पावे पत्ता, ज्ञान बिन खावे खत्ता भोला भरमाया है, कहत हजारीमल ज्ञानी वचनों के बल, आपणा कमाया कर्म अब उदे आया है ॥ ४०१ ॥

॥ बुढांपो ॥

धग २ करे पग डग २ करे नाड़, तग २ करे नेण पूरो नही सुजे हें, कड़ २ करे हाड़ सड़ करे नाक, गड़ २ करे पेट हाथ घणां धुजे हे, कांना नही सुणे हाका भण २ करे माखा, ऐसा दुःख बुढापाका डोकरो अमुजे है, कहत हजारीमल ज्ञानी वचनों के बल, अहो जीव आतम तुं अब क्यो न बुजे है ॥ ४०२ ॥

॥ आत्म—पश्चाताप ॥

संजम विराधी पापी भवनपति में गयो, संयम विराधी भुत प्रेत होई आयो हुं, संयम विराधी रवी शशि अभियोगी हुवो, संयम विराधी कन्दरपि देव थायो हुं, संजम विराधी गत्ति च्यार में रूल्यो हे पापी, गरज न सरी काल अनंतो गमायो है, कहत हजारीमल ज्ञानी वचनों के बल, महा मुढ चिंतामणी हार दुःख पायो है ॥ ४०३ ॥

॥ चेला वश दोष ॥

अहा कम्मं उदे सियं पुई कम्मं मिसि जाय, ठवणां पाहुड़ि आए दोष केई लागा है, वस्तर पातर अन्न पाणी वा मकान काज, अति क्रम व्याति क्रम दोषण अथाग है, भला बुंडा पुदगल थारा मारा कर कर, क्रोध मान माया लोभ लाखों वार लागा है, कहत हजारीमल ज्ञानी वचनों के बल चेला चेली काज महा मुल व्रत भागा है ॥ ४०४ ॥

॥ श्रावक—आलोचना ॥

गाय भैंस पाड़ा पाड़ी बांध्या हैं झकड़ बंध, लाठियो ं कुट चांम छेदन कराईया, अति भार भर भात पाणी का ंवंद कर, निकलंक के माथे कूड़ कंलक धराईया, केही की गुपत वात जणाइ पंचो में जात, मरम प्रकाशने से जीव दुःख पाईया, कहत हजारीमल ज्ञानी वचनों के बल, खोटी शाख कूड़ा लेख लिखि वा लिखाईया ॥ ४०५ ॥

जाण के चुरायो धन लियो है विगाड़ मन, चोरन में साज दिया हांसल चुराईया, कूड़ा तोल मांप केल खरा मांही खोटा भेल, ईतर कालकी नारी साथे भोग कराईया, अ शादी कुंवारी संग किया है क्रिड़ा अनंग, पराया विवाह नाता कर हरषाईया, कहत हजारीमल ज्ञानी वचनों के बल, कांम भोग सेवन में तिव्र भाव आईया ॥ ४०६ ॥

परिग्रह खेतु वत्थु धन धान सोना चांदी, दोपद चोंपद कुवि अधिक वधाईया, दिशी मरजाद देख वधाई घटाई एक, पंथ जाता शंका पड़ी फेर आगे जाईया, पच्छ-खाण उपरंत सचित आहार कर, सचित से प्रतिवन्ध तोड़ तोड़ खाईया, कहत हजारीमल ज्ञानी वचनों के बल, अपक दुपक तुच्छ भखिया भखाईया ॥ ४०७ ॥

इंगाल करम वन्न साड़ी भाड़ी फोड़ी दंत, लखरस विष केश जन्तु पिलणाईया, निलछण दवगी दावण जल

॥ बुढापो ॥

धग २ करे पग डग २ करे नाड़, तग २ करे नेण पूरो नही सुजे हैं, कड़ २ करे हाड़ सड़ करे नाक, गड़ २ करे पेट हाथ घणां धुजे हे, कांना नही सुणे हाका भण २ करे माखा, ऐसा दुःख बुढापाका डोकरो अमुजे है, कहत हजारीमल ज्ञानी वचनों के बल, अहो जीव आतम तुं अब क्यो न बुजे है ॥ ४०२ ॥

॥ आत्म—पश्चाताप ॥

संजम विराधी पापी भवनपति में गयो, संयम विराधी भुत प्रेत होई आयो हुं, संयम विराधी रवी शशि अभियोगी हुवो, संयम विराधी कन्दरपि देव थायो हुं, संजम विराधी गत्ति च्यार में रुल्यो हे पापी, गरज न सरी काल अनंतो गमायो है, कहत हजारीमल ज्ञानी वचनों के बल, महा मुढ चिंतामणी हार दुःख पायो है ॥ ४०३ ॥

॥ चेला वश दोष ॥

अहा कम्मं उदे सियं पुई कम्मं मिसि जाय, ठवणां पाहुड़ि आए दोष केई लागा है, वस्तर पातर अन्न पाणीं वा मकान काज, अति क्रम व्याति क्रम दोषण अथाग है, भला भुंडा पुदगल थारा मारा कर कर, क्रोध मान माया लोभ लाखों वार लागा है, कहत हजारीमल ज्ञानी वचनों के बल चेला चेली काज महा मुल व्रत भागा है ॥ ४०४ ॥

॥ श्रावक—आलोचना ॥

गाय भैंस पाड़ा पाड़ी बांध्या है झकड़ बंध, लाठियो में कूट चांम छेदन कराईया, अति भार भर भात पाणी का विछेद कर. निकलंक के माथे कूड़ कलक धराईया, केही की गुपत वात जणाइ पचों मे जात, मरम प्रकाशने सें जीव दुःख पाईया, कहत हजारीमल ज्ञानी वचनों के बल, खोटी शाख कूड़ा लेख लिखि वा लिखाईया ॥ ४०५ ॥

जाण के चुरायो धन लियो है विगाड़ मन, चोरन को साज दिया हांसल चुराईया, कूड़ा तोल मांप केल खरा मांही खोटा भेल, ईतर कालकी नारी साथे भोग कराईया, अशादी कुंवारी संग किया है क्रिड़ा अनंग, पराया विवाह नाता कर हरषाईया, कहत हजारीमल ज्ञानी वचनों के बल, कांम भोग सेवन में तिव्र भाव आईया ॥ ४०६ ॥

परिग्रह खेतु वत्थु धन धान सोना चांदी, दोपद चौपद कुवि अधिक वधाईया, दिशी मरजाद देख वधाई घटाई एक, पंथ जाता शंका पडी फेर आगे जाईया, पच्छखाण उपरंत सचित आहार कर, सचित सें प्रतिवन्ध तोड़ तोड़ खाईया, कहत हजारीमल ज्ञानी वचनों के बल, अपक दुपक तुच्छ भखिया भखाईया ॥ ४०७ ॥

इंगाल करम वन्न साड़ी भाड़ी फोड़ी दंत, लखरस विष केश जन्तु पिलाईया, निलछण दवगी दावण जल

शोशणियां, असई पोषण कर्मादान कमाईया, कन्दर्प जागणी कथा भांड कु चेष्टा तथा, मोहरी वचन अधीकर्ण ही जोड़ाईया, कहत हजारीमल ज्ञानी वचनों के वल, उपभोग परिभोग अधिक वधाईया ॥ ४०८ ॥

सामायक में लिया ओटा ओर पाप किया खोटा, वेगारी ज्यों विनय हीण विषे गीत गाईया, रोलनेकी तोल सट्टा विकथा ने हांसी ठट्टा, छाती माथा कुट २ क्लेश ने मचाईया, वांधी है मुहपति फाटी मन में अनेक आंटी, आवे नहीं पुरी पाटी सुनाइ जगाईया, कहत हजारीमल ज्ञानी वचनों के वल, सामायक मांही दोष वत्तिस लगाईया ॥ ४०९ ॥

दशमां पोषा में नेमी भूमि सें वाहिर थकी, वस्तर मंगाके फिर पाछा मोकलाईया, शब्द सुनाय केन रूपसे दिखाय नेण तथा कर सेन पुदगल सें जणाईया, पोषा पड़ि पुरण में अ पड़िलेहा दुपड़िलेहा, अ पमज दु पमज पुरा न पलेईया, कहत हजारीमल ज्ञानी वचनों के वल, साल भर मांही एक ऐसा पोषा ठाईया ॥ ४१० ॥

॥ मोह दशा ॥

रवि के उदय अस्त होत नित आयु जात, जिनको न ज्ञाने ठाने पापको पसारो है, कारज विचारे भुरि भार-सिर धारे क्रुरि, नेन ना निहारे शत्रु कालसो करारो है,

जनम जराकुं देखे विपति मरन पेखें, भयको न लेश उर ग्यान न उजारो है, गयो सब ज्ञान युं, प्रमाद के प्रताप भयो, मोह मद् पान ते जहान मतवारो है ॥ ४११ ॥

॥ संतोष धन ॥

पुन्य योग पामे धन रजत्त कनक खान, पोरस रसान वर रतन निधान हैं, हीरा नील विद्रुम गोमेध पुखराज, पन्ना माणिक लसन मोती पारस परवान है, भूमि ग्रह भूषण वसन यान, भांजन आयुध सैना स्त्री पशु, गजा दी महान हैं, कहे अमीरिख जब आवत संतोष धन, तांके ढीग सब धन धुल के समान है ॥ ४१२ ॥

॥ विभाव दशा ॥

करम अधीन मुढ विकल अनादिहु सें, भयो न प्रकाश ग्यान आतम परम को, जो जो पुदगल के संयोग दिशा, चेतन की मोही निज मानत न भांजत भरम को, ज्ञानादिक गुण से जो होयके विमुख रहे, जाने पुदगल रुप आतम धरम को, ऐसो घट विभाव अज्ञान वसि रहयो जांके, कहे अमिरिख वन बंढ़े हैं करम को ॥ ४१३ ॥

॥ सोला रतन ॥

गोमेध रतन अंक रतन फटिक वर, लोहि ताक्ष मरकत कयो सुविचार के, मसारग और भुज मोचक सुइन्द्र

नील, चंदन गौरिक हंस गरभ उचारके, पुलक रतन नाम सौगंधि जानो पुनि, चन्द्र प्रभ वैडूर्य मौल जुं अपार के, जलकांत सोलमो सुनाम कहे अमिरिख, दाखे जिन रतन ये सोड़स प्रकार के ॥ ४१४ ॥

॥ समय की खुबी ॥

बेटा झगड़त बाप से करत त्रिया से नेह, बार २ युं कहत है हमें जुदा कर देह, हमें जुदा कर देह घर में चीज सब मेरी, नही तो करेंगे ख्वार पतिया जायगी तेरी, कहे दिन दर्वेश देखो कलीयुग का टेटा, समय पलटियां जाय बाप से झगड़त बेटा ॥ ४१५ ॥

॥ पुराय की खुबी ॥

जब लग पोते पुण्य है तबलग संपत जाण, संपत से लच्मी रहे शंका दिलमत आंण, शंका दिलमत आंण जाण युं सुकृत कीजे, जिनसे वधे फिर पुण्य माया सो कबहु न छीजे, तिलोक रिख कहे कुंप जल उलच्या होत सवांण, जबलग पोते पुण्य है तबलग संपत जाण ॥ ४१६ ॥

॥ स्वभाव नही पलटना ॥

बुरा भलाइ ना करे कीजे क्रोड विलास, जैसे तरुवर नीम का तजे नहीं कड़वास, तजे नही कड़वास पास गंगो दक छल के, तिम २ भरे विशेष देखो दशोदिस करके,

कथे सुरतिया कान तजे न काजलताई, कीजे क्रोड़ उपाय कग नहीं करे भलाई ॥ ४१७ ॥

॥ रोटी विषय ॥

रोटी तुझे भी रंग है पावे सब संसार, ज्ञानी तो ज्ञान धरे जबलग पहुँचे आहार, जबलग पहुँचे अहार पार पगगन बुझे, अन्न देव बिनबात और कुछ नाही सुझे, कथे सुरतिया कान सब देवन में मोटी, पावे सब संसार रंग है तुझ भी रोटी ॥ ४१८ ॥

॥ स्वर्ग अधिकार ॥

त्याग दया तप संयम शील क्षमा, सत वेण सदा उचरे जो, दान करे नहीं मान धरे धन नार पराई कों दुर हरे जो, इन्द्रिया पांच करे वस में न फसे रसो में जिन वेण वरे जो, कृष्ण रहे इस लक्षण से नर स्वर्ग में वास निवास करे जो ॥ ४१९ ॥

॥ श्रावक का लक्षण ॥

जीव अजीव कों जानत है पुनि बंधक भेद में पुरण ज्ञाता, [illegible] पाप को त्यागे सदा, और पुण्य की रीत में विज्ञ [illegible]. सम्बर निर्जरा मोक्ष को धारत, धर्म के रंग में है [illegible]. कृष्ण कहे जिनराज के श्रावक ऐसे गुणी अम्मरा [illegible] ॥ ४२० ॥

॥ शील प्रभाव ॥

शील से सीतल आग हुवे, शूर किंकर होय के पांय परे है, पीयुष के सम जेर बने, मृगराज अजा सम होय डरे है, पुष्प की माल समान अहीं सब भुत पिशाचहु सेव करे है, कृष्ण कहे शील पाले सदा नर सो शिव सुन्दर वेग वरे है ॥ ४२१ ॥

॥ मुर्ख को उपदेश वृथा है ॥

मुरख को हित सीख दियां, बुद ज्ञान घटे न वधे चतुराई, कोटि उपाव करें नर चातुर, धातुर वाद करो चित्त लाई, मुरख तो उल्टा हि परे जिम पन्नग को पय पान कराई, भज्जु कहे जिम मुरख को शुद्ध ज्ञान दियां विष होय अघाई ॥ ४२२ ॥

॥ मुर्ख—पहिचान ॥

खाय पीयके सोय रहे अरू, बात करे परकी अनजानी, सिख जो मानत नाही भली, एक तानत है अपनी मन ठांनी, दोय जने बतराय रहे ताहां, जाय के ऊभो रहे अभि मानी, भज्जु कोई मुरख के सीर, नते कहा होत पिछानी ॥४२३॥

॥ चतुर जन पहिचान ॥

बात विचार करे सु विचार भले गुण कीरत के अग-

मानी, पारकी होइ कबु न करे कछु, सीख दिया हितकी कर मानी, ज्ञान ध्यान में रक्त रहे जैसे सन्त रहे अपनी धुनि ध्यानी, भज्जु कहे कोई चातुर के सिर पंकज ते कहां होत निशानी ॥ ४२४ ॥

॥ सवालका—जवाब—देने में न चुको ॥

मात पिता तो शत्रु भये अरु राजा हु न्याय करे नही चंगो, कर्म उदे भये अपन के अब भोगविये सुख दुःख है जंगो, उत्तर मे नहीं चुकिये चातुर दीजिये उत्तर जैसे को तगो, नाचन कुं तो तयार भई भज्जुलाल कहे अब घपट कैसो ॥ ४२५ ॥

॥ चार कषाय का सवैया ॥

प्रथम कषाय वश पड्यो है जगत जीव, आदि केरी चोकडी में उम्मर गमाइ है, क्रोध है पत्थर लीक मान है वज्रथंम, मुड्यो न मुड्त जा की एमी करडाइ है, माया है बांस की जड लोभ है कृरमची रंग, धोयो न धोवत ताकी एसी छबी छाइ है, मरि जात नरक घोर ताकुं नहीं ओर ठोर, एसो दुष्ट जीव जैन, समकित न पाइ है ॥ ४२६ ॥

जासुं आगे चोकडी को, नाम है अप्रत्याख्यान, जामें जीव वर्ष एक केरी स्थिति पाई है, क्रोध मान माया लोभ जामे जीव नहीं लोभ, आदि केरी चोकडी मृ अति

हलकाई है, क्रोध है तलाव की लीक, मान दांत केरो थंभ, माया मींढा सींग सम, लोभ है मोरी केरो रंग, तांको नहीं होत भंग, मरीने तिर्यंच होय वृति न आई है ॥ ४२७ ॥

प्रत्याखानी चोकड़ी में, वस्यो है चेतन राय, जीव चार मास केरी स्थिति पाई है, क्रोध है वालु की क मान बेंत केरो थंभ, पिछली सें कछु कम ज्ञानी बतलाई है, माया बैल केरो मुत समय की नहीं कुत, धर्म सेती राखे हित श्रावक वृति थाई है, लोभ है गाड़ा के खंजन को रंग तासुं जीव राखे संग, मनखा देह छांड़ि जीव मनुष्य देह पाई है ॥ ४२८ ॥

॥ दुनियां में—तेहवार ॥

श्राद्ध तेहवार सोतो कागला निमित करे, दशहरा तेहवार सोतो हत्यारों कहवाई है, दिवाली तेहवार तेऊ विकल इन्द्री की घात होय, होली को तेहवार जामें अकल गमाई है, तीजको तेहवार जामें विषय विपतपुर, राखी को तेहवार जामें दिखे मंगताई है, परब पजुशन तेहवार जीव-न की दयापाल, धर्म के तेहवार विन हंसा दुःखदाई है ॥ ४३४ ॥

॥ जिनराज सें अर्जी ॥

मैंने दरखास्त दीनी है तुम्हारे पास, साहब जिनराज अर्ज मेरी सुन लीजिये, मै हुं गरीब मेरी करेगा वकीली कोन, पारस प्रवीण मिसल मेरी याद कीजिये, मालिक अदालत के आप है, अबकी अपील में न्याव मेरा करके प्रभु रिजिये, करता हुं अपील लड़ता हूं मजलि में, खर्चा न है खजाने देता मत खीजिये, हारूं तो हजुर में पड़ा रहुं, जीतुतो जिन-राज नित आत्म रस पीजिये, क्रोध लोभ कपट मान चारों वड़े वेईमान, कैसा है उपाय वो इनको हनीजिये, मैं हुं गुनहगार रोम रोम भरा विकार, कोई कानुन से वचा काम है निज ये, पन्नालाल की अर्ज प्रभु पारस का फर्ज, नृप मोह सदा रहे दुर तेरस ज्यों तीजिये ॥ ४३५ ॥

॥ दुनियां में—तेहवार ॥

श्राद्ध तेहवार सोतो कागला निमित करे, दशहरा तेहवार सोतो हत्यारों कहवाई है, दिवाली तेहवार तेऊ विकल इन्द्री की घात होय, होली को तेहवार जामें अकल गमाई है, तीजको तेहवार जामें विषय विपतपुर, राखी को तेहवार जामें दिखे मंगताई है, परब पजुशन तेहवार जीवन की दयापाल, धर्म के तेहवार विन हॅसा दुःखदाई है ॥ ४३४ ॥

॥ जिनराज सें अर्जी ॥

मैंने दरखास्त दीनी है तुम्हारे पास, साहब जिनराज अर्ज मेरी सुन लीजिये, मै हुं गरीब मेरी करेगा वकीली कोन, पारस प्रवीण मिसल मेरी याद कीजिये, मालिक अदालत के आप है, अबकी अपील में न्याव मेरा करके प्रभु रिजिये, करता हुं अपील लड़ता हूं मजलि में, खर्चा न है खजाने देता मत खीजिये, हारूं तो हजुर में पड़ा रहुं, जीतुतो जिनराज नित आत्म रस पीजिये, क्रोध लोभ कपट मान चारों वड़े वेईमान, कैसा है उपाय वो इनको हनीजिये; मैं हुं गुनहगार रोम रोम भरा विकार, कोई कानुन सें वचा काम है निज ये, पन्नालाल की अर्ज प्रभु पारस का फर्ज, नृप मोह सदा रहे दुर तेग्स ज्यों तीजिये ॥ ४३५ ॥

॥ ब्रह्म पहीचान ॥

ऋषी कोऊ पय पान करे, और कोइक खात है नाज अलुना, कोई तजे घर-बार रहे बन, कोउक साधत है नित पोना, कोइक वाद-विवाद करे पुनि, कोइक राखत है मुख मोना, सूरि दया परिब्रह्म बिना, योंही जानिये या नर जन्म का खोना ॥ ४३६ ॥

॥ दया धर्म बिन और वृथ ॥

अंग बभूति लगावत है, नख राखत है सिर ऊपर केसा, कोउक लोच करावत है पुनि, भद्र कराये धरे बहु भेसा, छाप तिलक जप माल गले, देव कांग नित फिरे बहु देसा, सूरि दया प्रभु नाम बिना नर, वाद करे तन कष्ट कलेसा ॥ ४३७ ॥

॥ ऊंट को ऊंट ही रहे ॥

खारक दाख बिदाम कों छांडी, चकोर को अग्नि अत्यन्त सुहावे, चन्दन से तन लेपत है खर, आखिर तोही राख लगावे, मध्यम् को कहा सीख देह हित, माने नही शठ नीच कहावे, सूरि दया कहे कोटही वेर युँ, ऊंट को ऊंट कटारो ही भावे ॥ ४३८ ॥

॥ स्याद—वाद—वाणी ॥

एक जपे मुख राम रहीम कों, एक जपे शिव शक्ति

अज्ञानी, न्याय मीमांसक तर्क पतंजल, बोधमती कहे बुद्ध प्रमानी, एक जपे करतार अलेख कों, एक जपे ब्रह्मवेद पुरानी, स्याद्वाद कहे जिन आगम श्री दया सूरि सुधा रसवाणी ॥ ४३९ ॥

॥ हंसी—मतकरो ॥

लक्षण चन्द्र में ताप दिनंद में. चंदन मांही फणीन्द्र को वासो, पंडित निर्धन सधन है शठ, नारी महा हठ को घर खासो, हिम हिमालय खारो है वारिधि, केतकी कंटक कोटि को पासो, देखो धर्मसीह है सब को दुःख कोउ करो मत काउ को हांसो ॥ ४४० ॥

॥ काया—नगरी ॥

देख हु जोर जरा भटको, यमराज मही-पति को अगवानी, उज्वल केस निशान धरे, बहु रोगन की संग फोज पलानी, काया पुरी तज भाग चल्यो जीह, आवत यौवन भूप गुमानी, लूट लही नगरी सगरी, दिन दोय में खोई है नाम निशानी ॥ ४४१ ॥

॥ सत्यवादी के गुण ॥

पावक तेजल होत वारि धर ते थल होत, सस्त्र ते कमल होत ग्राम होत वनते, कुपते विवर होत, पर्वत ते घर होत वासव ते दास होत, हितु दुर्जन ते सिंह ते कुरंग होत

व्याघ्र बाल संग होत विषते पीयुष होत, माला अहीं फन ते, विषम ते सम होय संकट न व्यापे कोय एते गुण होय सत्यवादी के दर्शनते ॥ ४४२ ॥

॥ एक औरत चिजें—ईतनि ॥

ऊखल मुसल लाओ, हांडी कुंडी चाटू लाओ, चालणी सूपड़ा थाली बुहारी मंगाई है, रोली लाओ माचो लाओ, सोड़ अने सुई लावो, छोटा मोटा बाटका पंडेरी मन भाई है, रसोइ करन बैठूं चुन-दाल-घृत-गोल-गुड़-खांड़-लुण मिर्च आछी लाओ राई है, इतनो मंगायो कहो जीरो हींग लाया नहीं, ऋषिजी कहेरे नारी महादुख दाई है ॥ ४४३ ॥

॥ साई दीन का—सवैइया ॥

जीव ठेट का कोल तो भुलगया, योंही पेट के काज भटकता है, कूड़ कपट झपट करे, लालच लपट लटकता है, हराम कामतो बहुत किया, साहिब का नाम अटकता है, सांई दीन कहे अकडे मती, तोए पकड़ के काल पटकता है ॥ ४४४ ॥

॥ मन मगरूर ॥

मगरूर मस्त क्यों हो रहा तेरे तन को कालतपा-

अज्ञानी, न्याय मीमांसक तर्क पतंजल, बोधमती कहे बुद्ध अमानी, एक जपे कर्तार अलेख कों, एक जपे ब्रह्मवेद पुरानी, स्याद्वाद कहे जिन आगम श्री दया सूरि सुधा रसवाणी ॥ ४३९ ॥

॥ हंसी—मतकरो ॥

लक्षण चन्द्र में ताप दिनंद में. चंदन मांही फणीन्द्र को वासो, पंडित निर्धन सधन है शठ, नारी महा हट को घर सो, हिम हिमालय खारो है वारिधि, केतकी कंटक टि को पासो, देखो धर्मसी है सब को दुःख कोउ करो मत काहू को हांसो ॥ ४४० ॥

॥ काया—नगरी ॥

देख हु जोर जरा भटको, यमराज मही-पति को अगवानी, उज्वल केस निशान धरे, बहु रोगन की संग फोज पलानी, काया पुरी तज भाग चल्यो जीह, आवत यौवन भूप गुमानी, लूट लई नगरी सगरी, दिन दोय में खोई है नाम निशानी ॥ ४४१ ॥

॥ सत्यवादी के गुण ॥

पावक तेजल होत वारि धर ते थल होत, सस्त्र ते कमल होत ग्राम होत वनते, कुपते विवर होत, पर्वत ते घर होत वासव ते दास होत, हितु दुर्जन ते सिंह ते कुरंग होत

व्याघ्र बाल संग होत विषते पीयुष होत, माला अहि फन ते, विषम ते सम होय संकट न व्यापे कोय एते गुण होय सत्यवादी के दर्शनते ॥ ४४२ ॥

॥ एक औरत चिजें—ईतनि ॥

ऊखल मुसल लाओ, हांडी कुंडी चाटू लाओ, चालणी सूपड़ो थाली बुहारी मंगाई है, रोली लाओ माचो लाओ सोड़ अने सुई लावो, छोटा मोटा बाटका पंडेरी मन भाई है, रसोइ करन बैठूं चुन-दाल-घृत-गोल-गुड़-खांड़-लुण मिर्च आछी लाओ राई है, इतनो मंगायो कहो जीरो हींग लाया नहीं, ऋषिजी कहैरे नारी महादुख दाई है ॥ ४४३ ॥

॥ साईं दीन का—सवैइया ॥

जीव ठेट का कोल तो भुलगया, योंही पेट के काज भटकता है, कूड़ कपट झपट करे, लालच लपट लटकता है, हराम कामतो बहुत किया, साहिब का नाम अटकता है, सांई दीन कहै अकडे मती, तोए पकड़ के काल पटकता है ॥ ४४४ ॥

॥ मन मगरूर ॥

मगरूर मस्त क्यों हो रहा तेरे तन को कालतपा-

ता है, धन माल मुलक में जान तेरा देख देख भला जुग जाता है, गाफिल क्यों होश्यार रहो साहिब का लाल चेताता है, तेरे मन माने सोई कर प्यारे सांई दीन तो हक दरसाता है ।।४४५।।

॥ अल्प—आयु ॥

जीव तुच्छ जीवन के वास्ते, जन जन से वैर बसाता तेरा किया तुंही भुगतेगा, जान जहर का बीज क्यों है, राज काज देख फुले मती, फुल्या फुल सोई खिर है, तेरा मन माने सोई कर प्यारे सांई दीन तो-सांच बताता है ॥ ४४६ ॥

॥ काल——नगारा ॥

अन्धा धुन्ध के फन्द में फन्द रह्या. शिर मौत नगारा घुरता है, सोबत सन्तन की नाहिं करी मुहब्बत में मन क्यों धरता है, गर्भवास का कोल तुं भूल गया बेईमान का काम क्यों करता है, सांइ दीन फकीर दुरूस्त कहे, साहेब से क्यों नही डरता है ॥ ४४७॥

॥ संसार-सुपन्न ॥

दिन देख संसार विचार किया, संसार तो रैन का स्वप्ना है, जानबुझ जंजाल में कोन पड़े, तीन काल की ताप से तपना है, जीव मुच्छ साहेब को भुले मती, इस

जुग में कोई नहिं अपना है, सांई दीन कहे कहा मान मेरा, जुग जुग जीवे तोई स्वप्ना है। ॥४४८॥

॥ वैश्यां का उपदेश ॥

शुभ काज को छोड़ कु काज करे, वृथा धन जात सदा जिनको, एक रांड बुलाय नचावत है, नहिं आवत लाज जरा तिनको, मृदंग कहे धृक है धृक है सुर ताल कहे किनको किनको, तब उत्तर रांड बतावत है धृक है धृक है धृक है ईनको ३ ॥ ४४९ ॥

॥ विशाय में-मन चलीत ॥

सज सिणगार गोरी चली ठमके, मुख विराजत चन्द्र पुनिको, मुतियन मांग भरी घुंघट, हिये हार नव लक्ख चुनी को, पग नेवर भणकार करे अति, दर्शन करने चली गुणी को, ईन रीते बन आवत सुन्दर, अब चित्त ठोड कैसे रहै मुनि को ॥ ४५० ॥

॥ विशाय सें-मन दृड़ ॥

पांच को मार दसो दश जीते, ध्यान धरें तीन लोक धनी को, ससार को छाड वेराग मन लावे, स्वाद तजो रसना रसनी को, क्रोध तजो अरू मान तजो, फिर लोभ तजो है दीन दुनी को, इतने वियोग जब योग मिल्यो फिर चित्त ठोड कैसे न रहे मुनि को ॥ ४५१ ॥

॥ पर तिरिया विषय ॥

पप्ये पर नारी का संग बुरा पल भर में पुण्य बिताती है, दिन पे दिन यौवन कों लुटे काढ़ि कलेजा खाती है, राज डंड अरू लोक भंडे फिर धनको आग लगाती है, कूलको कलंक धराके दुष्टन नरको में लेजाती है, सद गुरु के हुक्म से कहुं तुझे, तेरी यम कुटेगा छाती है ॥ ४५२ ॥

॥ जोबन—अंध ॥

जज्जा योवन देख दिवाना, जोर जुल्म क्यों करता है, कूड़ कपट करके ठगबाजी, पर द्रव्य धन को हरता है, निज नाम का काम तो भूल गया, बेईमान का काम क्यों करता है, देख दिन चार का लगा चान्दना, आखिर तो अन्धेरा पड़ता है, सदगुरू के हुक्म से कहुं तुझे, नर्कों मे पग क्यों धरता है ॥ ४५३ ॥

॥ कर्म-फल ॥

कक्का करम की अजब गति है, मत बांधो कोई नर नारी, हँस हँस के ये बांदे जीवड़ा, भुगते जद मुश्किल भारी, छिनमें रावका रंक करे और रंक राव फिर एक सारी, हरि हलधर और पीर पैगम्बर, नही छोडे कोई अवतारी, सदगुरु के हुक्म से कहुं तुझे, कर्मो से कोई

मत करो यारी ॥ ४५४ ॥

॥ मुक्ति-मार्ग ॥

ढड्डे ढब से चाल चलोगे, इसमें सदा सुकाला है, जो कोई झूंठा कलंक लगावे सत मालिक रखवाला है, सेठ सुदर्शन दिया सुली पे उनका उपसर्ग टाला है, विजय कुंवर और विजया कुंवरी, भर यौवन शील सम्हाला है, बारह वर्ष महलों में बीतगया एक सेज पे पाला है, सद गुरू के हुक्म से कहुं तुझे, रे उनको मुक्ति पुमाला है ॥ ४५५ ॥

॥ मोक्ष की लहर ॥

ठट्ठे हैं सब ठाठ निकम्मे इने विखरते देर नहीं, ठाट देखिये अमरापुर का जहां खुध्या वेदना पास नहीं, जन्म जरा नहिं काया बुढापा, रोग शोक वियोग नहीं सदा काल एक सास बीतता रात दिवस अन्धेर नहीं, वहां बैठे सबको देख रहे, कुछ नेकी बदी से काम नहीं, सद-गुरू के हुक्म से कहुं तुझे, वहां किसी को दुआ सलाम नहीं ॥ ४५६ ॥

॥ आतम वस करना ॥

तत्ता तन से करो तपस्या, कर्म दग्ध होजाते है, तुम गंगा युमना क्यों जाते हम शील स्नान बताते हैं, इन्द्री

जीत करो मन वसमें, फिर भक्त में नाहिं आते हैं, जीव दया और अभय दानसे, पत्थर भी तीर जाते है, सद्-गुरू के हुक्म से कहुं तुझे, देवन पति शीश नमाते हैं । ४५७ ॥

॥ अनाथ गले छुरी ॥

वकरी में ब्रह्म सोई है सकल घट, दुःख सुख सदा सम टीका राम के विचार है, दुर्बल है दीन हीन, परम अनाथ, अज रिपु हुं न मित्र सुख सदा त्रणधार है, कोहु नहिं भीर तांको होत है अनन्त पीर, कठिन कठोर कर कंटको विडार हैं, पाप के प्रकार रोम रोम में विकार, ऐसी खात है शिकार, तांको लाखों धिक्कार है ॥ ४५८ ॥

म्याई म्याई करत न करत सहाय कोहु, पापी दया हीन दुष्ट चोरिसो चमार है, भेड को उदेड मांस हेडत है हराम खोर, कहे टीकाराम किधों क्षत्री पनो छार है, म्लेच्छ खान खात ताही मानत पकवान मुढ, करत वखान कर चाटत गंवार हैं, खात जम्म मार अति होत त्रशकार ऐसी खात है शिकार, ताको लाखों धिक्कार है ॥ ४५९ ॥

मारत जीव गरीबनको नहीं आनत त्राश नर देह कसाई, देव चडावत होम करे पुनि लेकर खडग जो

शीश उडाई, करत पशु कोन खुन कियो, हमे मारत आन तलवार चलाई, क्षत्रिय जो वंश को धर्म नही, मत मारोजी तोकूं जगदीश दुहाई ॥ ४६० ॥

पुन्न के उदय से पायो सब राज पाट, पुन्न के बिते से ख्वारी होई तनकी, अजा ओर मईस कहे पुन्न हम हार गये, त्रियंच की खोली पाई बात सब पुन्नकी, हमको मारकर दशेरो करत यार, मारे क्यों कुटुम्ब तेरी देह कोन काम की, मारत है गरीबन को त्रास नहीं आवे तन्न, अब मत मार तोको दुहाई है शामकी ॥ ४६१ ॥

॥ झूंठसे-दूर ॥

बाल से खेल बडो से विरुद्ध, व्यभिचार नार सें नहि हंसवो, धरम से लाज अग्नि से जोर, उबट पन्थ कदी न फसवो, अज्ञान से दूर तृष्णा से छेटी, विरुद्ध की बातमे कम्मर नहीं कसवो, कवि गंग कहे सुन शाह अकब्बर झूंठ से दुर सदा बसवो ॥ ४६२ ॥

॥ वृथा-मुंड मुंडाया ॥

मुंड मुंडाई भुख में, चेले किये अपार, घर घर पुजावत फिरे हम योगी संसार, हम योगी संसार, हमे पुजोरे भाई, काम क्रोध मद लोभ रह्यो घट में अति छाई,

कहे गिरधर कविराय, योगकी युक्ति न पाई, वृथा जन्म गंवाय, मुख में मुंड मुंड़ाई ॥ ४६३ ॥

॥ खोटी—शोबत ॥

परनारी का रंग में राच रह्या शठ, साधु की संगत से भागता है, जड़ मुद हेवान से प्रीति करे रंड़ियों के संगमें लागता हे, गांजा भंग मुफकी कंफ करी, जुवा खेलने को तुं जागता है, खोड़ि दास कहे खबरदार बन्दे, तेरा मुख भी जुतियां मांगता है ॥ ४६४ ॥

॥ विधवा के—लक्षण ॥

विधवा को सोहे नहीं काजल टीकी श्रृंगार, भारी कपड़ा पहरना कंकण मोती हार, कंकण मोती हार, विलेपन पिलंग न सोवे, तपस्या करे अभंग हाथ ले काच न जोवे, स्नान उबटन करे नहीं, चुवा चन्दन सिंधवा, लिलोत्री कंद नहीं भखे रात, नहीं जीमें विधवा ॥ ४६५ ॥

॥ काल—झपट्टा ॥

जन्म झपट्टा देत है दिन में वार हजार, मुरख नर समझे नहीं तुं कद उतरेगो पार, कद उतरेगो पार हार जावेगो बाजी, साहेब सुमरया नाहिं हुवोमाया में राजी, कहे दीन दर्वेश समझरे कूड़ कपट्टा, दीन वार हजार, जन्म तो देत झपट्टा ॥ ४६६ ॥

॥ बनियां ॥

न्हाय धोय बनिया रहे नवला कपड़ा पेर, म्हारो राम राजी रहे लहे संसार की लेर, लहे ससार की लेर कहे सहु राम की माया, नाम थकी निस्तार करे कुन दोरी काया, निज आतम सुख कारणे देवे लोक भरमाय, रतनचन्द ऐसा गुरु ये चाले बड़ा अन्याय ॥ ४६७ ॥

॥ पांच पतासा कारणे ॥

पांच पतासा कारणे नार कियो शृंगार, गेणा पैरया बाजणा सिर सालु गल मार, सिर सालु गल माल जानके डेरे चाली, मोह के बाण चलाय रोल जान्या में घाली, रतन आपनो पारको जन्म कियो धिक्कार, पांच पतासा कारणे नार कियो शृंगार ॥ ४६८ ॥

किया नार शृंगार पतासा लेवन कारन, पति मर्यादा मेट भई वेश्या व्यभिचारण, जाय जान के पास वचन रस डेल्या, अपनो पर कुल भांड़ बाप दादा नहिं मेल्या, कियो अपन सिर पाप ताहिं नख शिख से भाखे, करको घुंगट काढ़ि ताही की रीत न राखे, अपनो जन्म बिगाड़ चाढ़ि भव सागर ठंडे, नौसादर को बाप दियो जान्यां के मुंडे, रतन हर्ष उत्सव गिने फिट ए पापिनी अघोर, राम कहेत लाजां मरे जगत हरामी खोर ॥ ४६९ ॥

॥ ढोंगी–भेश ॥

जोग लियो पन देखलो लागा मोटो रोग, छत्र चंवर ढूलता रहे पग मंडा बहु लोग. लोगसे भेटण लेवे, डुबे दुष्टि आप और को संग डुबोवे, पंच व्रत पालो सही, छोड़ो पाखंड़ फेल, पन्नालाल कहे प्राणियां मीले मुक्ति की सेल ॥ ४७० ॥

॥ कुल-उत्तम काम-नीच ॥

कुल उत्तम जन्यो सही मारे विन्छु सांप, डेंड्ड गोयर जीव को उपजावे सन्ताप, उपजावे सन्ताप अकल या किने बताई, करे नीचसा काम जावसी नर्का मांई, जीव हिंसा को छोड के क्या धरम कर जाप, पन्नालाल कहे पापिया क्यों मारे विछु सांप ॥ ४७१ ॥

॥ बुढापा में माला पकड़ी ॥

मरवा चाल्यो डोकरो भजवा लागो राम, लीदी माला हाथ मे हड़के सो सो नाम, हडके सो सो नाम नाड़की डग डग हाले, आंख्यां सुझे नांय नाक से सेड़ा डाले, कानां तो सुने नहीं बुड्डो करे अब काम, पन्नालाल कहे डोकरो, अब भजवा लाग्यो राम ॥ ४७२ ॥

॥ बुड़्ली–कांम ॥

वर्ष साठ की बुडली नहिंले भगवंत नाम, उठ

पिछली रात की करवा घरको कांम, २ नाज पिसनको लागे, कर बासींदो काम दोड गोबर को भागे, बासी टुकडा खाय के छोरा राखण कांम, पन्नालाल कहे बुढ्ढली, नहीं ले भगवंत नाम ॥ ४७३ ॥

॥ जैनियों—कन्दमुल में—महा पाप ॥

जैनी नाम धराय के कंद मुल को खाय, जीव अनंत जिनवर कह्या लज्जा आणे नाय, लज्जा आणे नांय मर नर्कों में जावे, मारे मुद्‌गल जम्म, दुष्ट को कोन छुड़ावे, कंद मुल को छोड़दे जो है सुख की चाय, पन्नालाल कहे जैनी हो के, कंद मुल क्यों खाय ॥ ४७४ ॥

॥ स्त्री के-बन्द ॥

पावों के बन्द बीछे तोड़े, अरू अनवट कड़े, कम्मर में बन्द, कटि मेखल पहिचान को, उंगली मे छला बन्द करहु में चुडी बन्द, बईयां पे बाजु बन्द झूमना बन्द कान को, नाक में नथ बन्द गले मे माला बन्द, शीश पे अनेक बन्द बिन्दी बन्द भाल को, कहै कवि ज्ञानी सुनो भव्य प्राणी, इतने बन्द न होते तो नारी उड़ जाती आसमान को ॥ ४७५ ॥

॥ पानी बिन—कीमत—नही ॥

पानी विन हीरा नीलम, पुखराज मणी, पानी विन

मोती की कीमत हलकानी है, पानी विन खल्क की चीजें सब सूख जात, पानी विन मछली ने हारी जिन्दगानी है, पानी विन घोड़ को रातब और खुराक मिले नही पानी विन काहु के मुख नहीं शानी है, कहे कवि ज्ञानी जिनका गया पानी, उनको मरणा तो कबुल पन, जिन्दगानी धुल धानी है ॥ ४७६ ॥

पानी के काज सब जान पान सुख जात, पानी के काज मोर बोलत आसमानी है, पानी के काज सिपाही खेतन म कट मरे, पानी के काज सती अग्नि में जलानी है, पानी के काज राम रावण पे चढाई करे, पानी के काज रावण लंका भी तजानी है, कहे कवि ज्ञानी जिसका गया पानी उनको मरणा तो कबुल पन जिन्दगानी धुलधानी है ॥ ४७७ ॥

पानी बिन मोती को हाथ में छीवे कौन, पानी विन सिंह ने मारोहि कौन काम की, पानी विन हीरे की खरीदी करे कौन, पानी विन ओपमा नेगन के नवांन की, पानी विन सलीला समुदर अशुना लागे, पानी विन विजली न मोहे घनश्याम की, अरे नर अनेक तु पानी का जतन कर, पानी के गये जिन्दगानी कौन काम की ॥ ४७८ ॥

॥ चिन्तातुर मनुष्य ॥

चिन्ता से चतुराई घटे, घटे गीत गुणज्ञान, रुप सहीन

विद्या घटे घटे चिन्ता अगम अथाग, चिन्ता अगम अथाग भूख भोजन नहिं भावे, घटे मित्र से प्रीत रैन निंद्रा नहिं आवे, कहे गिरधर कविराय सुनोरे सज्जन मित्ता वे नर कैसे जि के जां घर व्यापित चिन्ता ॥ ४७९ ॥

॥ लंकपति ॥

राजा रावण मर गया लंकन का सरदार, एक शीश को आदमी कहा तनु को भार, कहा तनु को भार हो गई सात बादशाई, राजा राणा राव तीनों की खबर न पाई, कथे सो कविया कान थिर नहीं कोई थाणा, लंकन के सिरदार चले गये रावण राणा ॥ ४८० ॥

॥ योग की रिति ॥

जोग लियो जग देखन को पण जोग की रीत कछु नही जानी, कोई का खिलावत छोकरा छोकरी काहु का चरावत करड़ा छारी, जान बरात में संग चल्यो तव भा-तन में खात व्याहन कि गाली, कहे सन्त सुनो भाई साधु यो बाबा को बाबो नें हारी को हारी ॥४८१ ॥

॥ झूंठ की—मिसरी ॥

मिसरी घोले झुंठ की ऐसे मित्र हजार, सांच पिलावे जहर का जे विरला संसार, जे विरला संसार पतान्तर उनकी एसो मिसरी जहर समान, जहर है मिस्री जैसो कहे दीन

दर्वेश, भुल मत जाइयो भोले ताके सिर पैजार, झुंठ की मिसरी घोले ॥ ४८२ ॥

॥ कु संगत से—बिगड़े ॥

बिगरे पय कांजी की छींट पडे, कल धोत कुधातु पडे विगरे, विगरे कूल जात कलंक लगे नृपराज अनिती किये विगरे, बिगरे तप पुंज कषाय किये पद उंच कुसंगत से विगरे, विगरे हित मित्र जहां छल है सुभ धर्म मुषा मत से विगरे ॥४८३ ॥

॥ सु संगत से सुधरे ॥

सुधरे शठ पंडित संगत से अवनीत कलाधर से सुधरे, सुधरे मिल पारस लोह सहित, अरू ताम्र रसायन से सुध-रे, सुधरे विष औषधि वैद्यन से मलिया गिरी से वरवा सुधरे, सुधरे अघ हिंसक साधु थकी भव कोटी अघाए तपे सुधरे ॥ ४८४ ॥

॥ माया २ कर मरजायगा ॥

माया माया करत है खाया खर्चा नांय, जेनर जैसा जायगा ज्युंबादल की छांय, ज्युंबादल की छांय जायगा आया जैसा, साहेब सुमरिया नांय, प्रीति कर जोडया पैसा कहै दीन दर्वेश, अमर नाहिं रहसी काया खाया खर्चा नांय करत नर माया माया ॥ ४८५ ॥

।। बाजिन्दजीका सवैया ।।

हारे येक दया सरीखो धर्म नहीं कोई ओर रे, हारे ऐक सर्व धर्म के मांय दीपति कोररे, हांरे ऐक दया धर्म की राहा क पालो वीरजी, पण हां बाजिन्द जहां दया जहां धर्म कहयो रघुविरजी ।। ४८६ ।।

हांरे एक राजा विक्रमा दित्य तपे छ तेजरे, हांरे वांके चंवर ढूले था चार सिंहासन सेजरे, हांरे वांके तुरि मगना गांव हजारां लाख है, पण हां बाजिन्द वोनर गया मसाण होगई खाक है ॥ ४८७ ।।

हांरे एक बादशाहकी सेज पथरणां पाटका, हांरे वांके हीरा जडया जडाव के पाया खाटका, हांरे वांके हुरमां उबी हजूर करत है बंदगी, पण हां बाजिन्द बिना भज्या भगवान् पडेगा गन्दगी ।। ४८८ ।।

हांरे एक दासी उबी आय के डोडचां रावरी, हांरे वांके ओढण दखणी चीर के फिरे उतावली, गेली करे गुमाम के गन्दी देहका, पण हां बाजिन्द निर निवाणें जाय के, पांणी मेंहका ।। ४८९ ।।

हांरे एक रोहिडा केरो फुल्ल के वंन में फुलियो, हांरे एक भूंठी माया देख जगत सब भुलियो, हांरे थारी माया अर्थ लगाय पवन का पेसणां, पण हां बाजिन्द दुनिया में दिन चार तमासा देखणां ।। ४९० ।।

हांरे एक उषकी धरति देख त्रिज नहीं बोवियें, हांरे एक मुरख ने समझाय ज्ञान नहीं खोईये, हांरे एक निमन मिठा होय सिंचा गुड घीय सें, पण हां वाजिन्द ज्यांका पड्या स्वभाव के जासी जीव सें ॥ ४९१ ॥

हांरे एक टेडि पगडि बांध झरोखे झांकता, हांरे एक ताजा तुरी पलाण चौवटे डाकता, हांरे वांके फौजा रेहेति लार नगारा बाजता, पण हां वाजिन्द ते नर गया मशाण, सिंह ज्युं गाजता ॥ ४९२ ॥

हांरे एक दोय २ दीपक जोय महल में पोडता, हांरे एक नारी हन्दा नेह पलक नहीं छोड़ता, हांरे एक तेल फुलेल लगाय के देही चांमकी, पण हां वाजिन्द मर्द गर्द होगया के दुहाई रांम की ॥ ४९३ ॥

हांरे एक सिर पचरंगी पाग के जांमा जरकसी, हांरे एक हाथां लाल कबाण कम्मर में तरकशी, हांरे एक घरमें चंगी नार बतावे आरसी, पण हां वाजिन्द वो नर गया मसाण पढंता फारसी ॥ ४९४ ॥

हांरे एक राजा रूठो जांण नगर को छांडिये, हांरे एक देवल डिगतो जाण दुर घर वांदिये, हांरे एक चंचल चोड़ि नार टलतो टालीये, पण हां वाजिन्द सिल्ला निचे हाथ, कला कर काढ़िये ॥ ४९५ ॥

हांरे एक बुगलो ध्यान लगाय के ऊबो नीर में, हांरे एक लोग कहे वांको, चित्त बसे रघुबीर में. हांरे वांको मन्न मांछली मांय करे जीव घात रे, पण हां बाजिन्द दगा बाज ने नहीं मिले रघुनाथरे ॥ ४९६ ॥

हांरे एक सांइके दरबार पुकारे बोकड़ो, हांरे एक काजी लियां जाय पकड़ कर कांनड़ो, हांरे एक मौला कहै शीश ईसीका लिजिये, पण हां वाजिन्द राव रंक का न्याव अदल वंद कीजिये ॥ ४९७ ॥

हांरे एक सुकृत लारा लेय धरी रहे मातरा, हांरे एक चाल्या पांव पसार, विछाया सांथरा, हारे एक लगया वनके मांय लगाई आगरे, पण हां वाजिन्द उबो सब परिवार लगाई लायरे ॥ ४९८ ॥

हारे एक किल्ला कांगरा कोट वाग ओर वावड़ि, हांरे एक रहे ठोड़ का ठोड़ थके जीम नावड़ि, हारे एक नोपत ओर निशाण नगारा त्यागसी, पण हां वाजिन्द, उबा खिदमदगार अकेलो भागसी ॥ ४९९ ॥

हांरे एक उंचा मंदिर महल के निचे मालिया, हांरे एक जालि झरोखा वारी के पडदा डोढीयां, हांरे वांके गले हीरा का हार नाक में वालियां, पण हां बाजिन्द करते पीयासे वात के देदे तालियां ॥ ५०० ॥

हांरे एक घड़ी २ घडीयाल पुकारी कहत है, हांरे एक आयु गई सब बीत अल्प सी रहत है, हारे एक सोवे अचेत जाग जप जीवरे, पण हां बाजिन्द, जाणा आज के काल बटाउ जीवरे ॥ ५०१ ॥

हांरे एक बड़ा भयातो क्या वर्ष सो साठका, हांरे एक घणां पढ्या तो क्या चतुर्विदी पाठका, हारे एक छापातिलक लगाय के मंडल काष्टका, पण हां बाजिन्द एकन्त आपां हाथ पढेगी आठका ॥ ५०२ ॥

हांरे एक फिरते निशान नगारा बाजता, हांरे एक आंण फिरे चौफेर चले नर गाजता, हांरे एक हाथां दीना दांन भज्जा मुख रामरे, पण हां बाजिन्द एसा बणजारा देख भजन का कामरे ॥ ५०३ ॥

हांरे एक मन करे मद मस्त मरेतो मारीये, हांरे एक कनक कांमणी कलंक टलेतो टालिये, हांरे एक साधां सेती प्रित पलेतो पाल्यिे, पण हां बाजिन्द राम भजन में देह गलेतो गाल्यिे ॥ ५०४ ॥

हांरे एक जल में गिणयां जीव बहुला होयरे, हांरे एक विनछाण्यों जल आप पिवोमत कोयरे, हांरे एक काठे कपड़े छाण्यां विन नहीं पिजीये, पण हां बाजिन्द जिवां-णि का जीव जतन सुं कीजीये ॥ ५०५ ॥

हांरे ऐक सुखा दुर्बल देख मुख नही मोडिये, हांरे ऐक जो तुम्हे आखी देयतो आधि तोडिये, हांरे ऐक आधि की पुन आध तोड कर कोइ ओररे। पण हां वाजिन्द अन्न सारिखो दांन नहीं कोई ओर रे ॥ ५०६ ॥

हांरे ऐक कांकण उभी फोज जुवारच्या खेतरे, हांरे ऐक दारू गोला नार अडब्बा छुटसी, पण हां वाजिन्द कंचन वरणी काय तडाके टूटसी । ५०७ ॥

हांरे ऐक मोर करे किलोल के चमके बिजली, मारा पियु गया परदेश मुजे क्या तिजरी, हांरे ऐक औरूं के रंग राग मुझे क्या देखना, पण हां वाजिन्द अपने साहिब कों सलाम ओर नहीं पेखना ॥ ५०८ ॥

हांरे ऐक जिस घर नार सु नार जमारो जितीया, हांरे ऐक करे धर्म को कांम पुंन्य को सचिया, हांरे ऐक अष्ट पहर आनंद उसी का जीवकों, पण हां वाजिन्द दौ दौ पखा ढोल जिमावे पिवकों ॥ ५०९ ॥

हांरे ऐक जिस घर नार कु नार जमारो हारिया, हांरे ऐक करे पाप को कांम जीव कों मारीया, हांरे ऐक अष्ट पहर उदास उसीका जीवकों, पण हां वाजिन्द दौ दौ झडा का लेय जिमावे पिवकों ॥ ५१० ॥

हांरे ऐक छापा तिलक लगाय चल्यो दरबार में, हांरे ऐक माला लीनी हाथ कतरणि खांक में, हांरे ऐक बोले मिठा वैण के टउका मोरका, पण हां वाजि-

न्द चाल शाह की चाल लखण सउ चोरका ॥ ५११ ॥

हांरे ऐक तितर चुगवा जाय विचारो मालमें, हांरे वांके कांटो भागा पाव के पडियो वाड में, हांरे वांको जीव गयो घबराय के बाजी रहगई, पण हां वाजिन्द कंचन लेगया लुट के कांसी रहगई ॥ ५१२ ॥

हांरे ऐक मेट पुण्य की पाल के दौड़त पापको, हांरे एक साला नुत जिमाय धक्का दे बापको, हांरे ऐक करे नार की भीड, गालि दे मातको, पण हां वाजिन्द ते नर नरकां जाय ठाड नहीं रहण कों ॥ ५१३ ॥

हांरे ऐक कारीगर करतार के हुदर हद किया, हांरे ऐक दस दरवाजा महल मंदिर न्यारा किया, हांरे ऐक नव शीख महल वनाय के है अति जोतियां, पण हां वाजिन्द भितर भर्या भंगार के उपर रंग दीया ॥ ५१४ ॥

हांरे ऐक कहां ते अर्जुन भींम, जरा जसवंत से, हांरे ऐक कितने भये असंख बली हनुमंत से, जिनकी सुण कर हाक म्हागिरी पाडता, पण हां वाजिन्द तिणने खाया, काल के ईन्द्र जु डाटता ॥ ५१५ ॥

हांरे ऐक भज सुवा हरनाम के बैठ्यो ताक में, हांरे ऐक दिनां चारको रंग मिलेगा खाक में, हांरे ऐक साहिब वैग सम्हाल काल शीर हार रे, पण हां वाजिन्द जम्म के हाथ गिलोल पडाका पार रे ॥ ५१६ ॥

हांरे ऐक जाणे जाण सुजान सुधड जहां बोलिये, हारे ऐक बिन ग्राहक व्यौपार वस्त्र नहीं खोलिये, हांरे एक रहयो अधर्म मुख झुल खबर नहीं शूलकी, पण हां वाजिन्द खर क्या जाणे बास, कमल का फुलकी ॥ ५१७ ॥

हांरे ऐक पाहूण कोरा रहे बरसता मेह का, हांरे ऐक गाल गाली वाजिन्द दुष्टता देहमें, हांरे एक डसे अचानक आय मुढ युं रोईयो, पण हा वाजिन्द सर्पको दुध पिलाय वृथा न खोईये ॥ ५१८ ॥

हांरे ऐक ये दुनियां वाजिन्द पवन का पैखणां, हांरे ऐक यांमें बडो विगाड कडो क्या देखना, हांरे ऐक मात पिता परिवार सजन घर बार है, पण हां वाजिन्द जो भजे भगवान् लाखों में सार है ॥ ५१९ ॥

हांरे ऐक बहुत मित्र की नारसुं प्रीत ना चाहिये, हांरे ऐक चौर जाली मुरख सुं, चित्तना लाईये, हांरे ऐक शठ साहब की सेव कबहु नहीं किजिये, पण हां वाजिन्द विद्या वधु अरु जीव अकाज नहीं दीजिये ॥ ५२० ॥

हांरे ऐक आज सुणे के काल कहत हैं तुझकों, हांरे भावे धरो जान जीव तुं मुझको, हारे एक देखत अपनी दृष्ट खता क्यों खात है, पण हां वाजिन्द, लोहा कैसो ताव जनम युं जात है ॥ ५२१ ॥

हांरे ऐक वृद्धा विलोकत नैन भई मुं बावरी, हांरे ऐक धारे दंड विभुत, पावन दे पावडी, हांरे ऐक कर जोगन को भेष सब जग डोल है, पण हां बाजिन्द ऐसो मारो नेम, पियु २ मुख बोल है ॥ ५२२ ॥

हांरे ऐक काल फिरे नर नार, दिन्न दिन्न जोयरे, हांरे ऐक रंक ने राव गिणे नहीं कोयरे,हांरे दोय दुनियां बाजिन्द ओस की बुंद है, पण हां बाजिन्द पांणी पैलां पाल बंधे तो ग्वुब है ॥ ५२६ ॥

हांरे ऐक फरीते निशान, नगारा बाजते, हांरे ऐक आंण फिरे चौफेर, चले नर गाजते, हांरे ऐक हाथां दिया न लिया मुख नांम है, पण हां बाजिन्द सो सुख नजरया देख, भजन को कांम है ॥ ५२४ ॥

हांरे ऐक लंगर चलियां जाय के नेजां फरहरे, हांरे ऐक बाजरया कर नाद, नगरा घुर रहै, हांरे ऐक पर देशिकी मीत फुसका तापणां, पण हां बाजिन्द उठ चल्या अदरात कबहु नहीं आपणां ॥ ५२५ ॥

हांरे ऐक निश बासर बाजिन्द, संचै धन बावरो, हांरे ऐक सांझ पड़ि तब बीर, कहां गयो तावरो, हांरे ऐक, कौड़ी कीयो क्लेश वृथा गई जोयरे, पण हां बाजिन्द तितर तीह्ल चुग जाय रहे सब रोयरे ॥ ५२६ ॥

हांरे ऐक धन सोही जाण धणी के अर्थ है, हांरे एक वांकी माया विलोपने सौ ग्रंथ है, हांरे ऐक ज्यां घर लागी लाय बुझावे कोन है, पण हां वाजिन्द बेठ पत्थर की नाव पार गया कोन है ॥ ५२७ ॥

हांरे ऐक ज्यों की त्योंही रहे माया सब जोयरे, हांरे ऐक मन गाडो कर राख मांगे नर कोयरे, हांरे एक कृपण अपने हाथ कोड़ी नही देयगो, पण हां वाजिन्द मणि है माथे सर्प मार कोई लेयगो ॥ ५२८ ॥

हांरे ऐक मोटा है उमराव बड़े सरकार का, हांरे ऐक हाथ लाल कबांण भलका दार है, हांरे ऐक नवलख चढ़तालार शूर सरदार है, पणहांवाजिन्द सो नरखाया काल होगई खाक है ॥ ५२९ ॥

हांरे एक सरवर केरी पाल कमल कुमलायंगे, हांरे ऐक रैन लेवत विशराम भोर उठजायंगे, हांरे ऐक मारघा मनख जंन काग चुंथ खायंगे, पण हां वाजिन्द सो तन्न एक खांन मांय होयगो फेई है ॥ ५३० ॥

हांरे ऐक खीर खांड़ और घी जीवकों देत है, हांरे ऐक पांन फुलकी वास रैन दिन लेत है, हांरे ऐक ताता खांन ओर पांन चुपकी देत है, पण हां वाजिन्द ते रंग और रूप खाक में होत है ॥ ५३१ ॥

हांरे ऐक ताजा तुरी पलाण चौवटे कूदना, हांरे ऐक टेढ़ि पगाड़ि बांध नैन सें निरखना, हांरे ऐक रूप रंग श्रोर राग पवन ज्युं वैगया, पण हां बाजिन्द दुनियां मे दिन चार तमासा होगया ॥ ५३२ ॥

हांरे ऐक सुभ श्रे महंत बनी नर देहरे, हांरे ऐक वृथा खोवे तेही मिलाई खेयरे, हांरे ऐक माया मद में छकियो के प्रभु नांम कों भुलीयो, पण हां वाजिन्द विपकों अम्रत माने पिय जवढ़ी लियो ॥ ५३३ ॥

हांरे ऐक सुन्दर पाई देह नेह कर राम सुं, हांरे एक क्या बंधावे कांम धरा धन धांम सें, हांरे ऐक अन्त में रंग पत्तंग संग नहीं श्रावसी पण, हां बाजिन्द जम्म हु के दरबार मार बहु खावसी ॥ ५३४ ॥

हांरे ऐक गाफिल मुढ गंवार अचेतन चेतरे, हांरे ऐक समझी संत सुजाण सिखामण देतरे, हांरे ऐक विपय मांही चे हाल लगा दिन रातरे, पण हां वाजिन्द शीर वैरी जम्म राज न सुझे नैनरे ॥ ५३५ ॥

हांरे ऐक दिल के अन्दर देख तेरे संग कोन है, हांरे ऐक चलना हाथ पसार लागो है नेहरे, हांरे ऐक देख ग्रह धन्न दार इन्हों सें चित्त दिया, पण हां वाजिन्द रटया ने निश दिन्न रांम कांम थे क्या किया ॥ ५३६ ॥

हांरे ऐक नहीं है तेरा कोय नहीं तु कैयनों, हांरे ऐक स्वार्थ को संसार वन्या दिन्न दौयनों, हांरे ऐक मेरी २ मान फिरत अभिमांन में, पण हां बाजिन्द इतना में वोनर ढले अजान में ॥ ५३७ ॥

हांरे ऐक मात तात सुत्त भ्रात किया हैत बहु नार सें, हांरे ऐक नहीं तेरा है निधान सब निज स्वार्थी, हांरे ऐक यांके संग अबुभ छोड़ सब आवरे, पण हां बाजिन्द अज हूं चेत अजाण प्रभु गुण गावरे ॥ ५३८ ॥

हांरे ऐक पिऊ गया पर देश के जोगण में भई, हांरे ऐक मुद्रा पहिरी कांन फकीरी में लई, हांरे ऐक ढूढ्या सब संसार अलख जगाविया, पण हां बाजिन्द उसी सूरत का पियू कहां नहीं पाविया ॥ ५३९ ॥



॥ दो दो चिज से नुकसान ॥

दोय सिंग ऐक वंन वसे दो हस्ती ऐक खम्बे, दो खड़क एक म्यान दो राज दल भज्जे, दोय हुवे परधान बेठ कर राज गंमावे, दो हुवे घर नार नीत उठ कन्हे मचावे, रोगी ऐक ने वैद दोय मुल न जीवे जावे मर, कवी गंग कहै सुण ठाकरां दो दो भला नहीं ऐक घर ॥ ५४० ॥

॥ ममत बन्धन ॥

देह सुं ममत पुनि ग्रेह सुं ममत सुत दारासुं ममत मोह माया मे रहत है। थिरता न लेवे जेह कुदत चौगान मांहे, कर्मन के वस पड्यों धक्का कूं बहेत है, सुई कहेत मोंय योंई तो अचम्बो आवे भुंई भुंई पड्यो २ कहा चदं कूं गहत है ॥ ५४१ ॥

भुल कहे नर मेरि मेरि थें दिन चार विसराम लियो, है तेरे कहय कछु होवत तेरी जैसेंई बाप दादा गये छोड के, तेसेंई तुं तजिये पलक फेरि, मारे हैं काल चेपट अचानक हुई घड़ि में राख कि ढेरि, सुई ले न चलो कछु संग सोतो भुल कहे नर मेरि मेरि ॥ ५४२ ॥

॥ ऊपदेसी ॥

लोभ के बजार में विचार के बेठे नर, कांम कि दुकान में ग्यान सव खोई है, मोह के गुमासत्त कूं आदर देत, दयाकी दीवानी कूं माया फांस डारी है, क्रोध कोट वाल अहंकार फोजदार भजन केसें बने है, गौपलाल या कंचन सो शेर देख पांच ने विगाड़ धुल धानी कर डारो है ॥ ५४३ ॥

॥ खुध्या ॥

खुध्या गमा वे रूप कांम वल खुध्या विणा से, खुध्या

करे कृस अंग खुध्या जग दीनज भाशे, तप जप करे अंत्राय खुध्या धर्म वुध घटावे, खुध्या गमावे लाज खुध्या सब तेज छिपावे, मात पिता बंधव सुत्ता मित्र कलत्र बंधन करी, धिर्ग २ ईण सहु जगत में खुध्या पापणी अति बुरी ॥ ५४४ ॥

॥ ईरशा भाव ॥

गत्ति गयवर कि देख श्वान घणां हुवा सरोषा, सत्तियां सुण सौभाग कु सत्तियां काढे दोषा, सुण कोकिल अलाप कां कां करे स कागी, हंसली देखी हाल बुगली पि ठमकण लागी, कवियां देख कवि सरी मुरख मन मातो थयो, नेत कहै सुण चातुरां कहो तिए कासुं गयो ॥ ५४५ ॥

॥ कालका इलाज नहीं ॥

दारिद वन्त का ईलाज कीजे वेदकों बुलाय लीजे, रोगी का ईलाज कीजे दीजे पाणी दालका, राड़का ईलाज कीजे वीच में विश्रांम लीजे, राजका ईलाज कीजे दीजे लोभ मालका, भाई का ईलाज कीजे मीठा वयण बोल लीजे, दुर्जन का ईलाज कीजे देदे ओटा ढालका, कहे कवि माधो दास कवलग करूं वखांण, सबका ईलाज पण ईलाज नाहिं कालका ॥ ५४६ ॥

॥ कांम अन्ध ॥

साधन कूं जोग जब निकस्यो नगर हुं ति, रन्न वन्न कानन में जाय मुंन लिनी है, जोग को आसन साधी जप्प माला कर लाय, भीलड़ि की धुन्न सुणतां कुं द्रष्ट दीनी है, जोगको आसन छार जप्प माला तोड ड़ार, नट जेसे नाच्यो तोभी भीलड़ी न भीनी है, हीरा नन्द मुनि कहे तांको लोक देव कहे कामनी के काज देखो, केसी बात कीनी है ॥ ५४७ ॥

॥ धर्म–अजाण ॥

कपड़ा की रोशन जाणे हैवर की हुंस माणे, न्याव ही निवेड़ जांणे राज रीत राणवो, रागही छत्तिसे जांणे लखण बत्तीस जांणे, चुंप चतुराई जांणे मेहल्ली को मांणवो, वाद जांणे स्वाद जांणे खुबी खुश वो ही जांणे, सगपण साधि जांणे अर्थन को आंणवो, संस्कृत साम्त्र जांणे जोतिष्य निर्मत जांणे, धर्म को न जांणे तन्त देखो इवो जांणवो ॥ ५४८ ॥

में, सीखी है सब जंत्र मंत्र तंत्र ही कुं सीख लीये, पींगल पुराण सीखी सीखे भये सुर में, सीखे सब बात घात निपट सुयाणे भये धर्म कूं न सीखें सब सीखे भये धुर मे ॥ ५४९ ॥

॥ परमाधी नर ॥

ईहे स्वाद अनेक आलस वलेज अंगे, दोरि करे देह सुखी विशियां रस संगे, नित्य रोगी व्रहु निंद रंग वातारो रसीयो, रामत में मन रम्मे तां क्लेस हुं नों तसीयो, लालची दांम खांवण लुबध, दूसमण शास्त्र ना नाद से, कर ऐता दूर धर्मसी कहै, विद्या भणवा जो वसे ॥ ५५० ॥

॥ नकली देव ॥

हालत नही रसना मुख मांहे तो में भोग मसाद केसें लगाऊँ, नाकन का शूर . चालत नाही तो फुल सुगंध में केसें सुंगाऊ, कानन में कुक दियां नहीं सुणे, तो तांन में गाए केसें रीझाऊं, कर जोड़ि रिख राय कहे मभु ऐसा देव कूं में केसें ध्याऊं ॥ ५५१ ॥



॥ कका--बावनी ॥

सवैया इकतिसा

ऊँकार विराजे पद जाके हिरदा के विषे घट पर घट जा परं पद पाइये। उँकार ही अरिहंत, उँकार ही सिद्ध जानो, आचारज उपाध्याय सर्व साधु ध्याइये। उँकार अरूपी जोति में जोति विराजमान ऊँकार है रूपी पद ब्रह्म चित लाइये। रिख लालचन्द कहे हृदय रहो उँकार प्रभु मेरी सहाय करो, उँकार को ध्याइये ॥ ५५२ ॥

नमु अरिहंत नमु सिद्ध नमु आचारज नमु उवज्झाय नमु सर्व अणगारने। नमु सर्व केवली ने थेवरने तपस्वीने नमु गण कुल संग साधु गुण धारने। नमु सर्व गुणवंत ज्ञानवंत ध्यानवंत शीलवन्त तपवंत चम्यागुण धार ने। रिख लाल चन्द कहे नमु पंच पद एह नमु नमु नमु, श्री नवकार ने ॥ ५५३ ॥

मन तन वचन से करे शुद्ध समरण मन तन वश विना भजन न ध्यान है। मन है पवन जेहु मन है सर्प जेहु मन जूं पिपल पान संध्या केसो भान है। मन ज्यों देवल ध्वज मन है वादल विज्जु, मन है पानी सी लहर कुंजर सो कान है। रिख लालचन्द कहे, धन्य वश राखे जेह मन शुद्ध आचार्य्य को शिवपुर स्थान है ॥ ५५४ ॥

सिख्यो सब स्याद्वाद, सिख्यो है व्याकरण वेद, कुरान पुराण सिख्यो पिंगल ने कोक है। सिख्यो है बहुतर कला चवदे विद्या निधान, सिख्यो गजराज बाज वातन के थोक है। सिख्यो सर्व छद काव्य ज्योतिष वेदक भंग, सिख्यो सर्व जंत्र मंत्र धर्म विना फोक है, रिख लालचंद कहे समकित शुद्ध लहे, सुमिति गुप्तीवंत जाके पावां धोक है ॥ ५५५ ॥

धन्धा ही में ध्याई रयो धंधा ही में पच रयो, धंधा ही में मोटो भयो धधो दूर करना। धंधो ध्यावे तात मात धंधो ध्यावे सुत भ्रात, धंधो ध्यावे दिन रात धंधा दूर धरणा। धंधो तज्या धन पाय धंधो तज्या मोक्ष जाय, धंधो तज्या सुख थाय भव सिंधु तिरना। रिख लालचंद कहै, धन्धो तज्या सुख लहे, धंधो तज्यो साधु मुनि जाके पावाँ पड़ना ॥ ५५६ ॥

अजर अमर अविनासी अविकारी सिद्ध, अरूपी अखंड मंड अरागी अरोगी है। अवेदी अखेदी अविछेदी अकषायी ज्ञानी, अखल अक्षय गुणि अशोकी अभोगी है। अकल अमल शुद्ध अचल अगम्य गम्य, परम विशुद्ध बुद्ध अलेसी अजोगी है ॥ रिख लालचद कहे, केवल दंसण लहे, सिद्ध है अनन्त ज्ञानी अनंत उपयोगी है ॥ ५५७ ॥

आछी करया आछी होवे, आछी विना योंही खोवे,

आछी करे करणी तो गर्भ में न आवेगो । आछी दया आछो दान आछो सत्य आछो ज्ञान, आछो शील आछो ध्यान आछी क्षमा लावेगो । आछो विनय आछी क्रिया आछो पोसो आछो वास आछी वाणी आछो वास मुगति मे पायगो । रिख लालचन्द कहे आछी गति तब लहे, आछी आछी आछी करणी आछी गति जायगो ॥ ५५८ ॥

इण ही संसार मांही अन्न धन रत्न वन, तन मन खान पिन रोग केरो रेल है । इण ही में कूडो धाम इण ही में कूडो काम, इण ही में कूडो नाम पानी कैसो फेण है । इण ही में तात मात इण ही में सुत भ्रात, इण ही में दिन रात पापन को पेल है । रिख लालचंद कहे झूठा सुख मान रयो, यह जुग सुख जैसो होली कैसो खेल है ॥५५९ ॥

इण जीव पाप किया इण जीव आल दिया, इणजीव दुःख सया नरक निगोद में । इण जीव हिंसा झूंठ चोरी मेथुन सेव्यो, इण जीव सब पाप सेव्यो परमाद में । इस जीव दान दियो इण जीव पुण्य कियो सालभद्र सुख लियो श्रेणिक की गोद में । रिख लालचंद कहे इम ते आनन्द लहे, अनन्त सुख मे गया हरष की होद में ॥ ५६० ॥

उद्यम करत जीव पाप मांही रुच रुच, उद्यम करीने पापी पेट को भरत है। उद्यम करत छत्तीसी पवन पाप माही, लक्ष चोरासी माही वार वार ही मरत है। उद्यम करीने पापी नर्क निगोद गयो, पाप के उद्यम सेती चोरासी भमत है, रिख लालचन्द कहे जीव सुख जब लहे, धर्म का उद्यम सेती संसार तरत है ॥ ५६१ ॥

ऊदे जब आसी कर्म थारी केम रेसी सर्म, ऊदे आया सम्भू ब्रह्मदत्त दुख पाया है। ऊदे आया श्रेणिक कौणक वासुदेवन के, रावण महा रावण को नर्क रुलाया है, ऊदे आवे पुण्य पाप पाप से होवे संताप, बियालिस भेद पुण्य जिन जी बताया है, रिख लालचंद कहे ऊदे सुख जब लहे, आत्मिक सुख सिद्ध केवली कहाया है ॥ ५६२ ॥

ऋतु वर्षात हुआ अन्न नहीं निपजत, रीति करे करणी तो मिले न मुगत है। रीतो नर नीति विना रीतीनारी शील विना, रीतो साधु यति विना रीती राखे आश है। रीतो घर वनिता विना रीतो कुल सुत विना, रीति वाणी सत्य विना पण्डित अजाण है। रिख लालचंद कहे रीतो भर्यो जद लहै, पावे शुद्ध समकित दर्शन नाण है ॥ ५६३ ॥

ऋतु छहूं माही न्यारो न्यारो सुख मान रयो, अरति भजन दया धर्म में आणे है । शरद हेमन्त ऋतु शिशिर

वसंत ग्रीषम ऋतु, पावस सुकास ऋतु छह ऋतु मान है। रति माने कौतुक ने ख्याल विषे, भोग माहीं रीतो खोवे नर भव धर्म नहीं जाणे है । रिख लालचंद कहे ऋतु सुख जब लहे, ऋतु छहू माहीं मन धर्म में आणे है ॥ ५६४ ॥

लिखत गणित कला रूप गीत नाटक की, बहुतर कला ही सिख्या कारज न सरियो । लिखत ते लिखी लिखी लख माल भेरा किया, लिखी झूठा आल दिया अकारज करियो । लिखत लिखाई रयो लिखत न लारे लियो, चिदानंद कूंच कियो झूर झूर मरियो । रिख लाल-चंद कहे लिखत लिखाई रया, पाप कर्म साथे गया धन रयो धरियो ॥ ५६५ ॥

लिलरी लटक आई तो भी विषय मन भावे, लिनी टेक छोडे नाय विषे लपटायो है । लिभ्य रस माही जैसे लिम लट लाभ रही लिप रयो मूढ तस भोग मन भायो है । लिनी हट हटे नहीं लिनी वान छोडे नाय, ऐसा जगत में टेकी जन्म गमायो है । रिख लालचंद कहे सांची टेक जब रहे, सांचो मन मीताजी को जगत भगायो है ॥ ५६६ ॥

एक घरे हर्ष वधावा गीत गाय रया, एक घरे दुःख शोक मात्र रयो भारी है । एक घरे पुत्र हुआ बाजा बजै

वाज रया, एक घरे मोत हुई रात लागे खारी है । एक वैठो पालखी फिरत गजराज बाज, एक पड्यो जंजीरा में मार पड़े न्यारी है । रिख लालचंद कहे पुण्य पाप फल एह, पूरा सुख सिद्ध निरंजन निराकारी है ॥ ५६७ ॥

ऐह जीव ज्ञान विना ऐह जीव ध्यान बिना ऐह जीव दान विना जन्म गमावे हैं,ऐह जीव तप विना ऐह जीव त्याग विना, ऐह जीव भाव विना जग भरमावे है । ऐह जीव आंधो हुवे ऐह जीव वांदो हुवे, ऐह जीव मांदो हुवे, धरम न ध्यावे है । रिख लालचन्द कहे जीव दुख सया, पाप कर्म करया सेती पार नहीं पावे है ॥ ५६८ ॥

ऊँचे कुल आय तेने ऊँचो काम कांई किनो, ऊँचो कुल ऊँची जाती पावे दया धर्म सु । ऊँचो मन राखे साधु संतन को देख देख, ऊँचो वंश पाया नहीं छूटे आठों कर्म सु । उंचो नीचो होवे पुण्य पाप सेती ऐह जीव क्षमा दया दान लावो लीजे लज्या सरम सु । रिख लालचन्द कहे ऊँची गत जब लेहे दया धर्म पावे अने छूटे मिथ्या भ्रम सु ॥ ५६९ ॥

उलट पलट नट नाचत नृत्य कला, करत कलाप पूरो पेट न भरत है । उलट भावों से देवे दान शुद्ध साधून को, उलट भावों से मुनि करणी करत है । उलट भावों से चारों तीर्थ खमाय कर पंडित मरण मुनि राज जी मरत है ।

घटत घटत आछी आछी छिन छिन मांही, घणा घणा बांधे बंध जामे जीव फासियो। घट मांही घाट घडे घणो घणो पाप करे, घेर मल्यो करमाने भोगनको रसियो। घट मांही विचार जीव घर है चौरासी तेरो, घेर घाल्यो घर मांही गरभ में वासियो। रिख लालचन्द कहे घणा सुख जब लहे, घट माहीं ज्ञान घाले धरम को तासियो ॥५७४॥

नगन होईने आयो नर भव रतन लायो, मुठी गाढी बांधी लायो रीति मत खोवेरे। निकसत दुख पायो लोही में लपेटी काय, निर्लज्ज किनी माय दोनों जणा रोवरे। नरक सा दुःख पायो और विषय सुख चायो, जाही जोण में से आयो वांही जोण जोयरे। रिख लालचंद कहे शील पाल्या सुख लहे। निर्लज सुख छान्या सदा सुखी होवेरे ॥ ५७५ ॥

चरचा करीजे चोखी चतुर सुज्ञानी सेती, मूरख से चर्चा, कीया परार सा कुटे है, चर्चा कीदी परदेशी चर्चा कीदी हकेशी चर्चा करया सुं राजा सेणक सुलटे है, चर्चा कीदी है चोखी संयेति ग्रंथ भालीजी भग्गु मोहित पुत्र छोड़े कर-मासु छुटे है। रिख लालचन्द कहे चर्चा से कर्म दहे, सुगति में सुख लहे आठो कर्म टूटे है ॥ ५७६ ॥

छिन छिन मांहि आयु छीजत है मूढ तेरो, छाय रयो भोगन में पीछे पछतायगो। धन छक राज छक

योर्वन में छक रयो.. तिनो छक मांही छक्या दुगति में जायगो । छल बल कई करी छकायाने छली छली नरक में जाय घणा मुद्गल खायगो, रिख लालचंद कहे छकाया की दया लहे छिन मांही तोड़ी कर्म अक्षय पद पायगो ॥ ५७७ ॥

जतना में जैन धर्म कहा श्री जिनराज जैन विना फैन हिंसा धर्म नहीं होयरे । जैनमैं जन्म लियो महाजन नाम दियो नीच नीच काम किया गयो कुल खोयरे । जयणा कीदी सुस लिया की जयणा कीदी परेवाकी जय-णा कीदी धर्म रुची नेमजी ने जोयरे । रिखलालचंद कहे जयणा करे धन सोय जयणा विना जग सउ रीतो गयो रोयरे ॥ ५७८ ॥

झड़ा झड़ झांक झींक झूंमरा की खाली मार झूंठा सुख माए झून्या ऐसा दुःख पावसी । झूंठा है व्यसन सात जामें जीव झल रयो जूआ मांस मदिरा वेश्या सु-ललचावसी । अहेड खेले चोरी करे परनारी ताक फिरे सातों ही व्यसन सेव्या बहु दुख पावसी । रिखलालचन्द कहे सातों ही से दूर रहे अनंत सुखामें गया उदर न आवसी ॥ ५७९ ॥

नरक निगोद गति चारों ही चौरासी भम्यों नीठ पायो नर भव छायो विषय भोग में निठ नर भव खेतर

आरज उत्तम कुल लंबो आयु, पूर्ण इन्द्रिय शरीर निरोगरे, निर्ग्रन्थ गुरु तणी वाणी सुण सूत्र केरी, निर्मल श्रद्धा ओर पराक्रम जोगरे। रिख लालचन्द कहे दसो बोल पूरा लहे, नहीं पावे जन्म ने मर्ण जरा रोगरे॥ ५८० ॥

टरपर टरपर टरपर ताकरयो, पर नारी देख देख मूढ मुरझावे है। परनारी संग किया नरक निगोद गया, गर्भ मांही उलझिया काट के कडावे है। कई जीव ताई गाल्या कई जीव ताई राल्या खाई गया कुत्ता ने सियाला यूंही दुःख पावे है। रिख लालचंद कहे परनारी फल एह, इह लोक परलोक योंही बिगड़ावे है॥ ५८१ ॥

ठग तन ठग मन ठग है कुटुम्ब जन ठग है यौवन धन जामें मुरझावे है। ठग तात ठग मात ठग सुत दारा भ्रात, ठगणी हैं नारी तेरी जासु तू ठगावे है। ठग क्रोध ठग मान ठग हैं अठारा स्थान, ठग है कर्म आठ चोरासी भमावे है। रिख लालचंद कहे ठगां वस नहीं रहे ठगोरी माया ने छोड्या ठाम चोखो पावे है॥ ५८२ ॥

डांग लिधी डोकराने डग मग पग धरे, डगा डोली मन करे धरम न ध्यावे है। द्रढ सम्यक्त्व द्रढ मन वच काया नहीं, द्रढ भावां दान शील तप नहीं भावे है। डर पर भव केरो आणे नहीं जढ मुढ, डाढी मुच्छ धोरी हुई तोंही विषय सुख चावे है। रिख लालचंद कहे द्रढ मन

जब रहे, दृगा ड़ोली छांड्या सेती परं पद पावे है ।।५८३।।

ढेटो हुवा ज्ञान घटे ढेटो हुवा मान घटे, ढेटो हुवा विनय घटे ढीलो हुवे धर्म सुं । ढेटो हुवा बुरो लागे ढेटो हुवा दूरो भागे ढेटो हुवा क्रोध जागे जावे लज्जा शर्म सुं । ढेटो हुवा नर्क जाय ढेटो हुआ भ्रष्ट थाय ढेटो हुवा मार खाय दुःख पावे कर्म सुं । रिख लालचंद कहे ढेटा पणे दुःख लहे, ढेटा ढेटी दास होवे मार सहे मर्म सुं ।। ५८४ ।।

नाना विध वेष धरे नाना विध कर्म करे, नाना विध पेट भरे मिटे नहीं मरणो । नाना विध देव भणे नाना विध गुरु गिणे, नाना विध जीव हणे धरे मन सरणो । नाना विध धोक देवे नाना विध धूप खेवे, नाना विध खाणा लेवे होवे न उधरणो रिख लालचंद कहे देव अरिहंत लहे गुरु निर्ग्रन्थ ओर दया धर्म करणो ।। ५८५ ।।

तरण तारण देव ज्याकी नित्य कीजे सेव,तेही अरिहंत कर्म वेरी जान हणिया, तेही गुरु तिरण तारण जाने त्याग दिया सर्वथा सावज जोग सोही गुरु गणिया । तंत सार तेही धर्म जाणे दया तणों मर्म, तासु टूटे आठो कर्म शिव सुख भणिया । रिख लालचंद कहे तिनो तत्व शुद्ध लहे खेवा पार करे जाने धन्य मात जणिया ।। ५८६ ।।

थिर नहीं तन मन थिर नही जोवन धन, थिर नही राजा

दरशण शल जाणिये, रिख लालचंद कहे परं पद पाया मुगत अनंता सुख सिद्ध का वखाणिये ॥ ५९३ ॥

पेट ही के काज मानों जोग लेही जोगी भयो, पर सुख देखी झुरे जैसे कांगो हाटको । भेक लई भटकत गटकत सब रस झूठो मोती मेंगो नहीं पोयो फूंदो पाटको । औरूं को उपदेश देत आप पोते रीतो रेत, होंस नहीं पुगत है दौड़ायां घोड़ो काठ को । रिख लालचन्द कहे समकित विना नर धोबी केरो कुत्तो मानों घर को न घाट को ॥ ५९४ ॥

फूले मति तन धन जोबन देख देख, फूले मती रूप रग गोरो देखी गात कूं । फूले मती मात तात भ्रात पुत्र पोता देखी, फूले मती सज्जन कुटुम्ब देखी साथ कूं । फूले मति डाढी मूंछा कारी कारी देख देख, फूले मती राजा की संगत करी वात कूं । रिख लालचन्द कहे फूल्या फूल घात लहे फूल्यो साधु देख लहे निर्दोस भात कूं ॥ ५९५ ॥

वड़े वड़े योद्धे कई काल आगे हार गया वड़े २ भूप कई नर्क मुझारी है । वड़े २ भूप कई नीच नार कूंख जण्या, वड़े२ भूप निज मात कीनी नारी है । वड़े२ योद्धे कई सूरी पूरी कूंख जण्या, वड़े २ योद्धा थया ... ना स्वारी है । रिख लालचन्द कहे वड़ो_ हुआ

वंदूक बांधे, लाल कुंदो अगिरयो जैसे पाकी गूमडी। कदीयक जीम भरचो जोर राखे राज जैसो, कदीयक मांग खावे रांक भाट डूमडी। रिख लालचंद कहे दौलत ने धूल गिणे दया दान शुद्ध सेति छूटे माया सुमड़ी ॥ ५९० ॥

धर्म है मङ्गल महा दया सत्य दत्त मांही शिल हूं संतोष मांही विनय मूल धर्म है। धर्म सेती सुख लहे धर्म-सेती कर्म दहे बिना धर्म दुःख लहे वंध आठों कर्म है, धर्म हिते देवलोक धर्महिते मिले मोक्ष, धर्म हिते सर्व थोक मिटे मिथ्या भ्रम है। रिख लालचंद कहे धर्म सुख जव लहे आठो कर्म सर्व दहे होवे सिद्ध ब्रह्म है ॥ २९१ ॥,

नमणी क नमे गुणवान विनय वान नमे जात वान कुल वान नमे नरनारी है। नमे हय नमे गय नमे ज्ञानी नमे दानी, नारेयल केला जल नमे फल भारी है। नमे पुत्र पुण्यवान नमे वहु शीलवान नमे शिष्य विनय वान सो ही अवतारी है। रिख लालचंद कहे नम्या गज वेल लहे, सोना से भी मूंगो मोल नम्या अधिकाई है ॥ '१९२ ॥

पाप है अठारा हिंसा झूठ चोरी मेथुन परिग्रहो, क्रोध मान माया लोभ जाणिये। पाप मूल राग द्वेश कलह अभ्याख्यान, आल पैशून-पराअपबाद नहीं भणिये। पाप मांही आणे रति अरति-भजन माहीं माया, मोसो मिथ्या

दरशण शल जाणिये, रिख लालचंद कहे परं पद पाया मुगत अनंता सुख सिद्ध का बखाणिये ॥ ५९३ ॥

पेट ही के काज मानों जोग लेही जोगी भयो, पर सुख देखी झुरे जैसे कांगो हाटको। भेक लई भटकत गटकत सब रस झूंठो मोती मेंगो नहीं पोयो फूंदो पाटको। ओरूं को उपदेश देत आप पोते रीतो रेत, होंस नहीं पुगत है दौड़ायां घोड़ो काठ को। रिख लालचन्द कहे समकित बिना नर धोबी केरो कुत्तो मानों घर को न घाट को ॥ ५९४ ॥

फूले मति तन धन जोबन देख देख, फूले मती रूप रग गोरो देखी गात कूं। फूले मती मात तात भ्रात पुत्र पोता देखी, फूले मती सज्जन कुटुम्ब देखी साथ कूं। फूले मति डाढी मूंछा कारी कारी देख देख, फूले मती राजा की संगत करी बात कूं। रिख लालचन्द कहे फूल्या फूल घात लहे फूल्यो साधु देख लहे निर्दोस भात कूं ॥ ५९५ ॥

वड़े वड़े योद्धे कई काल आगे हार गया वड़े २ भूप कई नर्क मुझारी है। वड़े २ भूप कई नीच नार कूंख जएया, वड़े२ भूप निज मात कीनी नारी है। वड़े२ योद्धे कई सूरी पूरी कूंख जएया, वड़े २ योद्धा थया धर्म विना ख्वारी है। रिख लालचन्द कहे वड़ो हुआ कांई होवे

बंदूक बांधे, लाल कुंदो वणिरयो जैसे पाकी गूमडी। कदीयक जीम भरचो जोर राखे राज जैसो, कदीयक मांग खावे रांक भाट डूमडी। रिख लालचंद कहे दौलत ने धूल गिणे दया दान शुद्ध सेति छूटे माया सुमड़ी ॥ ५९० ॥

धर्म है मङ्गल महा दया सत्य दत्त मांही शिल हूं संतोष मांही विनय मूल धर्म है। धर्म सेती सुख लहे धर्म-सेती कर्म दहे बिना धर्म दुःख लहे बंध आठों कर्म है, धर्म हिते देवलोक धर्महिते मिले मोक्ष, धर्म हिते सर्व थोक मिटे मिथ्या भ्रम है। रिख लालचंद कहे धर्म सुख जब लहे आठो कर्म सर्व दहे होवे सिद्ध ब्रह्म है ॥ २९१ ॥,

नमणी क नमे गुणवान विनय वान नमे जात वान कुल वान नमे नरनारी है। नमे हय नमे गय नमे ज्ञानी नमे दानी, नारेयल केला जल नमे फल भारी है। नमे पुत्र पुण्यवान नमे बहु शीलवान नमे शिष्य विनय वान सो ही अवतारी है। रिख लालचंद कहे नम्या गज वेल लहे, सोना से भी मूंगो मोल नम्या अधिकाई है ॥ '९२ ॥

पाप है अठारा हिंसा झूठ चोरी मैथुन परिग्रहो, क्रोध मान माया लोभ जाणिये। पाप मूल राग द्वेश कलह अभ्याख्यान, आल पैशून पराअपवाद नहीं भणिये। पाप मांही आणे रति अरति भजन माहीं माया, मोसो मिथ्या

दरशण शल जाणिये, रिख लालचंद कहे परं पद पाया मुगत अनंता सुख सिद्ध का बखाणिये ॥ ५९३ ॥

पेट ही के काज मानों जोग लेही जोगी भयो, पर सुख देखी झुरे जैसे कांगो हाटको। भेक लई भटकत गटकत सब रस झूंठो मोती मेंगो नहीं पोयो फूंदो पाटको। औरूं को उपदेश देत आप पोते रीतो रेत, होंस नहीं पुगत है दौड़ायां घोड़ो काठ को। रिख लालचन्द कहे समकित विना नर धोबी केरो कुत्तो मानों घर को न घाट को ॥ ५९४ ॥

फूले मति तन धन जोबन देख देख, फूले मती रूप रग गोरो देखी गात कूं। फूले मती मात तात भ्रात पुत्र पोता देखी, फूले मती सज्जन कुटुम्ब देखी साथ कूं। फूले मति डाढी मूंछा कारी कारी देख देख, फूले मती राजा की संगत करी वात कूं। रिख लालचन्द कहे फूल्या फूल घात लहे फूल्यो साधु देख लहे निर्दोस भात कूं ॥ ५९५ ॥

वड़े वड़े योद्धे कई काल आगे हार गया वड़े २ भूप कई नर्क मुझारी है। वड़े २ भूप कई नीच नार कूंख जण्या, वड़े२ भूप निज मात कीनी नारी है। वड़े२ योद्धे कई सूरी पूरी कूंख जण्या, वड़े २ योद्धा थया धर्म विना ख्वारी है। रिख लालचन्द कहे वड़ो हुआ कांई होवे

बड़ो होई धर्म करे जांका पुण्य भारी है ॥ ५९६ ॥

भगवंत भारी पद केरो नाम, भगवंत अंत मरण मिटायो है। भगवंत भग नाम योनि को करयो है अंत, भगवंत भय अंत सातनको आयो है। इस लोक परलोक आदान अकस्मात मरण आजीवकाय अपयश पायो है। रिख लालचन्द कहे भगवंत अर्थ एह भगवंत हुआ पीछे जय जय कार थयो है ॥ ५९७ ॥

मनुष्य जनम बिना मुगत न जावे कोई, मनुष्य जनम विना धर्म न होवे है। मनुष्य जनम मांही करणी करीने हुआ चक्रव्रत वासुदेव इन्द्र सुख पावे है। मनुष्य पन्ने से होवे तीर्थंकर आचार्ज उपाध्याय ओर साधु तूं क्यों रीतो खोवे है, रिख लालचन्द कहे मनुष्य जनम लई दया धर्म पाल्या बिना भव भव माहीं रोवे है ॥ ५९८ ॥

जनम विना रीतो मती खोवे मूढ कु संगत करेगा तो जनम विगाड़ेगो। धर्मी पुरुष देखी निन्दा मति करे मूढ, झूंठो आल देई ने तूं पड़दा उघाड़ेगो। साधु संत आंख्या देखी भूंडो भूंडो वोले मूढ द्वारे आया दुगंच्छा करीने तूं ताड़ेगो। रिख लालचन्द कहे वन्दे न तो निन्दे मती, निंदेगा तो भंगी होय सेतखानो झाड़ेगो ॥ ५९९ ॥

यही जीव करणी करी ने जावे पर भव, येही जीव पर भव माहीं सुख पावे है। यही जीव आरत रूद्र ध्यान ध्यातो मरे, वही जीव नर्क तिर्यंच माहे जावे है। यही जीव धरम शुकल ध्यान ध्यातो मरे येही जीव सुर नर शिव सुख पावे है। रिख लालचन्द कहे जीव सुख जब लहे, दान शील तप भाव शुद्ध मन ध्यावे है ॥ ६०० ॥

राम राम राम राम रट रयो जग जीव, राम काम उत्तम किया सुं सुख पाया है। रामजी है सो ही रम रया घट घट माहीं, राम अरिहंत होई केवली केवाया है। राम निरजन निराकार होई सिद्ध थया, जनम मरण जरा रोग को मिटाया है। रिख लालचन्द कहे राम नाम सर्व लहे रामजी ओलखिया जाने मिथ्यात मिटाया है ॥ ६०१ ॥

लालच करयां सुं लक्ष चोरासी में फिरयो जीव, लालच करयां सुं दुःख दालिद्र आवे है। लालच करया सुं राजा रावण की कीर्ति घटी, लालच करया सुं दुनियां भी दुःख पावे है। लालच करया सुं जोगी जंगम संन्यासी आदि, धर्म को भुला धन माल को ध्यावे है। रिख लालचंद कहे लालच सुं दुःख लहे, जिन रिख शंख ब्रह्म दत्त सा छेदावे है ॥ ६०२ ॥

वड़ो होई धर्म करे जांका पुण्य भारी है ॥ ५९६ ॥

भगवंत भारी पद केरो नाम, भगवंत अंत मरण मिटायो है। भगवंत भग नाम योनि को कर्यो है अंत, भगवंत भय अंत सातनको आयो है। इस लोक परलोक आदान अकस्मात मरण आजीवकाय अपयश पायो है। रिख लालचन्द कहे भगवंत अर्थ एह भगवंत हुआ पीछे जय जय कार थयो है ॥ ५९७ ॥

मनुष्य जनम विना मुगत न जावे कोई, मनुष्य जनम विना धर्म न होवे है। मनुष्य जनम मांही करणी करीने हुआ चक्रवत वासुदेव इन्द्र सुख पावे है। मनुष्य पने से होवे तीर्थंकर आचार्ज उपाध्याय और साधु तूं क्यों रीतो खोवे है, रिख लालचन्द कहे मनुष्य जनम लई दया धर्म पाल्या विना भव भव माहीं रोवे है ॥ ५९८ ॥

जनम विना रीतो मती खोवे मूढ कु संगत करेगा तो जनम विगाड़ेगो। धर्मी पुरुष देखी निन्दा मति करे मूढ, झूंठो आल देई ने तूं पड़दा उघाड़ेगो। साधु संत आंख्या देखी भूंडो भूंडो वोले मूढ द्वार आया दुगंच्छा करीने तूं ताड़ेगो। रिख लालचन्द कहे वन्दे न तो निन्दे मती, निंदेगा तो भंगी होय सेतखानो झाड़ेगो ॥ ५९९ ॥

गुरां के चरण शिष्य नमी के उचरिया । आसोज शुकल पक्ष ग्यारस मंगलवार, कोटा में चौमासो करी सवैया करिया । रिख लालचन्द कहे सिद्धांत वचन सार, उपदेश बावनी कीनी ऐसाइ नाम धरिया ॥ ६०६ ॥

॥ अथ अठारा पाप का सवैया ॥

दोहा—महावीर व्रध मानजी । सासण रा सिरदार । चरण कमल ज्यांरा नमूं । भणस्युं पाप अठार ॥ १ ॥

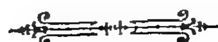
पाप अठोर अति बुरा । भरमावे संसार । जन्म मरण करतो फिरे ॥ कबहु न पावे पार ॥ २ ॥

सूत्र में निरणो घणो । विविध भांति परकार, विस्तार गुरु मुख दुख ये साम्भलयो । ते सुणजो अधिकार ॥३॥

पाप अठारह सेवता । बांधे चीकणा कर्म । पाप अठारह त्यागता । संवर निर्जरा धर्म ॥ ४ ॥

अडल ॥ दोहा—हिंस्या झूंठ अदत्त मैथुन परि ग्रहो क्रोध मान माया लोभ राग द्वेश मति करो । कलह अभ्याख्यान पिशुन परिपरा वाद है । रति अरति माया मोसो पाप उद्‌माद है ॥ ५ ॥

दोहा—मिथ्या दर्शन शल्य है । पाप अठारा भांत सगला ने छांडयां थका, बांधे जोति अति क्रांत ॥ ६ ॥



वे दिन चिंतारे क्यो नी नर्क निगोद गयो, वे दिन चिंतारे क्यों नी कीड़ो वेग्यो पोठा में। वे दिन चिंतारे क्यों नी शूरी पूरी कूःख जरायो, वे दिन चिन्तारे क्यों नी भ्रष्टो झाडयो कोठा मे। वे दिन चिंतारे क्यों नी नीची नाड़ ऊँचा पांव, गर्भ मांही उलझीयो भ्रष्टा के तू कोठा में, रिख लालचन्द कहे वे दिन तू भूल गयो, धर्म विना दिन दहाड़े लुटावे छे चौठा में ॥ ६०३ ॥

संगत करीजे शुद्ध साधन की चोखे चित्त, संगत न कीजे जढ पाखंडी ने भ्रष्ट की। संगत न कीजे वेश्या दासी परनारी केरी, संगत करीजे चोखी धर्मी ने इष्ट की। संगत करीजे दया दान तप वंत केरी, संगत न कीजे चोर लंपटी ने दुष्ट की । रिख लालचन्द कहे कु संगी सुं दुःख लहे, संगत करीजे सदा क्रिया अरु कष्ट की ॥ ३०४ ॥

सिरे ठाम सिद्धजी विराजे सुख सासता में, ऐसा सुख संसार में कहीं नहीं भासता। शिव मयल मरुव मणंत मखय मवावा है, मपुण रावंती सिद्ध गए नाम सासता। साध अने साधवी श्रावक अरु श्राविका ने,समर समाई करो राखो चोखी आसता। रिख लालचन्द कहे शिव सुख जब लहे, कर्म वन सब दहे होवे सिद्ध सासता ॥ ६०५ ॥

हिरदे हर्ष धरी बावन सवैया करी, समझावा, काजे अक्षर उचरिया। संवत अठारे अरु सतंतर का साल माहीं

गुरां के चरण शिष्य नमी के उचरिया । आसोज शुक्ल पक्ष ग्यारस मंगलवार, कोटा में चौमासो करी सवैया करिया । रिख लालचन्द कहे सिद्धांत वचन सार, उपदेश बावनी कीनी ऐसाई नाम धरिया ॥ ६०६ ॥

॥ अथ अठारा पाप का सवैया ॥

दोहा—महावीर वध मानजी । सासण रा सिरदार । चरण कमल ज्यांरा नमूं । भणस्युं पाप अठार ॥ १ ॥

पाप अठार अति बुरा । भरमावे संसार । जन्म मरण करतो फिरे ॥ कबहु न पावे पार ॥ २ ॥

सूत्र में निरणो घणो । विविध भांति परकार, विस्तार गुरु मुख दुख ये साम्भलयो । ते सुणजो अधिकार ॥३॥

पाप अठारह सेवता । बांधे चीकणा कर्म । पाप अठारह त्यागता । सँवर निर्जरा धर्म ॥ ४ ॥

अडल ॥ दोहा—हिंस्या झूंठ अदत मैथुन परि ग्रहो क्रोध मान माया लोभ राग द्वेश मति करो । कलह अभ्याख्यान पिशुन परिपरा वाद है । रति अराति माया मोसो पाप उदमाद है ॥ ५ ॥

दोहा—मिथ्या दर्शन शल्य है । पाप अठारा भांत सगला ने छांडयां थका, बांधे जोति अति क्रांत ॥ ६ ॥

॥ प्रथम जीव हिंसा निषेध ॥

सवैया ॥ ३१ ॥

प्रथम प्रणांती पात, जीवन की करे घात, विसोला सु काटे हाथ, केसो दुख पावेरे ॥ जो तोरुँ तरकारी, काकड़ी करेला केरी खार वेशवार भरी, तली भूंजी खावेरे, पेलां को काढी ने मांस आपका की करे आस, चिडियॉ की जिभ्यां का ग्रास पापी ने सुहावे रे, रिख लालचंदजी भणे, क्योंरे तु जीवाँ ने हणे वांके उदय आया कर्म, तू क्यों नवा बाँधे रे ॥ ६०७ ॥

प्रथवी काय अप काय, तेउ काय वायु काय, राई जोति माहिं, जीव असंख्याता कहवायरे, सव वालुकन मेघ, छांट रोम खंडवाथी,हरिकाय माहिं जीव अन्नता ही लीया रे, जो हजारां गरीवा ने लाठी मारे, एक एक देता कहो केसा दुख सह्यारे, रिख लालचंदजी भणे क्याने तु जीवा ने हणे, वांके उदय आया कर्म, तु क्यूं नया बांधे रे ॥ ६०८ ॥

॥ दूजो झूंठ पाप ॥

दूजो पाप मृषा वाद, वचन को उदमाद, वोले लोपी मर्याद चार प्रकार रे, क्रोध करि लोभ करि, भय करि हास करि, तथा दस प्रकार वोले वार वार रे। क्रोध

मान माया लोभ राग द्वेश भय हास, कहि कहि नट जाय, लजा नहीं लगार रे। नहीं भाषे हिंसा धर्म, सावज सुं बांधे कर्म, रिख लालचन्दजी कहे, भूंठ त्यागे खेवो पार रे ॥ ६०९ ॥

कामदेव श्रावक ने देवता डिगावन आयो, धर्म छांडवाका भाषा कुड़ी नहीं भाष हीं, अरणक श्रावक ने मेंतारज मुनिवर, ध्यान दृढ धर दीनो, राख्या सांच सुद्ध राखी है, जय माली ने गोसालो ने, भूंठी भाष मिथ्या भाष, संसार में दुःख पासी, सुख अविलासी है ॥ रिख लालचन्दजी कहे, झूंठ त्याग्या से होवो बड़ भागी सांच राख्यां से होवे पार, सूत्र जिनका साखी है ॥ ६१० ॥

॥ तीजो चोरी पाप ॥

तीजो पाप अदत चोरीने लेवे, पर धन जींको मन ओर तरु तल ध्यान ध्यावे रे, ताला तोड़ें ऐंडा देवे धाड़ो मारे डंडे ठगे बिणज व्योपार मांहि चोरां दुःख पावरे, संजोगी बिजोगी कवि संता चित विषे राखे, चोरी करयां लागे दाह और तक ल्यावेरे। रिख लालचन्दजी भणे, चोरी त्याग्यां धर्म वणे, दोनों भव आनन्द में सुखे दिन जावे रे ॥ ६११ ॥

वांक, हाथ पग कंपे आंसु नाखे मुख रोवे रे, छाती छाती कूट माथो फोड़ पेट में कटारो मारे, छोरा छोरी पटकी न वर वालबो विचारे रे, रिख लालचन्दजी भणे, सांप कुत्ता बांदरा विलाव जोहि, क्रोध नर होइके जमारो योही खोवेरे॥ ६१७ ॥

श्रेणिक कोणिक भाई चक्री ब्रह्मदत्त राय, कंस वासुदेव जरासिन्धु आदि मेरिया, सोमल पालक पापी दीपायन खंदकजी, राजा आदि मरचा कारज न सरिया, पर देशी हरकेशी कामदेव मेतारज, अर्जुन माली आदि क्रोध जीत्या तरिया, रिख लालचंदजी भणे क्षेम करि सम गिने राग द्वेश कर्म हने करो चोखी कीरिया ॥ ६१८ ॥

॥ सातवां पाप मान ॥

मान अभिमान गर्दन मुख ऊँचो राखे, ऊँची २ वातें करे ऊँची मूँछा मोडेरे, आपकी वडाई राखे औरन की ओछी भाखे, गया वीत्या मर्म दाखे हेत प्रीत तोडे रे पेलांको पंडित पणो कभी न सुहावे, जीन पोशा धर्म ध्यान वंध्या केई निन्दा जोड़े रे, रिख लालचन्दजी कहे मंद मोह मान मूढ़ राखेरे, आंक वांक बोले जद केदि आज्ञा तोड़ेरे ॥ ६१९ ॥

रावण महि रावण न मान राख्यो, जम्माली ने गोशाला

ने वीनो लोप्यो चोड़ेरे, गुराँ सु दुरा होई ने मान बस मत काड्यो आपकी कीर्ति काज चहुँ दिश दोड़ेरे, अर्जुन दिशान भद्र राजाजी ने बाहुबल बचन सुनी ने मान मोड़ेरे, मान जित्यो तीर्थंकर गणधर मुनिजी ने, रिख लालचन्दजी भणे मान राक्या खोड़ेरे ॥ ६२० ॥

॥ आठवां माया दगाबाजी पाप ॥

माया पाप आठमो कपट केलोणी करे, दावे मूढ माया सेवे जाणे नहीं कोई रे, माया ही से चोरी करे जारी करे दगो करे, ठग से छल छिद्र सुँकां खावे सोईरे, माया वियो विणज व्यौपार मांही, आँख्या रोड़े, कूडा तोला मापा करे दवे भोलो होईरे, माया वियो चाड़ी चुगली खावे धर्म ठग, रिख लालचन्दजी भणे माया मुनि राज खोईरे ॥ ६२१ ॥

माया मल्लीनाथजी पूर्व भव कीधी होती, तपस्या बधाई मोह सहित महाबलजी, चित्त प्रधान परदेशी राय समझायो, मोह नामे माया दोर राख्या कोसल्याजी माया त्यागी, गण धर केवल तीर्थंकरां ने, मोटा मोटा मुनिवरा छांड्या माया छलजी, माकड़ी विसमरी बिलाई काग कुत्ता, राखे बुगला के छल घणों माया मछियां गलजी ॥६२२॥



॥ नवमो पाप लोभ ॥

लोभ पाप नमो कह्यो असना वध्यां होवे जाणे, सब लोक केरो धन लेसु हाथ रे, धरि जाय मरि जाय भेलि ज़ाय विसर जाय, तृष्णा अनंती धन असंख्या तो भाखे रे, खेतु वथ्थु हिरण्य सुवर्ण धन्य धान्य दो पद चोपद कुंभि धातु परिग्रहो नो जातरे, रिख लालचंदजी भणे लोभ लाज छांड्यां विना, तृष्णा वधाया धन ले गया न साथरे ॥६२३॥

मोमन सेठ जैसा शम्भू चक्रवर्ती जैसा लोभ कर्यो, समुद्र में डूब्बा काली धार रे, कपिल केवलीजी ने लाभ सेती लोभ छांडयो घणो, चोर समझावी कियो खेवो पार रे, जिन रिख जीन पाल, लोभ सेती पाया दुःख, हाथी केरे काज कोणिक झुंझार रे, रिख लालचन्दजी भणे लोभ लाय खोटी गीणे, तृष्णा को जीती मुनि थया अणगार रे ॥ ६२४ ॥

॥ दशमो राग पाप ॥

माया लोभ दोहु मिला राग पाप दशमों, जो मोह राग माहिं राच्या उपजे न शर्म रे, काम राग सनेह राग दृष्टि राग, तीनों खोटा, तीनों राग माहिं राच्या वांधे मोटा कर्म रे, काम राग रहे नेमि स्नेह राग भाव देव, द्रष्टी राग अखाड़ भूत जीत पाल्यो धर्मरे, अनु कम्पा

धर्म सुभ जोग पुन्य बांधे, रिख लालचन्दजी कहे वीतराग सुख परम रे ॥ ६२५ ॥

धर्म राग गोत्तमजी वीरजी सुं राखी, घणा पाप कर्म बांध्या नहीं चार ज्ञान धारिजी, मोह राग रामजी के लछमन लिया फिरया, मोह जीत्यां पीछे हुआ अणगारजी गुरुजी सुधर्मजी अनुकंपा राग राखे, नाना विधि साता देवे राखे इकत्यारजी, रिख लालचन्दजी कहे भारी कर्म पाप गिने, विषय राग पाप सेती भ्रमे है संसारजी ॥ ६२६ ॥

॥ द्वेष पाप अग्यार मों ॥

क्रोध मान दोई मिल्या द्वेष पाप ग्यारमों, जो दोनु थई काल तांई द्वेष राखे चालजी, पैला कीजो संपदा कुं देख २ द्वेष करे, अछता अवगुण बोले भूंठा देवे आलजी, सीता बाई भामंडल पजन कुमारजी, द्वेष देव उजाड़ में गयो चंडालजी, रिख लालचंदजी भणे द्वेषी रहे द्वेष पणे, रैना देवी जेहो गिणे बूडे ततकालजी ॥ ६२७ ॥

कुंजर कु देखि जैसे द्वेष करी भुसे श्वान, तेसे द्वेष राखि बुढ़ नरकां में जावनों, पर भव में बांध्या पाप ज्याको नहीं करे संताप, द्वेष करि फेरू बांधे अछता लगावनो, द्वेष करि रुकावे बंधावे मार देवे, हाथां आस्ता

घटावे द्वेषी मकुंज लावणो, द्वेष मुख नन्दा मुनि आण मद मूढ होय, रिख लालचंदजी भणे दोनों भव विगड़ा वनो ॥ ६२८ ॥

॥ कलह बारमो पाप ॥

कलह पाप बारमों जो तूंकारा तुँकार लड़े, आंक वाक बोले तोने काचा ने खाजाउंगो, रांड करे भांड करे कलह करे, हांका हांक देख जो तू म्हारा काम जुतियां पिटाउँगो, थुंकारा थुंकार करे राता २ फाड़े नैण, गालियां बोले खोटा बैन राज में रुकाउँगो, रिख लालचंदजी भणे कलह राड़ खोटी गिने, राड़ त्यागी मुनि जन ज्यांका गुण गाऊंगो ॥ ६२९ ॥

रावण विभीक्षण में इन्द्रजीत कलह करि रें कारे रें कारे बोलिया, अपने निज भाईजी कुंभ करन बीच पड्या विभीक्षण दूर करियाँ, राम पास गया बोलया आवो लंका राईजी, कलहै काज केकई ने राड को उपाय कियो, राम लछमन सीता वन में सिधाइजी, सासु वहु माई बाप झूंजडा ज्यो कलह करे, रिख लालचंदजी भणे त्याग्यां सिव पाइजी ॥ ६३० ॥

॥ अभ्याख्यान १३ मों पाप ॥

अभ्याख्यान आल देवो तेरमो कह्यो छै पाप, झूंठो

माथे आल दिया मोटो लागे पाप रे, बूढी ने डाकण कहे तरुणा ने जार कहे, दालिद्र ने चोर कहे लागे मोटो संताप रे, आल दियो सुभद्रा के आलदियो सीताजी के, आलदियो अंजना के फिरया माई बाप रे, रि० ला० भणे आल दियां आल मिले, अजस लफगी काल करि दुःख पावे आपरे ॥ ६३१ ॥

सीताजी का जीवने पूर्व भव मुनि माथे, कुशील पणां को योंही दियो झूंठो आलजी, मुनि राज खम्या कीनी ध्यान धरि मुन लीनी, देवता ने साह कीनी मुनि तो दयालजी, सुदर्शन सेठ माथे अविया ने आल दियो, सूली फाटी सिंहासन थयो ततकालजी, रि० ला० भणे आल देवो खोटो गिणे, यांहि राजा मारे डंड करि जावे कालजी ॥ ६३२ ॥

॥ पिसुन पाप चवदमो ॥

पिशुन चवदमो पाप चाडिरे चुगली खावे, हाथ कछु आवे नहीं दाह क्यूं लगावे रे, पहरियो ओढियो खायो पीयो, गैर को सुहावे नाहिं, अहो निस आरत रुद्र ध्यान ध्यावेरे, कोई वधायो मान ऊंसु ही करे तोफान, कृतघ्न चाडि खावे दोनों भव बिगाडेरे, रि० ला० भणे सगला ने समीगने, चाड़ी चुगली छांड्यॉ शिवपुर पावरे ॥६३३॥

चाडी खाई मीताजी की सोक्यां ने लगाई दाह, सिया महा राणी सिंह सेण सासु बहु जलाईजी, कोइ घरां धन वध्यो न सुहावे चाडियाने, कामदार कोतवाल राजा सुं भिडायजी, ऊंको पूरो पुन्य होवे राजा राज नित जोवे, चाडिया जमारो खोवे इज्त गुमाइजी, रि० ला० भणे हार हाथी काज कीनो पद्मावती रानी ने चाड्या कोणीक मीखाईजी ॥ ६३४ ॥

॥ परिपरा वाद १५ मों पाप ॥

परिपरा वाद पाप पद्रमों खोटो कह्यो, पेलां का अवगुण वाद बोलत चांडाल रे, गुराजी सुं शिष्य न्यारो होई ने औगुण बोले, टोला माहिं छेद भेद पाडे तत काल्रे, राजा प्रधान सेठ गुमास्ता तात मात पुत्र भ्रात, लड़ा मारे अवगुण लेवावे रे, रिख लालचन्दजी भणे परपरा वाद पाप छोडो, आपका अवगुण काड़ो तजो मोह जाल्रे ॥ ६३५ ॥

परिपरावाद बोल्या गोशाला ने वीरजी का, तेजुलेस्या नाखी वाल्या दोय अणगारजी, तेजुलेस्यां नाखी पाछे मुख करि पाछी अली, वीर कह्यो वेगो चेत दिन सात कालजी, परपरावाद छांड्यो गुण ग्राम करवा मॉड्यो, श्रवन सोगन छांड्यो दियो धरकारजी, रिख लालचन्दजी

भणे, निन्दा करि वो खोटो गिने, परपरावाद छॉडयो पावे खेवा पारजी ।। ६३६ ।।

॥ रति अ रित पाप सोलमों ॥

रत्यारती सुख वैद्या पाप कह्यो सोलमो, जे अ रित भजन दया धर्म माहिं ठाणे हैं, सम्मर सामाई पोसा पडिक्कमणो बांसी सुन्या मन चित्त लावना, असुडि सुं आन है, ख्यालउ के तुल विषे भोगन को रत्न मानें, चौमासा में मेला गोठां हिंसा सुख माने है, रि० ला० भणे होली खेल्यॉ सुख गिने बैठसी वैगारसी जो धर्म ठाम जाणे है ।। ६३७ ।।

अरति अमू जो मेटचो मुनि मेघराज ने, अरति अमुजो मेटी अरणक मुनिजी, अरति अमूजी आनि कुंडरीक धर्म खोयो, कर्म बॉध्या नारकी का हुआ घना खुनिजी, रत्ति बैदी धर्म माहिं डंडनजी धन्नाजी, अर्जुन मालीजी मेटचा कर्म खुनीजी, रि० ला० भणे अरति अशुभ गिने रति उँचि सहित चोखी राखो धर्म धुनिजी ।।६३८।।

॥ माया मोहसो सतरमो पाप ॥

माया मोहसो सतरमो पाप गिण्यो, ग्यानी गुरां, माया दगा बाजी सहित झूँठ वोल्या पापी रे, मूढ दगाबाजी करे झूँठ बोले लोगां माहिं, सॉच ने तो

झूठो कर होवे आप थापीरे, आपही सिखाय देवे आपहि बुजाई लेवे, आपहि तो भांत्या पाडे करदे मिलाप रे, रि० ला० भणे औरां ने तो योंहि गिणे, आप घणो डाहो बणे पर कूं संतापी रे ॥ ६३९ ॥

सुरिकंता राणी घणी गुढ दगा बाजी करि, म्हारे करो पारनो मोह पापनी ने तारोजी, मोसु तो काहीं होवे नाहि कायर छुं भाली ढाली, झूठी बोली जहर दियो गलो भींच्यो न्यारोजी, रेणा देवी माया मोसो करि जिन रिख मार्‌यो, कुत्ता काग बिलाव जोई पाप लेवे भारीजी, रि० ला० भणे माया मोहसों छांडयाँ मोक्ष गया, बड़ा २ मुनि जैन धर्म लाग्यो प्यारोजी ॥ ६४० ॥

॥ मिथ्या दर्शन सल्य १८ मों पाप ॥

मिथ्या दर्शन सल्य अठारमो पाप कह्यो, मिथ्या खोटा सरधा को सल राख्या खोटोरे, खोटा देव खोटा गुरु खोटो धर्म सांचा जाने, मिथ्या मति माही राची पाप करेमोटो रे, सतराई पाप सेवे डर पर भव राखे नाहिं, पाप फल माने नाहि करनी को ओटो रे, रि० ला० भणे मगला ने खोटो गिने, नास्तिक वादी आदि समज को टोटो रे ॥ ६४१ ॥

मिथ्यात का बोल दश पन्द्रह किया पच्चीसो, मिथ्यात छे भूँडा कोई मत सेवो भाईरे, मिथ्यामत सेव पापसे निसदीन रचि रह्यो, हिंसा धर्म सुचि धर्म दया दान उठाई रे, मूलको मिथ्याती मिथ्या दृष्टि मिथ्या मोहनी सुं, सत्तर कोड़ा कोड़ी सागर तांई धर्म न पाई रे, रि० ला० भणे समकित व्रत हने, अर्द पुद्गल ताई अब बिजु थाई रे ॥ ६४२ ॥

अठाराही पाप सेता अनन्तोही काल गयो, अठाराई पाप छॉडया सदा सुखी होई रे, अनन्तई चोवीसी अनन्ताई जीव सिध थया, द्रव्य क्षेत्र काल भाव ज्ञाना देव जोवे रे, पापी जीव पच रह्या नाना भांती दुःख सह्या, अजहुन चेत मूढ जमारो योही खोवे रे, रि० ला० भणे गुरु ग्यानी री कृपा सूँ, पाप कर्म मैल दया धर्म सूं धोवे रे ॥ ६४३ ॥

अठारा पाप केरो उपदेश दीनों, पूज्य प्रशाद एह खयो उपसम कीनो है, सम्वत अठारह से इक्याण वें का साल माहिं, आसोज शुक्ल पक्ष बुधवार लीनो है, धन तेरस के दिन चोड़े उपदेश दीनो, सवैया इकतीसा ग्यान रस पीनो है, रि० ला० भणे है शहर कोटा का चौमासा माहीं, भूल्या चुक्या को मिच्छामि दुक्कड़म दीनों है ॥ ६४४ ॥ कक्का बावनी ॥ पूर्ण ॥

पन्नालालजी महाराज का सवैया

२० वहरमान वन्दन

अरिहत विश जोड़ वन्दो नित मानमोड, घातिया करम तोड़ केवल के धार है, चार जम्बुद्वीप मांइ धात्री खंड अष्ट जाइ, अर्ध पुखराज मांइ आठ सरकार हैं, जगन जिनेन्द्र वीश वाणी है गुण पैंतीस, अतिषय चौतीस कर सोभत अपार है, पन्नालाल पुरो आस काटो भव तणी पास, मुक्ति में देवो वास यही सुख सार है ॥ ६४५ ॥

॥ सिद्ध स्थान ॥

स्वर्ग छव्वीस जांके ऊपर तो मोक्ष जाण, जहां तो विराजे सिद्ध अष्ट कर्म तोड़ के, जन्म मरण दुःख जरा के मिटाये सब, क्षायक समकित धर मिथ्या अंध छोड के, लोक ही अलोक तणे देखत हैं भाव प्रभु, केवल दर्शन ज्ञान तणी दीपे जोड के, अनंत सुखों की लेर माहीं हैं विराजमान, पन्नालाल लूर लूर वन्दे मान मोड़ के ॥ ६४६ ॥

॥ पंच वर्ण जिन ॥

पद्म प्रभूजी वाम हिंगलू वरण खास, चन्द्रजी सुवध दोनों ऊज्जवल वरणजी, मुनि सुव्रत रष्टनेम श्याम वरण जाणे प्रेम, मल्लीजी पारस लील्ल असरण शरणजी, सुवर्ण वर्ण सोल दीठां मीठा वृन गोल्ल, संसार सागर प्रभु तारण

मांई मिजार फिरत तांहीं चोट न करत है, सागर नकल मांही प्यास न बुझत भाई, चीतरा चितर देख स्वान न डरत है, असल नकल होय पशू भी पिछाण जोय, पन्नालाल कहे मूढ भुले ही फीरत है ॥ ६५२ ॥

॥ अहिंसा धर्म ॥

आचारंग अंग मांहीं दया में धर्म कह्यो, हिंसा में धर्म नहीं कह्यो जिन सुर रे, अनंत चौवीसी जीव अनंताही सिद्ध हुआ, दया ही धर्म धर कर्म किया चुर रे, ऊत्तरा-ध्येन अट्ठारह में सागर चकर जाण, दयाही संयम मोक्ष हिंसा करी दुर रे, पन्नालाल कहे निज दया में धर्म लहे, हिंसा में धरम कहे जाके मुंडे धुर रे ॥ ६५३ ॥

॥ नारी है धुतारी ॥

नारी तो धुतारी भाणी महा कामणगारी जानी, वश कर लेवे नर शिर देवे ढोलियो, नीर ही भरावे घर छाच ही करावे फिर, पीस पोय कर मेरे विछाय दे ढोलीयो, हिंडोले हिंचाव मोपै पंखोही हिलाय जाय, कर एतो काम जद रक्खुं तेरो तोलियो, पन्नालाल कहे एम नचावे बन्दर जेम, रहवे हजूर जाके ऐसो माटी मोहलियो ॥ ६५४ ॥

॥ ऊपदेशी ॥

पायो नर भव सार काहे को हारे गवार तात मात

कहे प्रभु भजन को लाहो लेह, गाफिल रह्यां से तेरो काल करे गटको ॥ ६५० ॥

॥ चौरासी गमन ॥

चौरासी चारों ही गत जामें तुं फिरत आयों, पुण्य योगे नर भव पायो है लिगार रे, अब तुं कुटुम्ब धन देख के मगन फिरे, नगन चलेगो तुं तो हृदय विचार रे, ये तो तात मात सास सुख में रेवे तेरे पास, दुख में ये जाय दूर चेत तुं गवार रे, पन्नालाल कहे तेरो जन्म सफल कर, बाटी साटे खेत तोये कहु मत हार रे ॥ ६५१ ॥

॥ देव गमन ॥

मस्तक मुकट जान धरके कुन्डल कान, जोत ही दीपंत जाकी गले धारी माल है, अंगुल्या मुंदड़ी धर लीलाट तिलक कर, कड़िया कंदोर तन सोवत रसाल है, हाथ भुज वन्द मार नेवर को झणकार, वस्त्र अमोल अंग कहे पन्नालाल है, वार वार गुण गात नमे पाय जोड़ी हाथ, आयो जिण दिस स्थान देव गयो चाल है ॥ ६५२ ॥

॥ असली की नकल ॥

कतर कमल फूल धरत पाणी में मुल, भंवर गुंजार सुर डंक न धरत है, नकल तोता के तांई धरत पींजर

मांई मिंजार फिरत तांहीं चोट न करत है, सागर नकल मांही प्यास न बुझत भाई, चीतरा चितर देख स्वान न डरत है, असल नकल होय पशू भी पिछाण जोय, पन्नालाल कहे मूढ भुले ही फीरत है ॥ ६५२ ॥

॥ अहिंसा धर्म ॥

आचारंग अंग मांहीं दया में धर्म कह्यो, हिंसा में धर्म नहीं कह्यो जिन सुर रे, अनंत चौवीसी जीव अनंताही सिद्ध हुआ, दया ही धर्म धर कर्म किया चुर रे, ऊत्तराध्येन अट्ठारह में सागर चकर जाण, दयाही संयम मोक्ष हिंसा करी दुर रे, पन्नालाल कहे निज दया में धर्म लहे, हिंसा में धरम कहे जाके मुंडे धुर रे ॥ ६५३ ॥

॥ नारी है धुतारी ॥

नारी तो धुतारी प्राणी महा कामणगारी जानी, वश कर लेवे नर शिर देवे ठोलियो, नीर ही भरावे घर छाच ही करावे फिर, पीस पोय कर मेरे बिछाय दे ढोलीयो, हिंडोले हिंचाव मोपै पंखोही हिलाय जाय, कर एतो काम जद रक्खुं तेरो तोलियो, पन्नालाल कहे एम नचावे बन्दर जेम, रहवे हजूर जाके ऐसो माटी मोहलियो ॥ ६५४ ॥

॥ ऊपदेशी ॥

पायो नर भव सार काहे को हारे गवार तात मात

नार सब स्वार्थ संसार रे, तेरो सगो नहीं एक हृदय विचार देख झुंठ नहीं राई रेख तज मोह जाल रे, पाप तणो छोड संग दया को लगाव रग, धन धान नंग कोई आवेगा न लार रे, पन्नालाल कहे देह छिन में देवेगो छेह, पुण्य विन परभव खामी घणी मार रे ॥ ६५५ ॥

॥ पंच इन्द्री श्रृंगार ॥

कर्ण श्रृंगार सुत्र वाणी सुन हियेधार, नेत्र श्रृंगार जीव रक्षा नित्य कीजिये, नाक श्रृंगार हित सुगंध दुर्गंध जीत, जीभ जिनवर नाम नित ऊठ लीजिये, शरीर श्रृंगार शील पाल्या नित्त होवे लील, कर श्रृंगार दान सु पातर दीजिये, पन्नालाल कहे यह श्रृंगार धार देह, जोत मांय जोत मिल मुक्ति में रीजिये ॥ ६५६ ॥

॥ शील महिमा ॥

शील व्रत सार नित्य पालो नर नार, सुख संपत दातार सर्व विघ्न मिटावे रे, देवता दानव यक्ष राक्षस गंधर्व भूत, शील मांही लील जाको शीश जो नमावे रे, रान अज स्थान जान अहि फूल माल ध्यान, अग्नि शीतल जल ततखण थावे रे, पन्नालाल कहे धन्य शीलवन्त नर जेह, तीन लोक नाथ मुख आप गुण गावे रे ॥ ६५७ ॥

॥ पर त्रिया निषेध ॥

पर नारी परसंग नेम तणो करे भंग, गमावे जनम नग मन न विचार रे, अल्प ऊमर काज कुल तणी लोपे लाज, इंडत भंड़त राज काड़े मुख कारे रे, रावण त्रिखंड़ भूप सीता तणो मोयो रूप, पायो है अनंत दुख जम्म के दुवार रे, पन्नालाल कहे त्रियाको संग, रंग शीलको लगाय कर विषय क्यु न मार रे ॥ ६५८ ॥

॥ ऊपदेशी ॥

मेरो मेरो करे गेलो मिल्यो स्वार्थ मेलो, अन्त तो अकेलो जासी पर भव मांय के, कुटूम्ब के काज क्यों करत अकाज, मन आणत न लाज रह्यो विषय लिपटाय के, पडेगो संकट नही आवेगा निकट कोई, सजन सनेही भाई दुर जात ध्याय के, पन्नालाल कहे प्रेम बन्धन को तोड़, जोड़ सुकृत साज सज नर देही पाय के ॥ ६५९ ॥

॥ निर्देही मनुष्य ॥

जिभ्या के सवादी पापी जीवों की करत घात, खेलत शिकार हीये हर्ष अपार रे, छेद भेद मांस लाय सेख भुंज तर खाय, दुष्ट को न आवे दया जरा ही लगार रे, जावेगा नरक घोर तांको नहिं ओर ठोर, मारेगा मुदगर

तणी जम बहु मार रे, पन्नालाल कहे वान छोड मद मांस खान, जीव दया पाल तेरी आतमा को तार रे ॥६६०॥

॥ पुर्व पुराय संच मनुष्य ॥

पूरव पुण्य के योग सकल मिले हैं भोग, छत्तर चंवर शिर धर बैठे पाट हैं, रागही छत्तीस कीध नाटक बत्तीस बीध, बोलत बड़ाई जाकी ठाडे केई भाट हैं, गज ही तुरंग भर भरे हैं भंडार पूर, जय जय ही शब्द लोक किय जात बाट है, बाजत है बाज जैसे रग्यो है अम्मर गाज, पन्नालाल कहे देखो पुण्य ही के ठाट हैं ॥ ६६१ ॥

॥ रावण सीता हर्णी ॥

रावण कपट कर रघुपति तणी नार, हरके हराम काज लंका मे बैठाईजी, मंदोदरि विभिषण विविध वचन कर, समझावे माने नहीं काल रह्यो छायजी, राम लच्छमण दल बादल ले आये लंक, दशकंध जीत सती सीता घर लाईजी, पन्नालाल कहे देखो काम अंध काम वश, नरक चतुर माहिं दुःख रह्यो पाईजी ॥ ६६२ ॥

॥ नारद विद्या ॥

नारद वचन सुन धातकी खंड के राय, पदम ने तेलो कर द्रोपदी मंगाईजी, वचन विषय का बोले सती मन नाहीं डोले, छट छट तप करे शील दृढ नाईजी, पांडव

मुरार सुन ऊतरे सागर लूण, जंग जीत भुज्ज बल सुंपी नार भाई जी, पन्नालाल कहे देखो लम्पट विषय के काज,राज लाज नरपने सब ही गुमाईजी ॥ ६६३ ॥

॥ देव द्वारिका रचित ॥

सागर के तीर तेलो कर दियो ततक्षण, सुर आय सुवर्ण में द्वारिका वसाईजी, कोशिशा रतन जान चोडी योजन नव मान, लम्बी द्वादश मेले नर बहु लाईजी,सहस्र बारह द्वार दोसो छप्पन बजार, क्रोड बहत्तर घर बाहर वसे साठ क्रोड़ मांईजी, पन्नालाल कहे राज कृष्ण जी करत तिहां, तीन खंड माहे आंण अखंड वरताईजी ॥ ६६४ ॥

॥ देवा नन्दा विर वंदण ॥

सज सिणगार सोला देवा नन्दा नार, हिये हर्ष अपार चली वीरजी वंदण को, अतिशय निरख जिन प्रदक्षिणा करत तीन, देखत दीदार अति फूली निज तन को, प्रभुजी सुणाय कहे य तो मेरी माय, सब लोक हर्षाय भये मगन तो मन को, पन्नालाल कियो तात मात ने संयम लियो, षट्काये दान दियो तज सब धन को ॥ ६६५ ॥

॥ पुण्यवन्त का जन्म महोत्सव ॥

रानीजी ने जायो नन्द जैसो है दुतिया को चंद, वंदी-

वान छोड़े वन्द मिटगई मार रे, गय ने महोत्सव कियो याचकां ने दान दियो, हरष हरष हियो हीरा मोति हार रे, बाजे वांजितर सार पड़े नाटिक धुंकार, बहु हिल मिल नार द्वार गावे मंगलाचार रे, पन्नालाल कहे करि महोत्सव की विध सहु गुण ही निपन्यो नाम थाप्यो सुग कार रे ॥ ६६६ ॥

॥ नृप विर वंदण ॥

सुनके वधाई नृप करि है सजाई, बलि कर्म विध ठाई अंग आभुषण धार के, हुए गज असवार चंवर दुलंत चार, अन्तेवर लार सज सोला सिणगार के, सेन्या चार प्रकार गोख्यां चढी जोवे नार, सवर्ण रूपैया भर फेंकत वजार के, पन्नालाल कहे आये समोह सरण विच, नमायो है शीश प्रभु देखत दीदार के ॥ ६६७ ॥

॥ दया धर्म सार ॥

धरम२ सब पकडी कहत मूढ़, मरम धरम तणां जाणे नी लिगार है, कहां चिन्ता मणि कांच कनक ९ गांच जल २ गंग जान खार निर खार है, कर कहां काम धेनु अन्य गाडा, तेजही अनेक एक सार है, पन्नालाल कहे सब अर्थ विचार धार मैं मत अन्तर अपार है ॥ ६६८ ॥

॥ काल का नगारा ॥

बड़े २ बलवान चक्री हल धर जान, हरी हर ब्रह्म सब काल ही से हाराहै, पीर पैगम्बर शेख बादशाह वजीर देख, काजी ओर मुल्ला ताको पकड़ पछारा है, इन्द्र चन्द्र बाल वृद्ध देवी देव कहीं ग्रद्ध, भुचर खेचर रंक राव को सम्हारा है, पन्नालाल कहे चेतो चेतोरे चतुर नर, तिहुं लोक मांही बजे काल का नगारा है ॥ ६६९ ॥

काल विकराल वैरी रह्यो है सिर पे तेरी, पकड़ ले-जासी हेरी भाग कहां जावसी, स्वर्ग मृत्यु लोक मांहीं पातल में जासी जांही, छोड़ेगा न वांहीं भाई तुरत ही लावसी, धन बल फोज ओर चालेगा न केनो जोर, कुटु-म्ब करत शोर छोड के सिधावसी, पन्नालाल कहे चल्यो पर भव मांही प्राणीई कर्म अनुसार सुख दुःख दोनों पावसी ॥ ६७० ॥

॥ बारे चक्र वर्ति ॥

खट खंड मांय जात आण फेरी निज हाथ, जाका नाम हिरदा में शुद्ध मन धारजो, भरत सागर चक्री माघव सनन्त जान, शान्ति कुन्थ अरिनाथ संसार से तार जो, आठमां स्वयम्भू ओर नवमां है पदम माह, हरीपेण जय ब्रह्मदत्त ही विचारजो, दश गये मुक्ति पंथ सम्भू

वान छोड़े वन्द मिटगई मार रे. राय ने महोत्सव कियो याचकां ने दान दियो, हरष हरष हियो हीरा मोति हार रे, वाजे वांजितर सार पड़े नाटिक धुंकार, वहु हिल मिल नार द्वार गावे मंगलाचार रे, पन्नालाल कहे करि महोत्सव की विध सहु गुण ही निपन्यो नाम थाप्यो सुख कार रे ॥ ६६६ ॥

॥ नृप विर वंदण ॥

सुनके वधाई नृप करि है सजाई, वलि कर्म विध ठाई अंग आभुषण धार के, हुए गज अस्वार चंवर ढुलंत चार, अन्तेवर लार सज सोला सिणगार के, सेन्या चार प्रकार गोखां चढी जोवे नार, सवर्ण रूपैया भर फेंकत वजार के, पन्नालाल कहे आये समोह सरण विच, नमायो है शीश प्रभु देखत दीदार के ॥ ६६७ ॥

॥ दया धर्म सार ॥

धरम२ सब एकही कहत मुड्ड, मरम धरम तणो जाणे नी लिगार है, कहां चिन्ता मणि कांच कनक पितल जांच जल २ गंग जान खार निर खार है, केसरी मृग कहां काम धेनु अन्य गाहा, तेजही अनेक एक भान तेज सार है, पन्नालाल कहे सब अर्थ विचार धार जैनमत और मत्र अन्तर अपार है ॥ ६६८ ॥

॥ काल का नगारा ॥

बड़े २ बलवान चक्री हल धर जान, हरी हर ब्रह्म सब काल ही से हाराहै, पीर पैगम्बर शेख बादशाह वजीर देख, काजी ओर मुल्ला ताको पकड़ पछारा है, इन्द्र चन्द्र बाल वृद्ध देवी देव कही श्रद्ध, भुचर खेचर रंक राव को सम्हारा है, पन्नालाल कहे चेतो चेतोरे चतुर नर, तिहुं लोक मांही बजे काल का नगारा है ॥ ६६९ ॥

काल विकराल वैरी रह्यो है सिर पे तेरी, पकड़ ले-जासी हेरी भाग कहां जावसी, स्वर्ग मृत्यु लोक मांही पातल में जासी जांही, छोड़ेगा न वांहीं भाई तुरत ही लावसी, धन बल फोज ओर चालेगा न केनो जोर, कुटु-म्ब करत शोर छोड़ के सिधावसी, पन्नालाल कहे चल्यो पर भव मांहीं प्राणीई कर्म अनुसार सुख दुःख दोनों पावसी ॥ ६७० ॥

॥ बारे चक्र वर्ति ॥

खट खंड मांय जात आण फेरी निज हाथ, जाका नाम हिरदा में शुद्ध मन धारजो, भरत सागर चक्री माघव सनन्त जान, शान्ति कुन्थ अरिनाथ संसार से तार जो, आठमां स्वयम्भू ओर नवमां है पदम माह, हरीपेण जय ब्रह्मदत्त ही विचारजो, दश गये मुक्ति पंथ सम्भू

वान छोड़े बन्द मिटगई मार रे. राय ने महोत्सव कियो याचकां ने दान दियो, हरष हरष हियो हीरा मोति हार रे, बाजे बांजितर सार पड़े नाटिक धुंकार, वहु हिल मिल नार द्वार गावे मंगलाचार रे, पन्नालाल कहे करि महोत्सव की विध सहु गुण ही निपन्यो नाम थाप्यो सुख कार रे ॥ ६६६ ॥

॥ नृप विर वंदण ॥

सुनके वधाई नृप करि है सजाई, बलि कर्म विध ठाई अंग आभुषण धार के, हुए गज अस्वार चंवर ढुलंत च्यार, अन्तेवर लार सज सोला सिणगार के, सेन्या चार प्रकार गोखां चढी जोवे नार, सवर्ण रूपैया भर फेंकत बजार के, पन्नालाल कहे आये समोह सरण विच, नमायो है शीश प्रभु देखत दीदार के ॥ ६६७ ॥

॥ दया धर्म सार ॥

धरम२ सब एकही कहत मुड्ढ, मरम धरम तणो जाणे नी लिगार है, कहां चिन्ता मणि कांच कनक पितल जांच जल २ गंग जान खार निर खार है, केसरी मृग कहां काम धेनु अन्य गाहा, तेजही अनेक एक भान तेज सार है, पन्नालाल कहे सब अर्थ विचार धार जैनमत और मत अन्तर अपार है ॥ ६६८ ॥

॥ काल का नगारा ॥

बड़े २ बलवान चक्री हल धर जान, हरी हर ब्रह्म सब काल ही से हाराहै, पीर पैगम्बर शेख बादशाह वजीर देख, काजी ओर मुल्ला ताको पकड़ पछारा है, इन्द्र चन्द्र बाल वृद्ध देवी देव कही श्रद्ध, भुचर खेचर रंक राव को सम्हारा है, पन्नालाल कहे चेतो चेतोरे चतुर नर, तिहु लोक मांही बजे काल का नगारा है ॥ ६६९ ॥

काल विकराल वैरी रह्यो है सिर पे तेरी, पकड़ लेजासी हेरी भाग कहां जावसी, स्वर्ग मृत्यु लोक मांहीं पातल में जासी जांही, छोड़ेगा न वांहीं भाई तुरत ही लावसी, धन बल फोज ओर चालेगा न केनो जोर, कुटुम्ब करत शोर छोड़ के सिधावसी, पन्नालाल कहे चल्यो पर भव मांहीं प्राणीड़े कर्म अनुसार सुख दुःख दोनों पावसी ॥ ६७० ॥

॥ बारे चक्र वर्ति ॥

खट खंड मांय जात आण फेरी निज हाथ, जाका नाम हिरदा में शुद्ध मन धारजो, भरत सागर चक्री माधव सनन्त जान, शान्ति कुन्थ अरिनाथ संसार से तार जो, आठमां स्वयम्भू ओर नवमां है पदम माह, हरीषेण जय ब्रह्मदत्त ही विचारजो, दश गये मुक्ति पंथ सम्भू

ब्रह्म नर्क गत, पन्नालाल कहे सत करनी निहारजो ॥ ६७१ ॥

॥ खट खंड़ पत्ति ॥

खट खंड़ नाथ पुर सोला सहस्त्र होत सूर, सेवत मुकट वंद बत्तीस हजार है,हय गय रथ भाख चौरासी २ लाख छन्नू करोड़ पैदल चौंसठ सहस्त्र नार है, चवदा रतन जान नवही निधान आन, तीन सो ने साठ संग रसवंति दार है,कहे पन्नालाल सब छोड़ के संसारी जाल, मुक्ति विराजे दश सुख ही अपार है ॥ ६७२ ॥

॥ नेम प्रभु पशु पुकार ॥

नेम सुख कार सुणी पशु की पुकार, फेरयो गज तत्कार प्रभु द्वारिका में आविया, क्रोड़ अष्ट लाख मान दियो दिन प्रति दान, सहस्त्र ही कुंवर संग संयम उमाविया, जप तप खप कर निर्मल ध्यान धर, कर्म निवार निज केवलजो पाविया, पन्नालाल कहे सुर सहस्त्र वर्ष आयु पूर पर्वत गिरिनार पर मुक्ति सिधाविया ॥ ६७३ ॥

॥ राजमति का वैराग्य ॥

तोरण से फेरयो रथ सुणी राजुल मुर्छागत, संयम सजन छोड़ लियो मोटी सतीरे, मारग चलत मेंह वुठो भीजो चीर देह, गिरि ही गुफा में जाय प्रतिबोधे जतिरे,

प्रभुके चरण भेंट तप कर कर्म मेट, मुक्ति गढ़ के मांय गई राजमतिरे, पन्नालाल कहे गये चोपन दिवस बाद, अजर अमर सिद्ध हुए जगपतिरे ॥ ६७४ ॥

॥ गजमुनि का वैराग्य ॥

तप अष्टम अराध चले गजसुखमाल साथ, म्हांकाल ममाण मांहीं ध्यान दियो धरके, सोमल निहाल झाल बांधि है मस्तक पाल, खेरही अंगार शिर धर गयो घरके, वेदना अनत सिर रहे जुं अडोल गिर, निर्मल मन दियो द्वेष दूर करके, पन्नालाल कहे अंतगढ़ केवली तो होय मुक्ति विराजे मुनि संसार से तरके ॥ ६७५ ॥

॥ अक्षय तिज ॥

प्रथम जिनेन्द्र राये वर्षी तप के मांये, हस्त नागपुर आये करत विहाररे, कुंवर वंदत पांये प्रभुजी को घर लाये, ईख रस दान दियो हर्ष अपार है, गगन मंडल देव दुन्दुवि बजत नाद, पंच द्रव्य प्रगट भये तो तत्काररे, पन्नालाल कहे लिये अक्षय अटल सुख, जा दिन से भयो अक्षय तिजको तेवाररे ॥ ६७६ ॥

॥ ऊपदेशी ॥

वार बार ज्ञानी गुरू मारे ललकार, तुम चेतो नर नार ये संसार असार है, काल वैरी लार रह्यो ताक तांन बांन

जैसे मुसा पे मंजार लेवे झपट के माररे, तात मात जोय सब देख देख रोवे,कोई लारे नहीं होवे सुत बन्धव न नाररे, पन्नालाल कहे देख जगत की रीति, कर प्रभुजी मे मित जासे होवे खेवा पाररे ॥ ६७७ ॥

चेतरे चतुर नर धर्म उद्यम कर, नर भव चिन्ता मणि फेर नहीं पावेगा, काया शीशी काच देख मुढ़ नर रह्यो राच; कालकी ठपक लगे झट फूट जावेगा, तोक चले परिवार आये कर बार छार; पर बस हुवा जद कोई न छुडावेगा, पन्नालाल कहे यम दुत हाथ हासी बात, गुरू के वचन प्यारे अंत याद आवेगा ॥ ६७८ ॥

॥ गन्धी देह ॥

शरीर सुन्दर देख काहे को गुमान करे, समझ विचार यामें कौन चीज सार है, हाड़ मांस रुधिर में रच्यो है सकल पिंड़, मल मुत्र घर जामें लगी नसाजार है, सांस खांस पेट पीड़ और ही अनेक दुःख; अशुचि देहिके मांही रोग ही विकार है, पन्नालाल कहे ज्ञान नेत्र खोल देख भाई, ऊपर लग्यो है रग भीतर भंगार है ॥ ६७९ ॥

॥ निन्दक मनुष्य ॥

पापी पुण्य मार्ग की जानत न कोहू विध, दुष्ट को स्वभाव उठ निन्दा ही करत है, शुद्ध साधु देख २ गंड़क

ज्यूं करे द्वेष, बोले मुख झूंठ सिर कलंक धरत है, मुखको लवार नित संग करे पर नार, दिन रात खावे जैसे ढोरसा चरत है, पन्नालाल कहे ऐसे नीच नर्कों के बीच, मार मुद्गल जाके सिर पे पड़त है ॥ ६८० ॥

॥ लोभी मनुष्य का दुःख ॥

दौड़ी २ रात दिन कौडी २ जोड्यो धन, तोहू माने थोडो मन लोभ मांहे परियो, खर्चा न खायो वृथा जनम गमायो, पुन्य बीज नहीं बायो द्रव्य पाताल में धरियो, यम दूत आया सब धरि रही माया, मुढ़ नर पछताया कोई सुकृत न करियो, पन्नालाल कहे ऋद्धि छोड चल्यो पर भव कर्मों के वश होय रोय रोय मरियो ॥६८१॥

॥ नर्क दुःख ॥

अशुभ कर्म वश पडयो है नर्क गत, दुःख तो तुं पायो अंत कह्यो भगवान्रे, छेद भेद मार कुट मुद्गर देवे है जम्म, शरिर विखरिये तेरो पारा सम जानरे, खुध्या समय ही तेरो मास ही खवायो काट, प्यास में ही तांबो लाल पायो मुख तानरे, पन्नालाल कहे ऐसा नर्कों का दुःख जान, ज्ञानी देवा कह्यो यामे शंका मत आनरे ॥६८२॥

कुटम्ब के काज मोट पाप की करी है पोट, सिर के

उपर धर नर्का में परियो, जम्म जाको देख कर मारे कोप कर कर, रोवे छाति भर २ मैंने कांई करियो, रीस करी न्हाके तांई वैतरणी नदी के मांई, पिछांटे सिह्ला पै जाई मारयो २ फिरीयो, पन्नालाल कहे पाप करके पावें है दुःख, कारज तो जीव केरो संयम से सरियो ॥६८३॥

॥ सूत्रानु सार उपदेश ॥

मैं तो कही बात खरी सूत्तर की साख धरी, वीतराग वाणी सुण दया नित पारजो, पुण्यवन्त होसी नर दया दान दिल धर, शील ही स्नान कर आत्मा सुधारजो, पापी के न आवे दाय निन्दा ही करत जाय, नर्का में जासी मुद्ध हिये खुब धारजो, पन्नालाल कहे बात कूड़ नाहीं तिल मात, दान तप भाव निज हिंसा दुरी टारजो ॥ ६८४ ॥

॥ वैरागी पुत्र ने माता समझावे ॥

कहे मात सुण बाल संजम दुष्कर लाल, पंचही वरत पाल चलनो खांड़ा धार को, बावीस परीसा जीत शीतही उषण रीत, दुष्कर २ योग सुई नाका सारको, खट मास माहे लोच जाको नहिं करनो सोच, बयालीस दोष टाल लेनो शुद्ध अहार को, पन्नालाल कहे मात पुत्र को सीख देह, उंच निच लेवे आर सोई मार्ग अणगारको ॥ ६८५ ॥

॥ पुत्रका–उत्र ॥

सुण सुण मोरी मात कांहीं करी भोरी बात, सुरा को तो सेज दुष्कर कायर को जाणी है, नर्क निगोद गयो दुःख में अनंत सयो, पुण्य के प्रभाव मिली दस बोल टाणां है, अब में संयम पालू करणी कर कर्म टालूं, अनुमति देवो अम्मा हर्ष मन आणी है, पन्नालाल कहे उत्र पुत्र ने दीयो है ऐसो, रोम रोम मांही भेदी जाके जिन वाणी है ॥ ६८६ ॥

॥ पारस जिन–कमठा शूर ॥

पारस पुरन आस बनारस पुरी वास, नीलवर्ण नव-कर दीठा नैन ठरके, हटायो कमठ मान नाग को बचायो आन. शरण नोकार दीयो इन्द्र हुए मरके, संसार के फन्द छोड़ कर्म को बन्धन तोड़, लियो है अचल पद अनशन करके, अश्वसेन कुलचन्द वामा दे राणी के नन्द, पन्नालाल वन्दे नित चर्ण चित्त धरके ॥ ६८७ ॥

॥ सेठाणी–भेरूं की बोलमा ॥

सेठाणी हरष भाव भेरूं की पुजन चाव, छत्तर चूरमो गाड़ी भैंसो आणी है, सखी संग परवार बाजंतर बहु लार, आलम अपार यार संगही बखाणी है, भेरूंजी ने रंग मन सिन्दुर चढायो तन, शिरही छत्तर धर चूरमो सो

जाणी है, पन्नालाल कहे देखो सेठजी धरमी पुर, भेरूं की कम्मर भेसो बांध्यो बहु ताणी है ॥ ६८८ ॥

तासिया बजाया जोड़ पाड़ो तो भगो है दोड़, भेरूं चल्यो मुंह मोड़ पडीयो भिष्ट खोरी है, शरीर अशुचि भयो शितला देवी ने कह्यो, भेरूं भाई कांइ भयो बात कहो थोरी है, मुज्जा पुडी लोग लाय बैठी गंड़ माल खाय, सेठ मने मिल्यो आय ऐसी गत मोरी है, पन्ना भेरूं कहे ताहीं जैनी बस पड़ी नाही मोरी गत बनी बाई सोई गत तोरी है ॥ ६८९ ॥

॥ मुनि गुण किर्तन ॥

सर्व जीव प्रतिपाल झुंठ तज चोरी टाल, कनक कामणी रैन भोजन निवारी है, व्यसन विसार पंच सुमति गुपति धार, तरण तारण ऋषी पर उपकारी है, पाले नव वाड़ शील पाप की करत होल, जत्ति धर्म धारवे को बड़े होस्यारी है, पन्नालाल कहे जास मुक्ति की लगी आस, ऐसे मुनिराज ताको वंदणा हमारी है ॥ ६९० ॥

तप कर तावे तन बस कर लियो मन, धुल सम गिणे धन चमा दिल धारी है, समता में भरपुर लोभ कर दियो दुर, कर्म कर चकचूर आत्मा को तारी है, करणी करत हद टालते है अष्ट मद, लेत आर निरवद उगर विहारी है, पन्नालाल कहे आप जिनन्द को जंप

जाप, ऐसे मुनिराज तांको वंदना हमारी है ॥६९१॥

मुक्ति को लियो मग जोई २ धरे पग, पीवे न सचितोदक विषय सुखटारी है, ज्ञान तणी घणी चाय बुझाय कषाय लाय, खट काय करे साय क्षमा गुण धारी है, जैन को सुनावे धर्म मिथ्यात को टाले भ्रम, बोले न वचन मर्म बुद्धि के भंडारी है, पन्नालाल कहे मुख काहू की न राखे रूख, ऐसे मुनिराज तांको वदना हमारी ॥६९२॥

ढूंढ लियो धर्म सार तज के कुटुम्ब नार, पंच व्रत लिये धार हुऐ अणगारी है, गुरू के चरण सेवे शूत्र पाठ अर्थ लेवे, बैठ उपदेश देवे सुणे नर नारी है, दया को लगावे रंग पाखंडी को टाले संग, कर्मा से करे जंग ममता कों मारी है, पन्नालाल कहे खास मुक्ति स्वर्ग करे बास, ऐसे मुनिराज तांको वंदना हमारी है ॥६९३॥

सतावीश गुण धार नमे जांकू नर नार, मधुकर सम अहार लेत पूरे ब्रह्मचारी है, शशि ज्यूं शीतल वैन लोपे नहीं जिन ऐन, धरे ध्यान दिन रैन पाप परिहारी है, प्रति बोधे भवि जीव पहुंचावे नगर सीव, तरण तारण जांकी कीरति अपारी है, पन्नालाल कहे जोड़ी हस्त दो मस्तक चोडी, ऐसे मुनिराज तांको वन्दना हमारी है ॥६९४॥

॥ चौवीस—जिन ॥

ऋषभ अजित प्रभु सम्भव अभिनंद जान, सुमति पद्म सुपास प्रभु चन्दनं, सुविधि शीतल सरियांस वासपूज्य मान, विमल अनंत धर्म शान्ति सुख कन्दनं, कुंथू अरह मल्लि साथ मुनि सुव्रत नेमिनाथ, रष्ट नेमि पारसजी टाल्या मोह फंदनं, चौवीसिमा वर्धमान शोभत्त सुरत भान, पन्नालाल जोड़ी हाथ नित्य वंदनं ॥६९५॥

॥ पंजाब की बोली को सवैयो ॥

अस्सी अस्सी तुस्सी तुस्सी साड़े साड़े सानुं सानुं, काली काली कुड़ी कुड़ी कोल कोल कांम में । जेड़ा जेडा केड़ा केड़ा लोड़ा लोड़ा चंगा चंगा, तिम्मी तिम्मी रौला रौला गल गल गाल में ॥ चुक चुक तुरों तुरों काकी काकी काको काको, आखो आखो मुण्डो मुण्डो नीको नीको नाम में ॥ खूबचन्द कहे सेना झूठी होतो पुछ लेना, मूणी मूणी कहुं ऐसी बोली है पंजाब में ॥६९६॥

॥ श्रावक के इक्कीस गुण ॥

लज्जावंत दयावंत प्रसंत प्रतीत वंत, पर दोष को ढकैया पर उपकारी है । सौम दृष्टि गुण ग्राही गरिष्ट सब को इष्ट, शिष्ट पक्षी मिष्ट वादी दिरघ विचारी है । विशेषग्य रसग्य कृतग्य तग्य धरमग्य, न दीन न अभि-

मानी मध्य विवहारी है, सहज विनीत पाप क्रिया सौ अतीत, ऐसे श्रावक पुनीत इकवीस गुण धारी ॥६९७॥



॥ अथः कमल कुसुम कार्णीका ॥

॥ चौवीस जिन स्तुति ॥

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व चन्दा चन्दना । सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपुज्य प्रभु, विमल अनन्त धर्म शान्ति सुख करना ॥ कुंथु अर मल्लि मुनि सुव्रत नमि नेमि जिन, पार्श्वरु महावीर जाका लउं शरना । नमूं प्रभु कर जोड़ एक हजार आठ वार, तिखुता के पाठ सेती होजो मेरी वन्दना ॥६९८॥

॥ वीस वेरमान ॥

श्रीमन्दर युगमन्दर बाहुजी सुबाहुस्वामी, सुजात रु स्वयंप्रभु ऋषभानन्द तारजो । अनन्तवीर्य सुरप्रभू विशाल रु वज्राधर चंन्द्रानन्द चन्द्रबाहु भुजंग चित्त धारजो ॥ ईश्वर नेम वीरसेण महाभद्र देवयश, वीसवां अजितवीर दुःख थी निवारजो । नमूं प्रभु कर जोड़ एक हजार आठ वार, तिखुता के पाठ सेती वन्दना सकारजो ॥६९९॥

॥ गणधर स्तुति ॥

इन्द्रभूति अग्निभूति वायुभूति त्रिगतजी, सोहम गणिन्द पंच पंच से परिवार है। मंडीपुत्र मोर्यपुत्र साढा तीन तीन से दो, संयम ले हुवा ज्ञानी गुणा का भंडार है॥ अकपित अचलजी मेतारज प्रभासजी, तीन तीन से के धणी गणिपति चार है। एक ही दिवस भये चम्माली मो शिष्य, ताके पद अहोनिशि मेरा होवो नमस्कार है॥७००॥

॥ सोला सती ॥

धन्य सति ब्राह्मी और सुन्दरी कोशल्या सीता, कुन्ती और द्रोपदी के नमूं नित चरणाम्। राजिमती चन्दना सुभद्रा मांहि गुण घणा, चेलणा की कीरती जिनन्द मुख वरणाम्। शिवा पद्मावति मृगावति सुलसां सती, दमयन्ती जाप जंप मिटे जर मरणाम्। प्रभावती इत्यादिक हुई सोले महासती, मेवाड़ी मुनि ने ज्याँको सदा काल सरणाम्॥७०१॥

धर्मदासजी धन्नाजी लालचन्दजी रामचन्द्रजी, छोटा मोटा पृथ्वीराज मन्नाजी विचारी है। बालचन्दजी मूलचन्दजी पेमचन्द तारांचंद, रतन सी ने पदारथ लोक पराजी भारी है॥ भवानी मलूकचन्द मनोहरदास हुवे,

पुरुषोतम मुकटमल समरथ धारी है । वागमलजी गुरु सहाय बावीस ही समुदाय, उत्तम पुरुषो का नाम लिया जय जय कारी है ॥७०२॥

॥ दस दृष्टान्त मनुष्य जन्म दुर्लभ ॥

किसी एक बमन पे चक्रवर्ति तुष्ट हुवा, प्रथम भोजन जाच्यो सिरी देवी हाथको । घर घर तणा बारा बधवा मूढ, वैसा स्वाद मिला नहीं रोवे उन भातको । छिन्नु क्रोड़ गांव भरतखंड के पूर्ण हुवे, तबी पिछो बारो आय चक्री नर नाथ को । ऐसे नर जनम अधम वश हार गये मिलवो कठिन गयो हीरो रंक हाथको ॥७०३॥

किसी एक राय तणो चाणक्य दीवान जुआ, खेले सार पासा लेई सुवर्ण की थालरे । हारे एक मोहर जावे जीते सो या थाली पावे, काठियारो ललचायो होजाऊं निहालरे ॥ शिर पे संकट झेल एक मोहर रखी मेल, खोई जुआ खेल करे रुदन कंगालरे । ऐसे नर जनम अधम वश हार गये, मिलवो कठिन भाखे दीन का दयालरे ॥७०४॥

किसी एक राय के सौ पुत्र हुंता तब नृप, क्लेश टालन हित उपाय रचावे हैं । शत अष्टोत्तर थंभ थंभे थंभे इते प्रत्येक पेलुके इती, पूतली बंधवे हैं । पूतली सर्व पूरे पेलु एक थंभ, सभी थंभेजीते सो या राजरिधी प

देव योग पार पड़े तथापि कठिन अति. मिलवो अमूल्य नर भव जो गमावे हैं ॥७०५॥

चौवीस प्रकार धान्य जम्बूदीप तणो सभी, सुर गिरी जैसो सुर ढगलो बणावे हैं । तामे दोयपायली मिलाय सरसू के दाणे अति ही जीर्ण बृद्धि बुड्ढी को विठावे है ॥ कह्यो सरसू के दाणे अलग निकाली देव, महामुशकिल है बुड्ढी से किम थावे हैं । देव योग होई जाय तथापि कठिन अति मिलवो अमूल्य नर भव जो गमावे हैं ॥७०६ ।

कोई एक सेठ मूंजी रतना की जोडी पूंजी निज वश राखे किसे भेद हू न दाखे हैं । एकदा विदेश गयो पुत्र घर रह्योतिणे, परिपाटी कह्यो सहू खायहु खिलाके हैं ॥ सेठ पीछो घर आयो रतन डिबा न पायो, करे विलापात भूरे नैणा नीर नांखे हैं । देवयोग रतना को डिवो पीछो मिलिजाय, दुल्लभ मनुष्य भव ज्ञानी देव भाखे हैं ॥७०७॥

मूल देव योगी दोउ एकसा सुपना लिया चन्द्र उर उतरयो ते जागिया तुरन्त है । अजान पुरुष ताहि योगी फल पुछि लियो तेल पुडो मिलि गयो ऊपर चीरत हैं ॥ ज्ञानी सेती मूल देव पूछन ही राज मिल्यो, योगी फल खोय रोय दुःख ही धरत है । वैसा ही स्वप्न पुनि देव

योग मिल जाय, कठिन है नर भव चौरासी फिरत है ॥७०८॥

कोई एक नरवर रच्यो सुता स्वयम्वर व्यावन को आया कई घर के उमेदरे। तिहां एक थंभ उर्द्ध सोले आरे चक्र फिरे, तिणी पर पुतली सो जाणो राधा वेदरे, पुत्री वरे वोही नीचे तप्त तेल कडाह बीच, देख वांण फेंक राधा बायीं आंख छेदरे। दैव वश होय पिण मनुष्य जनम खोयो, मिलवो कठिन भोगे जीवा योनी केदरे ॥७०९॥

द्रह एक अष्ट पुड सेवाल से आछादित, ताल फल टूट पड़ा छेदाणी सेवालरे। कछुवो निकल शशि पुनम को देखि गयो कुटुम्ब तेड़न छिद्र मिल्यो ततकालरे ॥ छिद्र नहीं पायो पछतायो भूंठो पड़िगयो, पीछा योग कैसे मिले देवे शंका टालरे। वोही योग देव योग फिर हू मिल ही जाय मनुष्य को भय घणो कठिन करालरे ॥७१०॥

स्वयंभु रमणो दधि असंख्य योजन तणो, तिहां कोई देव कीली धुसरो ले जायरे, पूर्व के कंठ धरे धूसरो पच्छिम कीली, पानी मांहि इत उत दोनों झोला खायरे, दोउ का संयोग महा दुल्लभ है सूर वश, धूसरे के छेद कीली पेस जावे आयरे,ऐसे पुदगल वश नर भव हार गये,

मिले मुशकिल करे कोड़ ही उपायरे ॥७११॥

सोले जाती रतनां को अति उंचो थंभवर, बारीक चूरण कोई देवता बनाय दे । लोहा की नली में भर जाय मेरू चूली परा जोर फूंक देइ दश दिशा में उड़ायदे ॥ सब पुदगल परमाणुं एकत्रित कर पीछा थंभ कैसे होय यह मुझे बतायदे ॥ होय देव योग पिण दुल्लभ मनुष्य भव, मूरख कोड़ी के काजे रतन गंवायदे ।.७१२॥

॥ नुकता मोसर ॥

अन्य देश देखते मुहताज है मेवाड़ देश, घोरत कष्ट करी पैसे को कमावे है । पुन्य पे तो शून्य लगी खुद भी न खाय सके लूघड़ा के सात सात थेगला लगावे है, बालकों की शक्ति बुद्धि हीण करी मूरखों ने, पुस्तक के बिना ताने ताव तरसावे है । बाप मरा चोखला में चिठी दी बतीस गांव, लड्डू पुरी करी धुँवो घर को उडावे है ॥७१३॥

चक्रवर्ति हुवे जाके बतीस हजार देश, नव निद्धि पांव तले वो भी मृत्यु पाया है, श्रेणिक कोणिक मोटा चेटक महीप हुवा, अन्तकाल करी पर भव में सिधाया है ॥ अरणक शंख श्राद्ध आनन्दऽरु कामदेव, वो भी छोड़ गया पीछे क्रोड़ां तणी माया है, वीरजी के

मात पिता मर गये दाग दिया, मोसर भी किया ऐसा कहीं न बताया है ॥७१४॥

आगम निगम वेद श्रुतिय पुराण बीच, मोसर का नाम ढूंढो कहीं नहीं पावे है । अंध श्रद्धा नीच प्रथा घुसी है समाज मध्य, जात गंगा बोल २ जाति को जिमावे है ॥ क्रूर कुटारंभ करी पाप का पोषण करे, पड़े ऊंडी नर्क में ठाणायंग चेतावे है, मोसर या मेरेसर नुक्ता याने मींडी लगी, मरने वाला आगे ऐसे रो रो अरडावे है ॥७१५॥

हमारे बड़ावे हुवे आगे से करते आये, पेटके पूजारी ऐसे अटकावे रोड़ा है । बड़ावें तुम्हारे होते क्षत्रियों की खान दान, दारू पीते मांस खाते आज कैसे छोडा है ॥ बड़ावे तुमारे कोई कर्महु ते अन्ध हुवे, उन्हीं जैसे होना तुम्हें नैन क्यों न फोड़ा है, विना पढ़े बाप थे हमारे हम कैसे पढें, नुक्ते ही पै वना क्यों तू गोगाजी का घोडा है ॥७१६॥

हजारों रुपये ऐसे मोसर में नाश होय, एक टेम दूना चाटी सबी भग जावे है । घर खेत फुंक दियो जेवर भी भूंक दियो, दया हीण लोक मीठो माल गट कावे है, जोखम में जान पड़ी विधवा अनाथ बच्चे, अन्न २ करे कैसी

काया कलपांव है । धूल डारो ऐसे नीच खाने पै सु बन्धु मेरे, करो त्याग आज मुनिराज फरमावे है ॥७१७॥

ग्यारया बारया मासी खटमाली वर्षी श्राद्ध किया, डागड़ी गंगोज भी गुंजाया ढमके ढोल्के । प्रेत खान पान सभी मांस के समान कह्यो, भविष्य पुराण मांहि देखो दृग खोल्के ॥ गीता भी टटोल लीजे तमोगुण पैदा करे, अमृत भरोसे विष पीये मती घोलके । कुछिका बिगाड धन धर्म विनाश करे, चाहे जितो कहो टांची लगे नही टोल्के ॥७१८॥

॥ बांजड़ी ॥

शिक्षा बुद्धि हीन गुण गौरव मलीन कीन, पुत्र काज करत प्रपंच नाग जातड़ी । मनावे महादेव चन्द सूरज गणेश हनुमान, भोपा भैरू पास जाय लीनी आखड़ी ॥ अबोली ने ऊबछट गट चाक उखरडी, गोबर को गोरधन पूज-लीयो बापड़ी । दशामा दिहाडी गोगा शीतला ने गणगोरी, पूर्वज पूजने जगाई मार्ग गानडी ॥७१९॥

कार्ती स्नान व्रत बत्सनागपंचमी नागपञ्चमी, होली जमण के काज किया म्हाजा पापड़ी । वर्णी कराई जोगी जगम फकीर भख्या, नालिया का तंत्र मंत्र किया बांधी तातड़ी, दवाई मंगाई जड़ी बूंटी पचासों ही खाट फली

चालुड़ा की जाल मांही जैसे मांकडी । आशा अभिलासा पूरी हुई नहीं पुन्य बिना, भाग्य हीणा तो भी रही बांजडी की बांजड़ी ॥७२० ।

॥ सती पद्मनी ॥

आज राज वंशियों के रनवास ढूंढ देखो, विषय भोग नाच रंग राग की मरोड में । वीर रमणियों का खिताब उन देवियों को, विकल भई मस्त आज मर्द की मसोढ़ में ॥ शान नहीं भान नहीं धर्म कर्म ध्यान नही, धन्य माता आप हुई जोग माया जोड में । केद से ले-आई पति देव राना रत्न हु को, अमर नाम कर गई है पद्मनी चित्तौड में ॥७२१॥

॥ मूढ़ता भरी प्रार्थना ॥

जैसे एक राजा तणी बग्घी को पकड कहे, मैं हूं दुखियारा मेरा दुःख दूर कीजिये । इच्छा हो सो मांग तदा भाग्य हीणा बोला ऐसे, मुझे एक पाव मूंगफली दिला दीजिये, ऐसे ही अभागी भगवान् से अरजी करे, मुझे पुत्र राज द्रव्य दारा बखसीजिये । राजा तूठा अमर जागिरी दे मिटावे दुःख, ऐसे ही प्रभु से प्रभुपद मांग लिजिये ॥७२२॥

हीरा पन्ना मणि मोती माणक लीलम बहु, जोंहरी ले बैठा जांकी कीमत करार है। ताहि पास जाय कहे पैसे की तमाखु देवो ,उन जैसा कहो कोई दूसरा गमार है ॥ ऐसे मूढ़ नर मांगे प्रभु पास पुत्र धन ताहिपास रख्यो नही तंतहु को तार है । जग के जंजाल से निकाली निज आतमा को, अरूपी अयोगी निरंजन निराकार है ॥७२३॥

॥ महजबों की खटपट ॥

होवे अरिहन्त इस काल जो सचेल रूप, देखते ही तंत् खोस लेवे ये दिगम्बरी । यदि होवे नगन स्वरूप नही सहन होय, कपड़े पहनाये विना रहे क्यों सितम्बरी दोनों के भय से भगवान् आरे पंचम में, पैदा नहीं होय लगे ताणा ताण जबरी । कैसी दशा आज जिन शासन में दीख रही, मज्हबी लड़ाई लगी अजब गजब की ॥७२४॥

दश ग्रासियों में यदि तीर्थंकर देव होते, ताले ही में बन्द रहते बाहर नहीं आते वो । अगर चे दिगम्बरी के मत में प्रवेश होते, चक्षु चेक किये जाते ये भी मजा पाते वो ॥ तेरह पंथी होते तो दया दान पुन्य सबी, मूल से मिटाते दुःखी दीन को रुलाते वो । ऐसे दुरबुद्धियों के

फंदे में जो फस जाते, साधना तो दूर रही यातना उठाते वो ॥७२५॥

विष्णु भी पुकारे जैनियों के है पारसनाथ, जैनी लोग बोले ऐसे विष्णुओं के राम है। दोनों ही झूठे है उन्हे मजहब में ठोंस दिये, जग से निराले देउ तीन लोक स्वाम है। पक्ष के वन्धारण बन्धे पढे है जो मन्दिरों में, वो नहीं तिलोकी नाथ मज्हबी मुकाम है। सत चित आनन्द अगम्य अविनाशी प्रभु, पाये सुखराम ताके मन्दिर है न गाम है ॥७२६॥

वेद मत मान ले तो जैनी कहे मिथ्या दृष्ट, जैनी बनें विष्णु कहे नास्तिक के भाई है। अगर न पुरानी पढे कुरानी कहे काफिर तू, कुरान पढे तो हिन्दू कहे तू कसाई है। अपनी ही तूती के तरंग में तणाये बैठे, दुष्टता न छुटी एक उपर की लडाई है। पक्ष पात प्रवृत्ति में पतन की पूर्णता है, निवृत्ति के विना तेरे सभी दुःख दाई है ॥७२७॥

॥ संगति से हीं उत्थान और पतन ॥

अधोगति करत उदक का स्वभाव सदा, नदी नाल खाल देख लीजिये जगति में। नल के प्रयोग नीर सातवीं मंजिल चढ़े, यही तो प्रधान गुण रहा सु संगति में ॥

ऐसे कामी क्रोधी अत्याचारी चोर दुर्गुणी, पापों से पतन होके पड़ते कुगति में। दया दान सत्य शील संयम सुगुण धरे उर्द्ध्व गमन करे डेरा दे सुगति में ॥७२८॥

॥ साधुओं का प्रेम ॥

जैसे नट बरत पै नरत करत रहे, चारों दिशी देखते हु डोर रखे ध्यान में। पनिहारी शीश धरा बेवड़ा में चित्त वसे, हाथों का दे झाला चढ़े बातों के तुफान मे॥ उस्तरा चलाते नाई रखे धुनि धारा बीच, चरत फिरत गऊ सुरत सन्तान में। ऐसे संत संसारी लोगों से व्यवहार करें। अन्दरुनी भावना तो रहे भगवान् में ॥७२९॥

॥ आलसी की दशा ॥

बोर झाड़ तले एक आलसी पुकारे पड़ा, अहो ऊंट वाला जरा इधर पधारिये। आया ऊंट वाला कहे नीचे तो उतर भाई, छाती पै पड़ा है बोर मुख मांहि डारिये॥ कैसा आलसी है, तहां दूसरा पड़ा वो बोला, अजी यह तो गया बीता आप ही विचारिये। सारी रात श्वान मेरा मुख चाटता ही रहा, मैंने कहा भाई जरा इसे ललकारिये ॥७३०॥

॥ आत्मा और कर्म ॥

तूंबड़ी को स्वभाव तो सदा ही तिरबेहु को, कबहू

डुबत नांहीं जल में दबावे है। दिये अष्ट रस्सी बन्ध वसु लेप मिट्टी हू के पानी मांहीं पटकत पाताल पठावे है॥ ऐसे जीव तूॅबी सम डूबन को नहीं धर्म, वसु कर्मो के वश कुगति सिधावे है। बन्धन कटत तूॅबी आवत ऊपर चली, तैसे कटे कर्म मुगतगढ जावे है ॥७३१॥

॥ हूक्के वालों की दुर्दशा ॥

लधु बधु दोनों यार हुका के पीवणहार, करके तैयार बैठा चाली मनुहार हो। लधु भाई खेंची घूॅट तवे आई खाॅसी ऊठ, खेंखार को बूर दियो नाली में उतार हो॥ बधु हाथे दिया हुका खुश हो पीवन ढूका जोर से खेंचत आया मुख में खंखार हो। अनिष्ठ कर्म ताकों इष्ट मानी हुए भिष्ट, ऐसे यम दूतन को लाखन धिक्कार हो ॥७३२॥

॥ सत्संग का लाभ ॥

मिथ्याती अधम अति परदेशी नरपति, करी जीवां कती खोली कुगति किंवारी है। केशी मुनि समझायो शुद्ध समकित पायो, राज छिटकायो हुवो बार व्रत धारी है॥ राणीजी को पाय जहर भोजन खवाय दियो, फेर चढी छाती टूॅपो देई नाख्यो मारी है। नृप क्षमाधार कोप कियो न लगार, गयो स्वर्ग मुझार हुवो एका भव तारी है ॥७३३॥

॥ स्त्री मो में पतन ॥

जिनरिख जिनपाल रयण द्वीप आये चाल, रयणा देवी तणी चाल ते मांहीं बंधाया है। शैलक शरण लियो चल्यो सुर लेइ तब, देवी आई हाव भाव करी ललचाया है ॥ मोहवश जिनरिख मरियो अकाल बीच, जिनपाल मोहजाल तोड़ी घर आया है। ऐसे मुनि मोह वश बंधत कुगति जाय, मोह का विछोह किये सुगति सिधाया है ॥७३४॥

गौचरी करण लिए अरणक मुनि गये, कुशीला कामणी लखि प्रेम जाल पाथरी। चंचला चरित देख मुनि तज दियो भेख, हुवे अन्धा धन्ध मोहवश दिन रात-री। जननी को विकल वे शुद्ध लखि आई बुद्ध, पुनरपि योग लियो लगी सीख मातरी। महा दुखकारी निजगुण की लुटारी करे, मगज भिखारी या संगत नारी जातरी ॥७३५॥

॥ तमाखू निषेध ॥

भ्रष्ट जात तमाखु में दुनियां दिवानी हुई, काग कुत्ता खाय नहीं मकट हु पेखिये। खांसी क्षयरोग का निवास खून नाश करे, मरे पे कुगति त्रास भोग वे विलेखिये। तन धन खोय सब धर्म डुबोय देत, नादानी को छोड़

प्रिय काती महातम देखिये । गउ कान टूट पड़ा तमाखु पैदाश हुई हिन्दू का लक्षण हो तो चिलम दूर फेंकिये ॥७३६॥

॥ धान्य की योनि ॥

साली जवार गेहूं जव मक्कादि त्रिवर्षे निर्जीव हो-जावे । दो दाली तुवर चणादि तिजारो तिल्ली की योनि पंचवर्ष रहावे ॥ कोद्रवा कांगणी शण सरसूं अलसी आदि सात वर्ष विनमावे । ठाणांग सूत्र और विवाहपन्नति के छट्टे शतक में ज्ञानी फरमावे ॥७३७॥

॥ चार वृत्ति ॥

दानवी वृत्ति का है यही लक्षण मेरा सो मेरा है, तेरा भी मेरा तेरा सो तेरा है, मेरा सो मेरा, यह मानवी वृत्ति का भाव भलेरा ॥ दैविकवृत्ति में तेरा वो तेरा है मेरा भी तेरा यह उत्तम चहेरा । ब्रह्मवृत्ति में अधेरा मिटा सब झूठा बखेरा न तेरा न मेरा ॥७३८॥

॥ शुद्धा-शुद्ध क्षेत्र की फसल ॥

घजड़ खेत में बीज पड़े, कहो कैसे फले यों ही बीज गमाया । आक धत्तुर उखार मुलायम, जो किया माल निहाल कमाया ॥ यों तप संयम शील जपादिक, क्षेत्र अशुद्ध फलेन फलाया । काम क्रोधादि कु झाड़ उखाड़

धरो फिर बीज फले मन चाय ॥७३९॥

॥ बैर नहीं छूटेगा ॥

डोलर झूले में चार झुलाउ थे, ऊपर का अभिमान करारा। थूंक दिया पडा नीचे के नाक पै, बेवश हो रहा सुन्न बिचारा ॥ नीचे का ऊपर पहुंच गया, तब छोड़ दिवी है पिशाब की धारा। दाव लगे पुनि वेर निकालत वेर करो मत बन्धु हमारा ॥७४०॥

॥ इष्ट मनुष की मृत्यु पर जगदोद्गार ॥

था पुन्यवान दयालु दानीश्वर, ताज समाज का टूट गया है। कुन्दन के सम स्वच्छ सुलक्षण, अमृत का घट फूट गया है। शान्त सदा प्रिय सत्य सुशील, यथा अवलम्बन छूट गया है। काल कराल कलेजा हमारा हां रे दुर्दैव क्यों लूट गया है ॥७४१॥

॥ अनिष्ट की मृत्यु पर जगदोद्गार ॥

था एक नीच सलीच नराधम, फोडा फजीती का फूट गया है। दंड अफंड किया है कुमागम गला गरीबों का छूट गया है ॥ कंटक निन्दक क्रोध की मूरति, दंभ का थंभ था टूट गया है। भली करी भगवान दयानिधि, वो दुनिया मे उठ गया है ॥७४२॥

॥ तीन वस्तु पर हंस का झूंठा अभिमान ॥

मान सरोवर हंस बसे, पर संस नहीं बसते बहु प्राणी, उज्वल का अहंकार करे, मत है बुगला उजला अगवानी ॥ मोती चुगे पै बड़ा नहीं होत है, मोती तो मच्छी की सतती जाणी ॥ एक ही है गुण तेरे में हस, करे दूध का दूध पाणी का पाणी ॥७४३॥

॥ तीन वस्तु पर मनुष्य का अभिमान ॥

का कुल का अभिमान करे नर, कौरव का कुल ही गया मारा। रूप का मद वृथा है तेरा, कई गोरे गुरड गौ भक्षण हारा। जो धनवान् भयो तो हुयो काहु खट खंड नायक नर्क सिधारा। एक ही तारीफ तेरी करूं, दुखियों पे दया कर जन्म सुधारा ॥७४४॥

॥ हरिगीत छन्द ॥

राजपूतों का ही कीर्त्तन, कतई मुनिगण कर गये।
नर वीर योधों का, चरित संसार सम्मुख धर गये।
सेकड़ों संकट सहे, दुनिया का संकट हार गये। वो अमर जीवन कर गये, हां कौन कहता है मर गये ॥७४५॥

आवे शरण में अगर को, रक्षण की भिक्षा याचता।
परिक्षा उत्तीर्ण समय, लख निज गौरवता पर नाचता।

धन प्राण मे कर्त्तव्य, पालन कर उसे निस्तारता । राघव विभीषण जगत, जाहिर विहल चेटक वारता ॥७४६॥

॥ सत्यता ॥

सत्य में कितने अडिग थे, लेखनी क्या लिख सके । वीर अर्जुन के सम्मुख क्या, क्रोडी शत्रु टिक सके । चात्र वंशज देवियों पै, कई लुभायो लम्पटी । कष्ट आये मर मिटी, पण सत्यता से नहीं हटी ।।७४७।

पूर्णिमा का चन्द्र मण्डल, रंच भी खण्डित नहिं । त्यों सत्यधारी सर्व गुण, सम्पन्न मिथ्या पंडित नहीं ॥ सत्य में भगवान् है, और सत्य में सब सिद्धि है । सत्य नारायण कथा यों पूर्णिमा पर सिद्धि है ॥७४८।

॥ सट्टेमें ॥

चलता है लीलाम फाटका, बड़ा सराफा हट्टे में । कवेलु पतरे गट्टर, तांग बादल पानी गट्टे में, एका नोका चोका छक्का, पंजे सत्ते अट्टे में, भिखारी बन बैठे बन्धु, सत्यानाशी सट्टे में ॥७४९॥

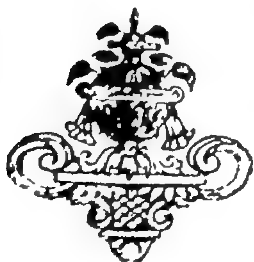
॥ ये मजा शराब में देखा ॥

बिना चलेही सफर, करना ये मजा ख्वाब में देखा । लगाते बाल ब्याह होजाना, ये मजा खिजाब में देखा ॥

करे कौड़ी पाई ॥ मनाई नाही कोई भी लेजाय, रखेगा इमान वो सुखी सदाई । दया के सागर सन्त मुनिश्वर, कल्पतरु यही है जगमांई ॥७५३॥

मगलं भगवान् वीरो, मगलं गौतम प्रभु ।
मगलं थूलभद्राय ध्या, जैन धर्मस्तु मंगलं ॥

॥ सवैया संग्रह समाप्तम् ॥



॥ विविध दोहरा संग्रह ॥

॥ पूज्य खूबचन्दजी म. का दोहरा ॥

अरिहत सिद्ध आचार्यजी, उपाध्याय अणगार।
खूब कहे सुमरो सदा, हो जाओ भव पार ॥ १ ॥
खूब गुरु उपदेश से, हो अज्ञान का नाश।
जैसे तम रहता नहीं, सविता के प्रकाश ॥ २ ॥
सत्य शील निर्लोभता, दया क्षमा भरपूर।
खूब कहे उन संत की, सेवा करो जरूर ॥ ३ ॥
गुरु वैद्य माता पिता, और भूप के पास।
खूब कहे पूछे तभी, दीजे साफ प्रकाश ॥ ४ ॥
शूर पुरुष देखे नहीं, शकुना दि तिथिवार।
खूब सदा ही निडरता, ताकू कहा विचार ॥ ५ ॥
सिर मुंडाय साधु हुए, काम दाम तज धाम।
खूब कहे उन सन्त के, कहा दाम से काम ॥ ६ ॥
साधु सेठ और वैद्य के, अवश्य मुलामी होय।
खूब कहे इन तीन की, शोभा करे सहु कोय ॥ ७ ॥
दुनियां में दाता घणा, आशा हित दे दान।
खूब मोक्ष के हेत दे, वे विरला नर जान ॥ ८ ॥
खूब साज दियो वक्त पे, आखिर अपणो जान।
नुगरो ते गुण भूल के, निकल्यो डांस समान।
खूब दान चौड़े करे, अपणी महिमा काज
टुकड़ा भी देवे नहीं, जो द्वार खड़ा ।६

वैद्य और राजा मुनि, मुखिया पंच कहाय।
ये चारो जूना भला, खूब कहे समझाय ॥ २२ ॥
मूर्ख वैद्य लोभी गुरु, न्यायहीन सरकार।
खूब कहे इन तीन से, कभी न होय सुधार ॥ २३ ॥
मूंजी धन कण कीड़यां, सचय कर मर जाय।
खूब कहे दोनों कभी, नहीं खर्चे नहीं खाय ॥ २४ ॥
पापी जन की जगत में, खूब कहे पहिचान।
दया दान भक्ति नही, अंगे अति अभिमान ॥ २५ ॥
खूब कहे पुण्यवान् की, जग में यह पहिचान।
दया, दान, भक्ति वसे, अंगे नहीं अभिमान ॥ २६ ॥
मेघ मुनि नृप देवता, दाता होय दयाल।
खूब प्रसन्न पांचो हुए क्षण में करे निहाल ॥ २७ ॥
पाप थकी पीछे रहे, धर्म मोहे अगवान।
खूब कहे वह आदमी, सुगति का मेहमान ॥ २८ ॥
धर्म थकी पीछे रहे, पाप माहे अगवान।
खूब कहे वह आदमी, दुर्गति का मेहमान ॥ २९ ॥
लज्जा को गिरवे धरी, लोपी कुल की कार।
खूब कहे मोटा थई, डोले सरे बाजार ॥ ३० ॥
हाकिम रिश्वत खात है, साधु सत्य के बाहर।
खूब कहे कानून से, दोनों हीं गुन्हगार ॥ ३१ ॥
सुणी बात माने सही, निर्णय काडे नांय।
खूब कहे या जगत में, लोग भेड़ पर वाय ॥ ३२ ॥

खूब देख पर संपदा, दुष्ट भाव मत लाय।
जो जैसी करणी करे, फल वैसा ही पाय ॥ ४४ ॥
स्वारथ को संसार है, बिन स्वारथ नहीं कोय।
जुं पडित की पत्रिका, वर्ष लग आदर होय ॥ ४५ ॥
तन, बुद्धि मुंह, प्रकृति, भाषा, भाग्य, विचार।
खूब कहे सब मनुष्य में, मिले नहीं इक सार ॥ ४६ ॥
अधो वायु, खांसी, हँसी, छींक, उबासी, डुकार।
खूब कहे सब मनुष्य में, मिलती हैं इक सार ॥ ४७ ॥
खूब मीन, सज्जन, मुनि, ना कुछ किसी को केत।
ताकों बिन अपराध ही, दुर्जन जन दुःख देत ॥ ४८ ॥
खूब योग्य नर जाण के, शरण लेह कोई आय।
आप निभावे जन्म भर, पिछले को कह जाय ॥ ४९ ॥
नारी नारी एक हैं, सकल जगत भरपूर।
भगिनि भार्या विचार कर, चतुर पुरुष रहे दूर ॥ ५० ॥
खूब पत्र अन्न वस्त्र के पग ठोकर दे जेय।
मैं तो बड़ों के मुंह सुणी अशुभ जाण ज्यो एय ॥ ५१ ॥
मिष्ट बोला करजो लेहे, हर्षित खुब अपार।
जब वो आवे मांगवा, लड़वा होय तैयार ॥ ५२ ॥
बिना काम पूछे बिना, रे मानव मत बोल।
खुब मोन धर के रहे, तज कर हंसी किलोल ॥ ५३ ॥
खूब देख कुछ जाति का, कर लेते अनुमान।
अब तो हुए बहुरूपिया, होती नही पहिचान ॥ ५४ ॥

पाच बात मेवाड में, अधिक मान का धींग।
ओखम मोखम जीमणों, वड़ो हुक्म और सिंघ ॥ ६६ ॥

॥ पहेलियां ॥

प्रश्नः—एक ऋषि डंडे पर डटा, खुब शीश पर लम्बी जटा। नीलाम्बरी नहीं माला फेरे, वृद्ध होय तब धोला पहरे ॥ १ ॥

प्रश्नः—लम्बा पयोधर पतली काय, उगो कमल नाभि के माय। खून मांस तन ऊपर नाय, खुब नशा चोड़े दरशाय ॥ २ ॥

प्रश्नः—पय पायां पीवे घणो, जरे नहीं उर माय। नर पूठ सोती रहे, खुब बिछात बिछाय ॥ ३ ॥

प्रश्नः—पाव बिना डूंगर चढ़े बिना मुखे खज खाय, खुब पसरे वायु लगे, जल पायां मरजाय ॥ ४ ॥

प्रश्नः—खुब नार पग पांच की, तीन नेत्र से नाले। एक पांव ऊंचा रक्खे चार पांव से चाले ॥ ५ ॥

प्रश्नः—पाप कर्म करते 'रहो', जो सुख चाहो सेण।
कहे मानो सही, ये सत्गुरु के वेण ॥ ६

प्रश्नः—सुता मात सासु वहु, नदन भोजाई
करे जे छः पुड़िया, कितनी

प्रश्नः—पिता पुत्र सालो बहनोई, म

में, जीम लिये सब शामिल होई। खुब कहे लड्डू थे कितने जो जोड़ बताते है पंडित सोई ॥

उत्तरः—पुत्र पिता, साला, ये तीन ही थे और ६ लड्डू थे।

तुक्कें

रास्ते का आम १ फायदे का काम २ जागीरी का गांम ३ घर बैठे दाम ४ मुफ़्त में नाम ५। खर लड़े लातों से १ श्वान लड़े दान्तों से २ मूर्ख लड़े हाथों से ३ पंडित लड़े बातों से ४ मिलना वीरो का १ जीमणा सिरेका २ व्यापार हीरे का ३ बगार जीरे का ४ लड़ाई चान्दा की १ मरोड बादा की २ हाय मांदा की ३ बास कादा की ४ आवाज अन्धा की ५। एकता नाइयों की १ दुश्मनी भाइयों की २ गीत कला बाइयों की ३। भोजन मे राड १ रास्ते में खाड २ नदी में झाड़ ३। किवाड़ की कील १ जंगल में भील २ आकश में चील ३ राज्य में वकील ४। बैल बिना गाड़ी १ लाड़े बिना लाड़ी २ फूल बिना वाड़ी ३ जंगल बिना झाडी ४ रंग बिना साड़ी ५। सोना सेजों का १ बैठना मैजों का २ मरना हैजों का ३। कमों के लिहाज नहीं १ नांगा को लाज नहीं २ रंग राज नहीं ३ समुद्र के पाज नहीं ४ कुबद कारो

गाडी को भय ढुड्डण को १ काया को भय कुड्डग को २ माया को भय लुड्डण को ३ बुड्डा को भय उड्डण को ४ साधु को भय झुड्डण को ५ । करजे लड़ाई तो बोलजे आड़ो १ करजे खेती तो राखजो गाड़ो २ राखजे भैंस तो बान्धजो बाडो ३ । बाता में टेकी १ धर्म में द्वेषी २ यौवना में शेखी ३ । कुत्ता बिना गांम कहां १ गुण बिना नाम कहां २ पाणी बिना कूप कहां ३ न्याय बिना भूप कहां ४ । पंच राणा १ पंच शाणा २ पंच काणा ३ पंच धूल खाणा ४ पंच ऐंचा ताणा ५ । देवाणं मन्त्राणं, १ सेठाणं गन्थाणं, २ रायाणं हुकमाणं, ३ गोलाणं गप्पाणं, ४ । करे सो भरे १ फूटा सो झरे २ झूंठा सो डरे ३ पाक्या सो खरे ४ जनम्यां सो मरे ५ । नीची नजर मोर सी बोली, कर में रहे समरणी । बाहर संत सरीखा दीखे, भीतर रहे कतरणी । खूब कहे जो नर हो ऐसा, उससे बचते रहो हमेशा । गली बीच की तीन लाख, चार लाख बजार की । चुगल खोर के मुंह पर, पन्द्रह लाख पेजार की ।



भागता ही मारसी, लागसी पुठ घाव ।
जागीरी उत्तर जावसी, तेरे धणी न कहेसी आव ॥ १० ॥
संस्कृत टिका पढ्यो, पढ्यो अठारे पुराण ।
दया धर्म पढ्यो नही, सर्वे जाण अजाण ॥ ११ ॥
मुख मिठा खोटा हीया, गुंथे जीवा पास ।
ज्यां जीवां ने जाणजो, निश्चय नरकां वास ॥ १२ ॥
साध देख दुनियां हंसे, दुनियां देखी साध ।
उलट पलट का ख्याल में, केई परमार्थ लाध ॥ १३ ॥
कथणी तो कथे घणी, करणी न करतो कोय ।
रिता बावे बुमरा, धान कहां से होय ॥ १४ ॥
खांवण पिवण पहरनों, करे घरांरी सार ।
भड़ भुंजारी भाड़ जुं, पच रहयो संसार ॥ १५ ॥
हंस हंस कर्म जो बांधिया, कर २ मनमें जोश ।
भुगतणारी वीरियां हुआ, फिर देवे रामने दोष ॥ १६ ॥
फकीर फकीरी खुब है, जैसे पिंड खजुर ।
चडे तो चाखे प्रेम रस, पडेतो चकनाचुर ॥ १७ ॥
देतो भावे भावना, लेतो करे संतोष ।
वीर कहेरे गौयमा, दोनों जासी मोक्ष ॥ १८ ॥
एक कनक दुजी कांमणी, जगमें दो तलवार ।
उठयो थो हरी भजन कों, विचमें लीना मार ॥ १९ ॥
एक कनक दुजी कांमणी, जगमें मोटी खाड ।
राजा राणां बादशा, पड पड फोडया हाड ॥ २० ॥

एक कनक दुजी कांमणी, जगमें दोय फंदा ।
इण सेति न्यारा रहे, सो साहीब का बंदा ॥ २१ ॥
नारी भली न काष्टकी, कागद नो चितराम ।
जेमल कहे देखो मति, दिठां जागे काम ॥ २२ ॥
बाजा बाजे मदभरे, गढ़पति आयो चलाय ।
के भूंम सम्हालो आपणी, के खोला ताको जाय ॥ २३ ॥
बाजा बाजे मदभरे, गढ़पति आयो मतजाण ।
मों गाज्यां वो भागसी, तो मायड़ि जायो प्रमाण ॥ २४ ॥
सिंह तटपर आयने, कियो बहु अग्रराज ।
हैवर की गीनती नही, गया गजन्द्र भाज ॥ २५ ।
अंधा आगे आरसी, बैरा आगे गीत ।
मुरख आगे रस कथा, ऐतिनों येक ही रीत ॥ २६ ॥
कुंम्भे बांध्यो जल रहे, जल बिन कुंभ न होय ।
ज्ञाने बांध्यो मन रहे, गुरु बिन ज्ञान न होय ॥ २७ ॥
पांणी में पांणी मिले, मिले काच में कीच ।
साधू में साधु मिले, मिले नीच में नीच ॥ २८ ॥
श्रावण भादव मांहीने, ज्यां देखो ज्यां नीर ।
ज्येष्ट हिलोला ज्ये करे, ते सागर गम्भीर । २९ ॥
शूद्धं चैतन उज्वल द्रव्य, कर्म मेल रह्यो छाय ।
तप आतम सुं धोवता, ज्ञान जोत बध जाय ॥ ३० ॥
क्रोड़ पुरव नो तप तप्यो, क्षण में खेरू थाय ।
क्रोध रूपीण अग्न छै, तिणने परि बुझाय ॥ ३१ ॥

बालपणो रामत में खोयो, जोबन में हल हांक्यो ।
बुढ़ापा में माला पकड़ी, राम थारो ही मन राख्यो ॥ ३२ ॥
अंकुश बिन बिगड्या घणां, कुशिष्य कुपात्र नार ।
अंकुश माथे धारिया, जारां खेवा पार ॥ ३३ ॥
आपो तजे हरी भजे, तन मन तजे विकार ।
निर वैरी सब जीव का, दादू वो मत सार ॥ ३४ ॥
खीच तणी पर खद बदे, तड़ २ नस टूटन्त ।
तो पण ऋसि चलीया नहीं, सुरवीर गुणवन्त ॥ ३५ ॥
कपड़ो पेरे साठ गज, जलको छांणे नांय ।
जीव असंख्या पीत है, घूंट घूंट के मांय ॥ ३६ ॥
रे गायन ए गायन सेवड़ा, तुं जानत परविण ।
ए गायक कड़बीन के, तुं ले बेठो करबीण ॥ ३७ ॥
पतिव्रता फाटां लता, धन ज्यारा दीदार ।
कहै कालु कीण कांम को, वैश्या तणों सिणगार ॥ ३८ ॥
वोर कुल्या में उपनों, पग हेटे चिथाणों ।
गर्भ करी ने बापड़ा, ठांम ठांम कुटाणों ॥ ३९ ॥
कजली वनमें वा बसे, रेवानंदि पिवन्त ।
वे दिन हाथी याद करे तो, हाथी कींम जिवन्त ॥ ४० ॥
में कहुगीं तुम सुणोंगे, तुमने आवेगी रीस ।
तुम मरोगे फेर करूंगी, अबके पुरा बीस ॥ ४१ ॥
दधि सुत के नीचे वसे, मोती सुत के बीच ।
सो मांगत है राधिका, श्याम करो बत्तीस ॥ ४२ ॥

पंडित को पुरब भली, चातुर को पंजाब।
मुरख को मुरधर भली, लापर को ढूंढाड़ ॥ ४३ ॥
कांमी क्रोधी लालची, मांनी ने मद अंध।
चौर जुवारी चुगल खौर, आठों ही दीखन अंध ॥ ४४ ॥
दांन देवतां धन्न गयो, तपस्या करतां तन्न।
शील पाल्तां जोबन गयो, तीनों गयां मगन ॥ ४५ ॥
साधांरी वांणी सुणी, आयो जोर वैराग।
इतनां दीन होता पशू, अब खुलीया मारा भाग ॥ ४६ ॥
थानक वाहीर निकल्यो, लोग बोल्या छे टटकी।
वैठो मुडो वांद ने, भली गंमाई घर की ॥ ४७ ॥
कोईक करड़ो बोलियो, कोईक दीनी गाल।
मेंण तणों गोलो हुतो, पीगलियो तत्काल ॥ ४८ ॥
स्वार्थ के सबही सगे, विन स्वार्थ नहीं कोय।
सेवे पंखी सरस तरु, निरस न वैटे कोय ॥ ४९ ॥
दुष्ट न छोडे दुष्टता, कैसी ही सिखज देत।
धोयां थी सो वार ही, काजल होय न श्वेत ॥ ५० ॥
चंचल जोबन जात है, वादल छांया जेम।
तप संयम आदरो, करो धर्म से प्रेम ॥ ५१ ॥
छांड़े निच न सहज गुण, सीख दीये सौ कोय।
सो पुट देवो सुगंध की, ल्हसण सुगंध न होय ॥ ५२ ॥
म्हारे शील आंबो फल्यो, सेठरो शील अथाग।
राजारे शीले सत्य गयो, जोगी फुटा थारा भाग ॥ ५३ ॥

तीर्थ व्रत कीदा घणां, मन में राख्यो कुड ।
अम्मर होवणरी चाय छे तो, दे कंचन उपर धुल ॥ ५४ ॥
एक कमाई ने लागीयो, घणा जणां रो सीर ।
दोरी वीरीयां जिवड़ा, थारी कुण भांजेला भीर ॥ ५५ ॥
धर्म करण की नांही आस, पाप करण वांधी सास ।
खाय खाय वधायो मांस, डूबा उपर तीन बांस ॥ ५६ ॥
दया जिनों के दील नहीं, वहुत कहावे साध ।
जो उनका मुख देखिये, तो लगे बहुत अपराध ॥ ५७ ॥
सुख दुख संच्चा आपणां, हर काहूं को होय ।
ज्ञानी भुगते ज्ञान से, मुरख भुगते रोय ॥ ५८ ॥
चतुराई धर छप्पर पर, सुनरे मन मगरुर ।
भाव भगत जिन ना भज्यां, तो जांण पणां में धुर ॥ ५९ ॥
रविकों कमल अनेक है, कमल कों रवि एक ।
हम्मसे तुमकों बहुत है, तुमस हमकों एक ॥ ६० ॥
सुखरी वीरीयां सगा घणा, दुखरी वीरीयां दुर ।
ते सगा ने वोलाई ये, बहत्ती नदीयां पूर ॥ ६१ ॥
जो धन होत अनीत सुं, जातां न लागे वार ।
जोरी से होरी करी, हुई छीनक में छार ॥ ६२ ॥
जो सज्जन सौ जोज ने, तोही हीया मुझार ।
जो दुर्जन घर आंगणे, तोही समुद्रां पार ॥ ६३ ॥
काजल तजै न श्यामता, मुक्ता तजैन श्वेत ।
दुर्जन तजै न कुटलता, सज्जन तजै न हैत ॥ ६४ ॥

घर खोद्यां घर उबरे, घर राख्यां घर जाय ।
ऐक अचम्मो है सखी, मड़ो काल ने खाय ॥ ६५ ॥
दधि सुत आली अधर पर, सोभा सो लटकंत ।
शाह सिकंदर पुतली, पंथी मनें करंत ॥ ६६ ॥
टग घुंघट की शोभ है, मत देखो चितलाय ।
औगण की भरी कांमणी, वदन छीपायां जाय ॥ ६७ ॥
सज्जन चित ना ले रहै, दुर्जन चित है वौर ।
वाहीर तो कोमल घणों, पण भितर कठण कठोर ॥ ६८ ॥
सुण हो मोति सींप के, पुर्व तपस्या कीन ।
कंचन के संग वेसने, अदर को रस लीन ॥ ६९ ।
समुद्र तज्यो छै जो सही, अतही भयो अराध ।
लटकत ही भटकत फिरूं, इण अधरन के काज ॥ ७० ॥
होली कल्हरो मुल है, लाज हींण नर थाय ।
वालक तो कटे ही रह्या, अक्ल वुढ़ारी जाय ॥ ७१ ॥
कपटी मित्र न कीजिये, पेट पैस वुद्ध लेत ।
पहेला थाग दिखाय ने, पीछे गोता देत ॥ ७२ ॥
प्रीत जणांसु कीजिये, ज्यांसु मन मिल जाय ।
भूंडा नर नी प्रीतड़ी, माथे कलंक चढाय ॥ ७३ ॥
मुंडे तो मिलती कहे, पिछे चुगली खाय ।
उण सज्जन के कारणे, भूर भूर मरे वलाय ॥ ७४ ॥
चण रूसे तुट्टे क्षणे, क्षण में खेले वात ।
वांसु मीत न कीजिये, करे सभी माण की घात ॥ ७५ ॥

हीये कतरणी जीभरस, मन उपरलो नेह।
तुलसी ऐसे संत जिन, सुपने ही मत देह ॥ ७६ ।
सज्जन ऐसा कीजिये, ज्यां में लच्छण वत्तीस।
कांम पड्यां छोडे नहीं, प्राण करे बच्चीस ॥ ७७ ॥
मित्र ऐसा कीजिये, जैसा रेसम रंग।
शीर सूली धड़ आंगणे, तोही न छोड़े संग ॥ ७८ ॥
बुरी दुर्जन की दोस्ती, भली सज्जन त्रास।
जब सूर्ये गरमी करे, तब बरसण की आस ॥ ७९ ॥
मित्र ऐसा कीजिये, ढाल सरीखा होय।
सुख में तो पिछे रहे, दुःख में आगे होय ॥ ८० ॥
मित्र ऐसा कीजिये, जैसे लोटा डोर।
गलो फसावे आपणों, पावे नीर झकोर ॥ ८१ ॥
मित्र ऐसा न कीजिये, जैसा जारी बोर।
उपर लाली प्रेमकी, भीतर बड़ा कठोर ॥ ८२ ॥
मित्र ऐसा न कीजिये, जैसा आफु फूल।
उपर लाल गुलाल है, भीतर विषका मुल ॥ ८३ ॥
श्वान पूंछ कृपण धन, कोन काज पृथ्वीराज।
तन ढके न मक्खी उड़े, रहे न कुलकी लाज ॥ ८४ ॥
पाग भाग वांणी पृगत, अक्षर बुद्ध विवेक।
ऐता सरीखा ना मिले, जोवो देश अनेक ॥ ८५ ॥
तुल्सी नार गरीब की, अपनी कहे न कोय।
हरहुं की अपनी कहे, तो क्यों न फजिती होय ॥ ८६ ॥

पय पांणी दोनों मिल्या, विच में कपटी लुण ।
तितर बितर करँ दीया, अबे मिलावे कोण ॥८७॥
वैद मरे रोगी मरे, मरे जलावण हार ।
इन्द्र नरेन्द्र सबी मरे, कोई न राखण हार ॥८८॥
राजा राणा छत्रपति, हथियन के असवार ।
मरणा सबको एक दीन, अपनी अपनी वार ॥८९॥
दल बल देखी देवता, मात पिता परिवार ।
मरती वीरीयां जीवने, कोई न राखण हार ॥९०॥
धन बिना निरधन दुखी, तृष्णा वश धनवान् ।
कोही न सुखी संसार में, सब जग देख्यो छाण ॥९१॥
धन वारा के धनगयो, पास रही नही कोडी ।
बात गमाई बावले, आंख मफत मे फोड़ी ॥९२॥
दांन मान सन्मान में, होत सदा अगवान ।
अब पिछे क्यों जात है, तुं देख शत्रू का बांण ॥९३॥
करण राय ने पूछ्या, हुं तियां गयो चलाय ।
कहो तो वैरी मारलुं, कहो तो देउं बचाय ॥९४॥
पाड़ दियो दिपे नही, लग्यो न दिपे बांण ।
में थने पुछ हुं शखी, क्यों कर तज्या प्राण ॥९५॥
जल थोड़ो स्नेह घणों, लग्यो प्रेम को बांण ।
तुंपी तुंपी कर मुवा, यूंकर तज्या प्राण ॥९६॥
पगे पगे निधाना नी, जोजने रस कूंपका ।
भाग हिण न पावंति, धने भरी वशू धरा ॥९७॥

कुछ कर्यो न कर सक्यो, रह्यो न करवा जोग ।
तुलसी इण संसार में, आय हंसाय लोग ॥९८॥
कबीर कमाई आपणी, कदीयन निरफल जाय ।
सो कौपा पिछै धरे, मिलै अगाउं आय ॥९९॥
गंगा किनारे घर किया, पीया निर्मल निर ।
दया बिन मुक्ति नही, कहगया दास कबीर ॥१००॥
एक गंठी १ लकड़ी भली, दुःख दो गंठी २ थाय ।
तिन गंठी ३ सुख उपजे, चौ गंठी ४ मरण थाय ॥१०१॥
पंच गठी ५ पंथ भय हरे, छे ६ गंठी भय होय ।
सत गंठी ७ संपत मिले, अठ गंठी ८ रिद्ध होय ॥१०२॥
नव गंठी ९ सिद्धी हुवे, दश गंठी १० नृप होय ।
च्यार उंगल बदती ग्रहे, तो पृथ्वीपति जोय ॥१०३॥
सांच बात तो रही नहीं, झूठ दी दरसाय ।
पांच टका की पागड़ी, सात टका में जाय ॥१०४॥
साधु आया देखने, आदर दीयो न कोय ।
कछु न बिगड़े साध को, हांण उसी के होय ॥१०५॥
इतना क्यों घुरांता बाबा, मैं तेरे से नहीं डरता ।
वो दीन तो भुल गया, यूं कर २ यूं करता ॥१०६॥
हाथी तो हलकन्ता छोड्या, छोड्या नलपत राय ।
ताणां गढ़ का रावजी, कहा बिराजे आय ॥१०६॥
यश प्रताव प्रभु प्रबल, रहता सदा जग मांही ।
ऐसो कार्य कीजिये, अप यश फैले नाहीं ॥१०७॥

बहुत भरयों कीण कांम को, बोले नहीं विचार ।
हणे पराइ आत्मा, जीब वहै तलवार ॥१०८॥
गहणां गांठा नित नवा, नित २ नवला वेस ।
चंद सूर्थ लेखे कीसे, ज्यांने रत्ना कीया प्रवेश ॥१०९॥
हाव भाव करती थकी, देव्यां आवे हजूर ।
ईण ठामें आई उपना, थें सुं पुण्य कीदा पुर ॥११०॥
तरूण पणे तीरीया तजी,सेव्या नही विशन सात ।
इण ठामें आइ उपना, में हुआ तुम्हारा नाथ ॥१११॥
दांन शील तप भावनां, आदरीया तंत सार ।
इण कारण इहां उपना, जद वृत्या जय जय कार ॥११२॥
च्यार हुं तो भव पाछलो, एक विमाणे वास ।
हिल मिल ने वातां करे, माई सद गुरु ने सावाश ॥११३॥
दीपक झोलो पवन को, नर ने झोलो नार ।
साधु झोलो जीवान को, तीनों डूवा काली धार ॥११४॥
विद्या धन वांट्यां वधे, छांट्यां वधे निवाण ।
सुख तो अण छेड्यां भला, छेड्या भला सुजान ॥११५॥
संपत थोड़ि रण घणों, मोटो पीयुको नाम ।
ईण कारण हुं दुखी, मार्ग माथे गांम ॥११६॥
खूबचंद सांची कहे, यो संसार असार ।
ज्यों सुख चावे जीवने, तो कीजे पर उपकार ॥११७॥
संगत शोभा पाईये, सुणों अक्वर बैन ।
वोही काजल टीकरी, वोही काजल नैन ॥११८॥

संगत शोभा पाइये, सुनो हो चतुर सुजान ।
गंधी और लुहार की, बैठो देख दूकान ॥११९॥
वहती २ आइ खोती, पाहड़ पर्वत से न्हाती धोती।
छै खतरी ने ऐक संतोश, खोती खांयां को नही है दोष॥१२०॥
सोनों कहै सुनार ने, मारी उत्तम जात ।
काला मुख की चीरमली, तुले हमारी साथ ॥१२१॥
नाम हमारा लाडली, लाल हमारा रंग ।
काला मुख जद से हुआ, मैं तुली नीच के संग ॥१२२॥
गेली चरमी बावली, गेली थारी वात ।
जो थारा में गुण होवे तो, जलो हमारे साथ ॥१२३॥
वन जाई वन उपनी, वनमें कीयो शृंगार ।
तुंतो जले खारको मारयो, मारी जले बलाय ॥१२४॥
गुरु कारीगर सारीखा, घड़ २ काड़े खोट ।
भीतर से रक्षा करे, उपर मारे चोट ॥१२५॥
साध सतायां होत है, तनधन कुटम्ब विनाश ।
तुलसी पर भव जावता, नरकां होय निवाश ॥१२६॥
मीठा वोले नम चले, पर ओगुण ढक लीन ।
पांचो चंगे नानका, हरी भज हाथा दीन ॥१२७॥
रेमन भली न होसके, तो बुरी करन मत जाय ।
अमृत फल चाखे नहीं, तो विष काहे कूं खाय ॥१२८॥
पर कारज कर दुःख सहै, लेत न हरि रस घूंट ।
भार घसीटत औरको, आप उंट के उंट ॥१२९॥

तुलसी वो नर धन्य है, पर उपगारी अंग ।
वांटन वारे को लगे, ज्यों मेंदी को रंग ॥१३०॥
तुलसी कहत पुकार के, सुनों सकल दे कांन ।
हेम दान गज दान तें, वड़ों दान अभ्ये दान ॥१३१॥
चतुराई चूले पड़ी, दानी यम के द्वार ।
तुल्सी प्रभु भजन विन, चारुं वर्ण चमार ॥१३२॥
तन सुखाय पींजर करे, धरै रैन जिन ध्यान ।
तुलसी मिटै न वासना, विना विचारे ज्ञान ॥१३३॥
ज्ञान गरीवी प्रभु भजन, नरमांई निंदोष ।
तुलसी कवहुं न छांडिये, क्षमा शील संतोष ॥१३४॥
तुलसी या संसार में, पंच रतन है सार ।
साधु मिलन प्रभु भजन, दया दीन उपकार ॥१३५॥
गुण स्वरुप वल द्रव्य को, प्रीति करे सव कोय ।
तुल्सी प्रीति सराहिये, जो इतने वाहर होय ॥१३६॥
माया मे माया मिले, कर २ लम्वा हाथ ।
तुल्सी हाय गरीव की, कोई न पुछे वात ॥१३७॥
तुल्सी हाय गरीव की, कवहु न निष्फल जाय ।
मुए भेड़ की खाल में, लोहा भसम हो जाय ॥१३८॥
कांम क्रोध मद लोभ की, जव लग घट में खांन ।
तव लग पंडित मूरखों, तुल्सी एक समान ॥१३९॥
दाता तुमको विनता, दोनों मेला राख ।
लाज रखे तो जीव रख, लाज विन जीवन राख ॥१४०॥

मरेजो मांगण हार, मुख देख्यां मांगे वही ।
मरजो वे दातार, जो मांगेही देवे नही ॥१४१॥
मांगन मरण समान है, मत कोई मांगो भीख ।
मांगन ते मरना भला, यह वुध जन की सीख ॥१४२॥
मरजाउं मांगु नहीं, निज स्वारथ के काज ।
परमारथ के कारणे, मोय न आवत लाज ॥१४३॥
वडे वडे ऋषि देवता, नारी के वश होय ।
वन वन में भटकत फिरे, अन्त प्राण दे खोय ॥१४४॥
खैन खून खांसी खुशी, वैर प्रीति मद पान ।
रे मन दावे ना दवे, सो जानत सकल जहान ॥१४५॥
ऐसी बानी वोलीये, मन का आपा खोय ।
अपना तन शीतल करे, औरन को सुख होय ॥१४६॥
मुरख का मुख विम्ब है, निकसत वचन भुभंग ।
तांको औषधि मौन है, विष नहीं व्यापत अंग ॥१४७॥
कीजे सत उपकार को, खल मानै नहीं कोय ।
कंचन घट पय सींचिये, नीम न मीठो होय ॥१४८॥
मन मतंग मानै नहीं, जब लग खता न खाय ।
जैसे विधवा स्त्री, गर्भ रहे पछिताय ॥१४९॥
झूंठे सुख को सुख कहै, मानत है मन मोद ।
खलक चवैना कालका, कछु मुख में कछु गोद ॥१५०॥
जगमें वैरी कोई नहीं, जो मन सीतल होय ।
ये आपा तुं डाल दे, दया करे सब कोय ॥१५१॥

कांम धेनु करनी करे, गुरू से रक्खे धेक।
फलै न फुलै माधवा, करनी करो अनेक ॥१५२॥
क्रोड़ पुरब कोई तप तपै, ऐक सहे कोइ गार।
इनमें नफो है घणो, मेटो मन की झार ॥१५३॥
चाकर चकवो चतुर नर, नित प्रति रहत उदास।
खर घुघु मूरख नर, सदा खुसी पृथ्वीदास ॥१५४॥
तन रोगो की खांन है, धन भोगों की खान।
ज्ञान सुखों की खांन है, दुःख खान अज्ञान ॥१५५॥
कागा कोयल ऐक रंग, बैठे दोऊं ऐक डार।
बोल्ली से पहचानिये, ये कोयल ये काग ॥१५६॥
काच कटोरो नैन जल, मोती ने एक मन्न।
इतने टूटे ना संदे, लाखो करो जतन ॥१५७॥
प्रीति ना टूटे अन्न मिल्लै, उत्तम कुल की लाग।
सो जुग पानी मे रहै, चकमक तजे न आग ॥१५८॥
सो सज्जन लाख मित्र, मजलिस मित्र अनेक।
नेह निबाहन सिर दिवावन, सो लाखन में एक ॥१५९॥
मर्यादा सागर तजे, परल्य होय काल।
तो साधु छोड़े नहीं, सदा जो अपनी चाल ॥१६०॥
सार अगनि गज केसरि, पांव पदम सिर मोर।
कहो सज्जन कैसे निभे, प्रीति कपट एक ठोर ॥१६१॥
मिल्त नेह दुणों बढ़े, बिछुड़न दुःख अपार।
मिलन छूटन या जगत में, अटल नियम करतार ॥१६२॥

अरि छुटो गिनिये नहीं, ज्यातें होत बिगार।
तृण समूह कों छिनक में, जारत देत अंगार ॥१६३॥
भलो आदमी भली विचारे, बुरी विचारे बांदो।
ऐक खेत में दोय निपजे, खरबूजो ने कांदो ॥१६४॥
खेती पांती वीनती, और परमेश्वर का जाप।
पर हांथा नहीं कीजिये, निडर कीजिये आप ॥१६५॥
नीच बड़ेन के संग ते, पदवी लहत्त अतोल।
पड़े सींप में जलद जल, मुक्ता होत अमोल ॥१६६॥
जो तोकूं काँटो बुवै, तांहि वोय तूं फूल।
तोंको फूल के फूल है, वांको है तिरसूल ॥१६७॥
मन सें चिंते काम को, कबहु न करो प्रकाश।
भेद खुले से जानिये, होय काज को नास ॥१६८॥
धन की तो गति तीन है, दान भोग अरू नास।
दान भोग जो नहीं करे, तो निश्चय होय विनास ॥१६९॥
पानी धोये बावरे, मन का मैल न जाय।
मन निरमल तब होयगा, जब हरि के गुण गाय ॥१७०॥
तन के धोये मैल टरे, मन धोये अघ नास।
तन मन के मल जब टरै, तब सुख होत प्रकाश ॥१७१॥
भिति ऐसी कीजिये, जामे लक्षण बत्तीस।
भीड़ पड़े भागे नहीं, सीश करै बकसीस ॥१७२॥
नयन श्रवण मुख नासिका, सबहु के एक ठौर।
कहवो सुनवो समझवो, चतुरन को कछु और ॥१७३॥

दान्त जिव के झगडो हुवो, दोनों होट गवाय ।
हस्म वेपारि परदेश के, शुं सुखे बेठी खाय ॥१७४॥
हूंतो बीरा एकली, नारि लाख धराय ।
जरासी बोलुं आकरी, थांकि वरीसी झड़ जाय ॥१७५॥
जलकि सोभा कमल है, दलकि सोभा फील ।
धनकि सोभा धर्म है, कुलकी सोभा शील ॥१७६॥
मुक्ति मारग चार है, दान शील तप भाव ।
हृदय सें दिल में रटे. तो लगे किनारे नाव ॥१७७॥
मै जाएयां अड्सेर हे, निकल्यों पुरो सेर ।
हम नुत्ता परि वायणां, इनमें हेर न फेर ॥ १७८ ॥
(मगबोला) और विनोला बापडा, मनके बेडज धीर ।
आप उघाडा होरया, परका ढांकत शरिर ॥ १७९ ॥
(जवाव) देखो मख की कुष्टता,तोयन आवत लाज ।
चांम उतारे आपणी, पर वन्दगी के काज ॥ १८० ॥
भव सागर संसार में, दीपा श्री जिनराज ।
उद्यम करि पहुंचे तीरे, बैठी धर्म जहाज ॥ १८१ ॥
निज आतम कु दमन कर, पर आतमकं चीन ।
परमातम को भजन कर, सोई मत परवीन ॥ १८२ ॥
नमस्कू करे प्यार से, अनागमन्कू हरषंत ।
वे लूखा वे चीकणा इण विध कर्म बंधन ॥ १८३ ॥
जनगम विरय न्यायनो, संदर तोकु योग ।
छ्रिया नवर विनके, निटु करी इस न मेग ॥ १८४ ॥

गुरु कारिगर सारीखा, टांची वचन विचार।
पत्थर की प्रतिमा करे, पूजा लेत अपार ॥ १८५ ॥
डाभ अणी जलबिंदुवो, सुख विषय न को चाव।
भव सागर दुःख जल भर्यो, ये संसार स्वभाव ॥ १८६ ॥
काम भोग प्यारा लगे, फल किम्पाक समान।
मिठी खाज खूजारतां, पिछे दुःख की खान ॥ १८७ ॥
अंगुष्टे अंमृत वसे, लब्धि तणां भंडार।
ते गुरु गौतम शिमरिये, वंछित फल दातार ॥ १८८ ॥
फेर नमु गुरु देवने, ज्ञान तणां दातार।
भव सागर सें तारने, मेले मोक्ष मुजार ॥ १८९ ॥

॥ दोहरा संग्रह समाप्त ॥



॥ तीर्थंकरों के जन्मोत्सव ॥

जिन जनम की महिमा, करवाने आया देवी देवता, ॥ जिन २ ॥टेर ॥ सक्र इन्दर ईसाण इन्द्रजी, तिजा सनत कुमार, महींद्र ब्रह्म लन्तक महा शूकर, वली इन्द्र संसार, पाण ईन्द्र और अचु ईन्द्र, आए लेकर सब परवारजी ॥ जिन ॥१॥ सहंस चोरासी अस्सी व्होतर, सीतर साठ वखांण, पचास चालीस तीस वीस दस, सामानिक शूर जाण, चार गुणां सामानिक शूर सें, आतम रक्ष परमाण जी, ॥ जिन ॥२॥ बारा सहंस चवदा वली सोला, तीन

परखदा मांय, दो दो सहंस कम करके, ऊपर दो दो सहंस वड़ाय, छ ईन्द्र तक इण बिद, लिज्यो चतुर हीमाग लगाए जी, ॥ जिन ॥३॥ सहंस पानसे ढाईमे अजि फ सवासो थाय, दुगणा २ तीन दफे तुम, लिज्यो जोड़ लगाय, ईतने शूर ऐक २ ईन्द्र के, कह्यो श्री जिनराज जी ॥ जिन ॥४॥ लाख जोजन का लम्बा चोड़ा आयाने वेमाण, ऐक सहंस जोजन की सब के, महिंद्र धजा परमाण, सु घोषा महा घोषा घंटा, पांच २ के जाण जी, ॥ जिन ॥५॥ चंमर ईन्द्र बल ईन्द्र परमुख भवन पती के बीस सनीवेद सामाण आद दे बिन्तर के बत्तीस, चन्द्र सूरज ईन्द्र मिल होगए, च्यार बीस चालीस जी, ॥ जिन ॥६॥ अध लख जोजन लम्बा चोड़ा, अशूरा का वेमाण, धूरु ईन्द्रादिक अष्टा दस के सहंस पचीस प्रमाण, बिन्त ईन्द्र और रवि शशि के, स्हंस जोजन का जाण जि, ॥ जीन ॥७॥ विमाणीक से आधी ऊंची जाणों असुर कुमार, नवनी काय के ढाईसे की महिंद्र धजा विस्तार, सो ऊपर पचीस जोजन की विंत्र जोतषी धार जि, ॥ जीन ॥८॥ ईण विद हुवो समागम शूरको जिन महीमा के काज, मेरे गुरु गुण आगर मानू नन्दलाल महाराज, रावल पिंडि जोड़ बनाई सरीया वंछित काज जी, ॥ जिन ॥९॥



परखदा मांय, दो दो सहंस कम करके, ऊपर दो दो
सहंस बड़ाय, छे ईन्द्र तक इण बिद, लिज्यो चतुर हीसाब
लगाए जी, ।। जिन ।।३।। सहंस पानसे ढाईसे आजि फ
सवासो थाय, दुगणा २ तीन दफे तुम, लिज्यो जो
लगाय, ईतने शूर ऐक २ ईन्द्र के, कह्यो श्री जिनरा
जी ।। जिन ।।४।। लाख जोजन का लम्बा चोड़ा आया
वेमाण, ऐक सहंस जोजन की सब के, महिंद्र धजा परमाण,
सू घोषा महा घोषा घंटा, पांच २ के जाण जी, ।। जिन
।।५।। चंमर ईन्द्र बल ईन्द्र परमुख भवन पती के बीस,
सनींवद सामाण आद दे ब्रिन्तर के बत्तीस, चन्द्र सूरज
ईन्द्र मिल होगए, च्यार बीस चालीस जी, ।। जिन ।।६।।
अध लख जोजन लम्बा चोड़ा, अशूरा का वेमाण, धृख
ईन्द्रादिक अष्टा दस के सहंस पचीस प्रमाण, बिन्त्त ईन्द्र
और रवि शशि के, स्हंस जोजन का जाण जि, ।। जीन ।।७।।
विमाणीक से आधी ऊंची जाणों असुर कुमार, नवनी
काय के ढाईसे की महिंद्र धजा विस्तार, सो ऊपर पचीस
जोजन की बिंत्र जोतषी धार जि, ।। जीन ।।८।। ईण विद
हुवो समागम शूरको जिन महीमा के काज, मेरे गुरु
गुण आगर मानू नन्दलाल महाराज, रावल पिंडि जोड़
वनाई सरीया वांछित काज जी, ।। जिन ।।९।।



गी

त

गु

जा

र

